AGRAWAL EXAMCART

Paper Pakka Fasega!

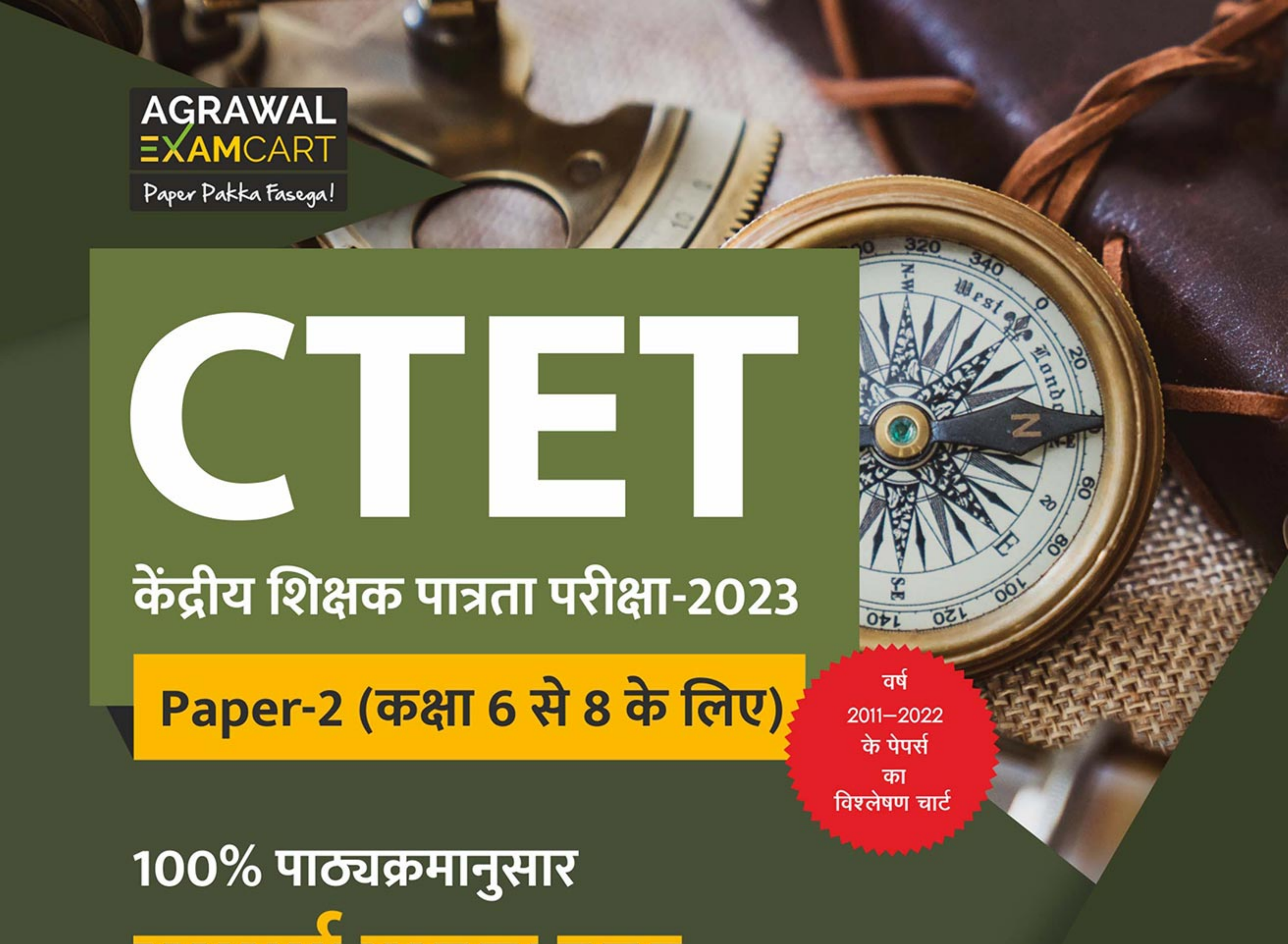

CTET

केंद्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा-2023

Paper-2 (कक्षा 6 से 8 के लिए)

वर्ष 2011–2022 के पेपर्स का विश्लेषण चार्ट

100% पाठ्यक्रमानुसार

सम्पूर्ण गाइड बुक

बाल विकास एवं शिक्षाशास्त्र |
हिन्दी भाषा | English Language|
सामाजिक विज्ञान

परीक्षा की अच्छी तैयारी वो भी कम समय में !

इस गाइड बुक की थ्योरी को काफी गहन अध्ययन के बाद तैयार किया गया है और हमारी आशा है कि यह पुस्तक आपकी परीक्षा की तैयारी और उसमें अच्छे अंक लाने के लिए पर्याप्त होगी।

मुख्य विशेषताएँ

- NCERT पैटर्न, CTET पाठ्यक्रम एवं विगत वर्षों के प्रश्नों पर आधारित थ्योरी
- 1700+ महत्वपूर्ण अध्यायवार प्रश्न
- 01 सॉल्व्ड पेपर (7 जनवरी 2022)

Code	Price	Pages	ISBN
CB1179	₹ 549	560	978-93-5561-226-7

विषय सूची

पृष्ठ संख्या

Exam Information, Preparation Strategy and Current Affairs

⊙ **Agrawal Examcart Help Centre** x

⊙ **Student's Corner** xi

⊙ **केन्द्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा पाठ्यक्रम एवं एग्जाम पैटर्न** xii

⊙ **C-TET (6-8) के पिछले वर्षों के हल प्रश्न–पत्रों का विश्लेषण चार्ट** xv

बाल विकास एवं शिक्षाशास्त्र 1-165

1. विकास की अवधारणा एवं उसका अधिगम से सम्बन्ध एवं सिद्धान्त (Concept of Development and its Relationship with Learning and Principles) 1-31
2. वंशानुक्रम (आनुवंशिकता) एवं वातावरण का प्रभाव (Effect of Heredity and Environment) 32-39
3. समाजीकरण प्रक्रियाएँ (Socialization Processes) 40-42
4. पियाजे, कोहलबर्ग एवं वाइगोत्स्की : निर्माण एवं आलोचनात्मक दृष्टिकोण (Piaget, Kohlberg and Vygotsky : Constructs and Critical Perspectives) 43-51
5. बाल केन्द्रित एवं प्रगतिशील शिक्षा की अवधारणा (Concept of Child Centred and Progressive Education) 52-55
6. बुद्धि के निर्माण का आलोचनात्मक दृष्टिकोण एवं बहुआयामी बुद्धि (Critical Perspective of the Construct of Intelligence and Multi-Dimensional Intelligence) 56-69
7. भाषा और विचार (Language and Thought) 70-74
8. सामाजिक निर्माण के रूप में जेंडर : जेंडर की भूमिका, लिंग भेद और शैक्षिक अभ्यास (Gender as a Social Construct : Gender Roles, Gender Bias and Educational Practice) 75-79
9. व्यक्तिगत विभिन्नता (Individual Difference) 80-83
10. आकलन, मूल्यांकन तथा सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (Assessment, Evaluation and Continuous and Comprehensive Evaluation) 84-97
11. उपलब्धि परीक्षण का निर्माण (Constructs of Achievement Test) 98-103
12. अलाभान्वित एवं वंचित वर्गों सहित विविध पृष्ठभूमियों के अधिगमकर्ता की पहचान (Addressing Learner from Diverse Background including Disadvantaged and Deprived) 104-121

13. अधिगम कठिनाइयाँ एवं अक्षमता वाले बालकों की आवश्यकताओं की पहचान
(Addressing the Needs of Children with Learning Difficulties and Impairment) 122-131

14. प्रतिभाशाली, सृजनात्मक, विशेष योग्यता वाले बालकों की पहचान
(Addressing the Talented, Creative, Specially-abled Learner) 132-139

15. बालकों का सोचना और सीखना (Learning and Thinking of Children) 140-149

16. समस्या–समाधानकर्ता और वैज्ञानिक अन्वेषक के रूप में बालक
(Child as a Problem Solver and a Scientific Investigator) 150-154

17. संज्ञान और संवेग (Cognition and Emotion) 155-158

18. अभिप्रेरणा और अधिगम : अधिगम में योगदान देने वाले कारक
(Motivation and Learning : Factors Contributing to Learning) 159-165

हिन्दी 166-264

1. अपठित गद्यांश एवं पद्यांश 166-173
2. हिन्दी व्याकरण 174-178
3. शब्द विचार 179-182
4. पर्यायवाची शब्द 183-185
5. विलोम शब्द 186-188
6. उपसर्ग एवं प्रत्यय 189-193
7. सन्धि 194-197
8. समास 198-201
9. अलंकार 202-204
10. वाक्य के भेद 205-208
11. वाक्यगत अशुद्धियाँ 209-210
12. वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियाँ 211-213
13. वाक्यांश के लिए एक शब्द 214-216
14. मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ 217-219
15. छन्द 220-222
16. रस 223-226
17. भाषा विकास का शिक्षाशास्त्र 227-264

अंग्रेजी 265-362

1. Comprehension [Questions based on Inference, Grammar and Verbal Ability] 265-274
2. Pedagogy of Language Development 275-301
3. Vocabulary 302-308
4. Parts of Speech Noun 309-314

4.1. Pronoun 315-317
4.2. Verb 318-320
4.3. Adjective 321-325
4.4. Adverb 326-327
4.5. Preposition 328-331
4.6. Conjunction 332-334
4.7. The Interjection 335-335

5. Tenses 336-340
6. Articles 341-344
7. Fill in the Blanks 345-346
8. Clauses 347-348
9. Voice 349-354
10. Narration 355-359
11. Figures of Speech 360-362

सामाजिक अध्ययन 363-533

1. प्राचीन भारत का इतिहास 363-385
   - पाषाण काल या प्रागैतिहासिक काल (Stone Age or Prehistoric Time)
   - सिन्धु घाटी सभ्यता (2350 ई. पू.–1750 ई. पू.) (Indus Valley Civilization)
   - वैदिक सभ्यता एवं संस्कृति (Vedic Civilization & Culture)
   - वैदिक साहित्य (Vedic Literature)
   - धार्मिक आन्दोलन (Religious Movements)
   - संगम युग (Sangam Age)
   - छठी शताब्दी ई. पू. का भारत तथा महाजनपद काल (6th Century BC India & Mahajanpada Age)
   - मगध का उत्थान (Rise of Magadh)
   - सिकन्दर का आक्रमण (Alexander's Invasion)

अध्याय 2 वंशानुक्रम (आनुवंशिकता) एवं वातावरण का प्रभाव (Effect of Heredity and Environment)

आनुवंशिकता तथा वातावरण का अर्थ (Meaning of Heredity and Environment)

माता-पिता से उनके बच्चों में शारीरिक गुणों तथा संगठनों के जीन्स द्वारा होने वाले संचरण (transmission) का अध्ययन करने वाले विज्ञान को आनुवंशिकी की संज्ञा दी जाती है। इन्हीं जीन्स के द्वारा व्यक्ति अपने माता-पिता से उनके गुणों एवं शारीरिक संगठनों को प्राप्त करता है। इसे ही हम आनुवंशिकता कहते हैं।

जब पिता का शुक्राणु (sperm) माँ के अण्डाणु (ovum) से मिलता है, तो इससे गर्भधारण होता है। गर्भधारण के समय शुक्राणु के 23 क्रोमोसोम्स अण्डाणु के 23 क्रोमोसोम्स से मिलते हैं और इस तरह से क्रोमोसोम्स की कुल संख्या 46 अर्थात् 23 जोड़े हो जाते हैं। क्रोमोसोम्स का आकार धागे के समान लम्बा होता है और प्रत्येक क्रोमोसोम में जीन्स पाये जाते हैं जिनमें आनुवंशिक गुण संचित होते हैं। माता-पिता जो अपने माता-पिता से आनुवंशिक गुण प्राप्त करते हैं, अपने बच्चों को इन्हीं जीन्स के माध्यम से उन गुणों को तथा कुछ अपने व्यक्तित्व के गुणों को देते हैं। इस तरह स्पष्ट है आनुवंशिकता से तात्पर्य शारीरिक एवं मानसिक गुणों के संचरण से होता है जो माता-पिता से बच्चों में जीन्स के माध्यम से प्रवेश करते हैं।

वातावरण (Environment) से तात्पर्य उन सभी चीजों से (जीन्स को छोड़कर) होता है जो व्यक्ति को उत्तेजित और प्रभावित करते हैं। दूसरे शब्दों में, यह कहा जा सकता है कि व्यक्ति का वातावरण से तात्पर्य उन सभी तरह की उत्तेजनाओं से होता है जो गर्भधारण से मृत्यु तक उसे प्रभावित करते हैं। भौगोलिक वातावरण में अनेक चीजें या उद्दीपन हो सकते हैं, परन्तु व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक वातावरण में वे सभी सम्मिलित हों, यह आवश्यक नहीं। कोई भी उद्दीपन या घटना व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक वातावरण में तभी सम्मिलित मानी जाती है जब वह व्यक्ति को प्रभावित करती है। मनोविज्ञान में वातावरण से मतलब मनोवैज्ञानिक वातावरण से होता है।

व्यक्ति का व्यवहार आनुवंशिकता तथा वातावरण दोनों द्वारा ही निर्धारित होता है। आनुवंशिकता द्वारा व्यवहार के रचनातंत्र का निर्धारण होता है तथा वातावरण उस रचनातंत्र की चहारदीवारी के अन्तर्गत व्यवहार को एक निश्चित दिशा में विकसित करता है। अतः, व्यक्ति का प्रत्येक व्यवहार आनुवंशिकता तथा वातावरण दोनों की अंतःक्रिया का परिणाम होता है।

वुडवर्थ के अनुसार—"वंशानुक्रम उन सभी कारकों को सम्मिलित करता है जो व्यक्ति के जीवन प्रारम्भ करने के समय से ही उपस्थित होते हैं। जन्म के समय नहीं अपितु गर्भाधान के समय अर्थात् जन्म से नौ माह पूर्व ही उपस्थित होते हैं।"

"Heredity covers all the factors that were present in the individual when he began life, not at birth but at the time of conception about nine months before birth" —**Woodworth**

जेम्स ड्रेवर के अनुसार—"वंशानुक्रम से अभिप्राय माता और पिता के शारीरिक और मानसिक गुणों का संतानों में हस्तान्तरण है।"

"Heredity is the transmission of physical and mental characteristics from parents to offsprings." —**James Draver**

बोरिंग, लैंगफील्ड एवं वील्ड के अनुसार—"व्यक्ति के वातावरण के अन्तर्गत उन सभी उत्तेजनाओं का योग आता है जिन्हें वह जन्म से मृत्यु तक ग्रहण करता है।"

"A person's environment consists of the sum total of the stimulation which he receives from his conception until his death."

— **Boring, Langfield and Wield**

पी. जिसबर्ट के अनुसार—"पर्यावरण वे सभी वस्तुएँ हैं जो किसी एक वस्तु को चारों ओर से घेरे हुये हैं तथा उसे प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है।"

"Environment is anything immediately surrounding an object and exerting a direct influence on it." —**P. Gisburt**

वंशानुक्रम का नियम (Laws of Heredity)

वंशक्रम (Heredity) मनोवैज्ञानिकों तथा जीववैज्ञानिकों (Biologists) के लिए अत्यन्त रोचक तथा रहस्यमय विषय है। वंशक्रम जिन नियमों तथा सिद्धान्तों पर आधारित है, यह विषय भी अध्ययन के नये आयाम प्रस्तुत करता है। वंशानुक्रम के ये नियम सर्वाधिक प्रचलित हैं—

1. **बीजकोष की निरन्तरता का नियम** (Law of Continuity of Germ Plasm)—इस नियम के अनुसार, बालक को जन्म देने वाला बीजकोष कभी नष्ट नहीं होता। इस नियम के प्रतिपादक **वीजमैन** (Weismann) का कथन है—"बीजकोष का कार्य केवल उत्पादक कोषों (Germ Cells) का निर्माण करना है, जो बीजकोष बालक को अपने माता-पिता से मिलता है, उसे वह अगली पीढ़ी को हस्तान्तरित कर देता है। इस प्रकार, बीजकोष पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलता रहता है।"

   वीजमैन के 'बीजकोष की निरन्तरता' के नियम को स्वीकार नहीं किया जाता है। इसकी आलोचना करते हुए **बी. एन. झा** (B. N. Jha) ने लिखा है—"इस सिद्धान्त के अनुसार माता-पिता, बालक के जन्मदाता न होकर केवल बीजकोष के संरक्षक हैं, जिसे वे अपनी सन्तान को देते हैं। बीजकोष एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को इस प्रकार हस्तान्तरित किया जाता है, मानो एक बैंक से निकलकर दूसरे में रख दिया जाता हो। बीजमैन का सिद्धान्त न तो वंशानुक्रम की सम्पूर्ण प्रक्रिया की व्याख्या करता है और न सन्तोषजनक ही है।"

   यह मत वंशक्रम की सम्पूर्ण प्रक्रिया की व्याख्या न कर पाने के कारण अमान्य है।

2. **समानता का नियम** (Law of Resemblance)—इस नियम के अनुसार, जैसे माता-पिता होते हैं, वैसी ही उनकी सन्तान होती है (Like tends of beget like)। इस नियम के अर्थ का स्पष्टीकरण करते हुए **सोरेनसन** (Sorenson) ने लिखा है—"बुद्धिमान माता-पिता के बच्चे बुद्धिमान, साधारण माता-पिता के बच्चे साधारण और मन्द-बुद्धि माता-पिता के बच्चे मन्द-बुद्धि होते हैं। इसी प्रकार, शारीरिक रचना की दृष्टि से भी बच्चे माता-पिता के समान होते हैं।

   यह नियम भी अपूर्ण है क्योंकि प्रायः देखा जाता है कि काले

माता-पिता की संतान गोरी, मंद बुद्धि माता-पिता की संतान बुद्धिमान होती है। इस नियम के अनुसार माता-पिता की विशेषतायें बालक के मूल रूप में आनी चाहिए।

3. **विभिन्नता का नियम** (Law of Variation)—इस नियम के अनुसार, बालक अपने माता-पिता के बिल्कुल समान न होकर उनसे कुछ भिन्न होते हैं। इसी प्रकार, एक ही माता-पिता के बालक एक-दूसरे के समान होते हुए भी बुद्धि, रंग और स्वभाव में एक-दूसरे से भिन्न होते हैं। कभी-कभी उनमें पर्याप्त शारीरिक और मानसिक विभिन्नता पाई जाती है। इसका कारण बताते हुए **सोरेनसन** (Sorenson) ने लिखा है—"इस विभिन्नता का कारण माता-पिता के उत्पादक-कोषों की विशेषतायें हैं। उत्पादक कोषों में अनेक पित्रयैक होते हैं, जो विभिन्न प्रकार से संयुक्त होकर एक-दूसरे से भिन्न बच्चों का निर्माण करते हैं।"

   भिन्नता का नियम प्रतिपादित करने वालों में डार्विन (Darwin) तथा लेमार्क (Lemark) ने अनेक प्रयोगों तथा विचारों द्वारा यह मत प्रकट किया है कि उपयोग न करने वाले अवयव तथा विशेषताओं का लोप आगामी पीढ़ियों में हो जाता है। नवोत्पत्ति (Mutation) तथा प्राकृतिक चयन (Natural Selection) द्वारा वंशक्रमीय विशेषताओं का उन्नयन होता है।

4. **प्रत्यागमन का नियम** (Law of Regression)—इस नियम के अनुसार, बालक में अपने माता-पिता के विपरीत गुण पाये जाते हैं। इस नियम का अर्थ स्पष्ट करते हुए **सोरेनसन** (Sorenson) ने लिखा है—"बहुत प्रतिभाशाली माता-पिता के बच्चों में कम प्रतिभा होने की प्रवृत्ति और बहुत निम्नकोटि के माता-पिता के बच्चों में कम निम्नकोटि होने की प्रवृत्ति ही प्रत्यागमन है।"

   प्रकृति का नियम यह है कि वह विशिष्ट गुणों के बजाय सामान्य गुणों का अधिक वितरण करके एक जाति के प्राणियों को एक ही स्तर पर रखने का प्रयास करती है। इस नियम के अनुसार, बालक अपने माता-पिता के विशिष्ट गुणों का त्याग करके सामान्य गुणों को ग्रहण करते हैं। यही कारण है कि महान् व्यक्तियों के पुत्र साधारणतः उनके समान महान् नहीं होते हैं, उदाहरणार्थ—बाबर, अकबर और महात्मा गाँधी के पुत्र उनसे बहुत निम्न कोटि के थे। इसके दो मुख्य कारण हैं—(1) माता-पिता के पित्रयैकों में से एक कम और एक अधिक शक्तिशाली होता है। (2) माता-पिता में उनके पूर्वजों में से किसी का पित्रयैक अधिक शक्तिशाली होता है।

5. **अर्जित गुणों के संक्रमण का नियम** (Inheritance of Acquired Traits)—इस नियम के अनुसार, माता-पिता द्वारा अपने जीवन-काल में अर्जित किये जाने वाले गुण उनकी सन्तान को प्राप्त नहीं होते हैं। इस नियम को अस्वीकार करते हुए विकासवादी **लेमार्क** (Lemarck) ने लिखा है—"व्यक्तियों द्वारा अपने जीवन में जो कुछ भी अर्जित किया जाता है, वह उनके द्वारा उत्पन्न किये जाने वाले व्यक्तियों को संक्रमित किया जाता है।" इसका उदाहरण देते हुए लेमार्क ने कहा है कि जिराफ पशु की गर्दन पहले बहुत-कुछ घोड़े के समान थी, पर कुछ विशेष परिस्थितियों के कारण वह लम्बी हो गई और कालान्तर में उसकी लम्बी गर्दन का गुण अगली पीढ़ी में संक्रमित होने लगा। **लेमार्क** के इस कथन की पुष्टि मैक्डूगल (McDougall) और पावलव (Pavlov) ने चूहों पर एवं हैरीसन (Harrison) ने पतंगों पर परीक्षण करके की है।

   आज के युग में विकासवाद या अर्जित गुणों के संक्रमण का सिद्धान्त स्वीकार नहीं किया जाता है। इस सम्बन्ध में **वुडवर्थ** (Woodworth) ने लिखा है—"वंशानुक्रम की प्रक्रिया के अपने आधुनिक ज्ञान से संपन्न होने पर यह बात प्रायः असंभव जान पड़ती है कि अर्जित गुणों को संक्रमित किया जा सके। यदि आप कोई भाषा बोलना सीख लें, तो क्या आप पित्रयैकों द्वारा इस ज्ञान को अपने बच्चे को संक्रमित कर सकते हैं ? इस प्रकार के किसी प्रमाण की पुष्टि नहीं हुई है। क्षय या सूजाक जैसा रोग, जो बहुधा परिवारों में पाया जाता है, संक्रमित नहीं होता है। बालक को यह रोग परिवार के पर्यावरण में छूत से होता है।"

6. **मैंडल का नियम** (Law of Mendel)—आनुवंशिकता की क्रियाविधि का वर्णन करने के लिए जोहान ग्रिगोर मैंडल (Johann Gregor Mendel) ने महत्वपूर्ण कार्य किया। अपनी छोटी-सी वाटिका में उन्होंने विभिन्न तरह के मटरों का संकरित कर आनुवंशिकता के आधारभूत नियमों का प्रतिपादन किया। उन्होंने अपने विस्तृत प्रयोगों के परिणाम को 1866 में प्रकाशित किया, लेकिन कई कारणों से उनके प्रयोगों की ओर 1900 तक लोगों का ध्यान बहुत नहीं गया। उसी साल तीन शोधकर्ता नेदरलैण्ड, आस्ट्रिया तथा जर्मनी में स्वतंत्र रूप से प्रयोग कर उसी परिणाम पर पहुँचे जिस पर मैंडल करीब 34 साल पहले ही पहुँचे थे। इन तीन शोधकर्ताओं ने मैंडल के नियमों को वैध ठहराया और उन्हें 'आनुवंशिकता का आधारभूत नियम' (Cardinal Principle or Law of Heredity) की संज्ञा दी।

   मैंडल ने अपने प्रयोग में मटर के पौधों के गुणों, जैसे बैंगनी और उजले फूल वाले पौधों, लम्बा तथा नाटा डंठल वाले पौधों, हरी और पीली फली वाले पौधों, चिकना तथा शिकनदार बीज उत्पन्न करने वाले पौधों, बड़ी फली तथा छोटी फली वाले पौधों को संकरित किया तथा उनके गुण में होने वाले परिवर्तनों का कई पीढ़ियों तक अध्ययन किया। उन्होंने अपने सभी प्रयोगों में जिनमें दो अलग-अलग गुणों को संकरित किया गया था, एक ही तरह के परिणाम पाए। जैसे उन्होंने अपने एक प्रयोग में बैंगनी तथा उजले फूल देने वाले मटर के पौधों को संकरित कर निषेचित किया। परिणाम में देखा गया कि दूसरी पीढ़ी के इस संकरित पौधे में जब फूल लगा, तो वे सभी बैंगनी रंग के थे। कोई भी फूल उजला रंग का नहीं था। इसके बाद जब दूसरी पीढ़ी के पौधे से प्राप्त बीज को पुनः बोया गया तो अब इस तीसरी पीढ़ी के 75% फूल बैंगनी रंग के थे तथा 25% फूल उजले रंग के। दूसरे शब्दों में तीसरी पीढ़ी के पौधों में फूल बैंगनी रंग और उजला रंग 3 : 1 के अनुपात में देखे गए। कई पीढ़ियों तक प्रयोग करने के बाद मैंडल ने देखा कि अंत में दोनों प्रकार के मटर के पौधे अपने मूल रूप में आ गए। मैंडल के प्रयोग से स्पष्ट हुआ कि भिन्न-भिन्न लक्षणों या गुणों वाली एक ही जाति की दो वस्तुओं को संकरित कर निषेचित किया जाए तो ठीक इसके बाद आने वाली पीढ़ी (यानी दूसरी पीढ़ी) में उस संकरण का स्पष्ट प्रभाव देखने को मिलता है। आगे कई पीढ़ियों के बाद ये दोनों वस्तुएँ अपने मूल रूप को पुनः प्राप्त कर लेती हैं।

   मैंडल ने अपने परिणाम की व्याख्या प्रबल जीन तथा अप्रबल जीन के रूप में की है। जीन के जोड़े का एक जीन जब प्रबल और दूसरा जीन जब अप्रबल होता है, तो ऐसे जीन्स को एलेल्स कहा जाता है। मैंडल ने प्रबल जीन को बड़ा अक्षर जैसे A द्वारा संकेतित किया तथा अप्रबल जीन को छोटे अक्षर जैसे a द्वारा संकेतित किया। मटर के पौधे में बैंगनी रंग का जीन प्रबल जीन होता है। दूसरी पीढ़ी में मटर के पौधे के सभी फूल बैंगनी होने का कारण यह था कि बैंगनी रंग का जीन एक प्रबल जीन होता है। परन्तु, इसका मतलब यह नहीं कि बैंगनी रंग का जीन—जो एक प्रबल जीन है—अप्रबल जीन को समाप्त कर देता है। बल्कि, सच्चाई यह है कि अप्रबल जीन का प्रभाव सिर्फ उस पीढ़ी में

दब जाता है, परन्तु बाद की पीढ़ियों में आने लगता है।

मैंडल के इस आनुवंशिकता के सिद्धान्त में दो नियम सम्मिलित हैं—

(क) पृथक्करण का सिद्धान्त (Principle of Segregation),

(ख) स्वतंत्र छटाई का सिद्धान्त (Principle of Independent Assortment)

पृथक्करण का सिद्धान्त यह बताता है कि जो गुण पहली संकर पीढ़ी में दबा रहता है या छिपा रहता है (अप्रबल जीन्स) वे समाप्त नहीं हो जाते, बल्कि बाद की संकर पीढ़ी के कुछ सदस्यों में दिखाई देते हैं। इस तरह से उनका कहना था कि दबे हुए गुण अन्य गुणों के साथ मिलकर अपना अस्तित्व नहीं खो देते हैं, बल्कि एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी और फिर इसी तरह दूसरी पीढ़ी से तीसरी पीढ़ी तक अपने मूल रूप में अलग अस्तित्व बनाए रखते हैं।

स्वतंत्र छटाई का सिद्धान्त यह बताता है कि किसी एक आनुवंशिक गुण का वितरण दूसरे आनुवंशिक गुण के वितरण से प्रभावित नहीं होता, अर्थात् स्वतंत्र होता है। जैसे मैंडल ने अपने प्रयोग में पाया कि मटर के पौधे के फूल का रंग मटर के फली के आकार, डंठल की लम्बाई आदि गुणों से स्वतंत्र होता है।

मटरों के समान **मैंडल** ने चूहों पर भी प्रयोग किया। उसने सफेद और काले चूहों को साथ-साथ रखा। इनसे जो चूहे उत्पन्न हुए, वे काले थे। फिर उसने इन वर्णसंकर काले चूहों को एक साथ रखा। इनसे उत्पन्न होने वाले चूहे, काले और सफेद दोनों रंगों के थे।

अपने प्रयासों के आधार पर **मैंडल** ने यह सिद्धान्त प्रतिपादित किया कि वर्णसंकर प्राणी या वस्तुएँ अपने मौलिक या सामान्य रूप की ओर अग्रसर होती हैं। **यही सिद्धान्त "मैंडलवाद** (Mendelism)" **के नाम से प्रसिद्ध है।**

ऊपर के विवरण से स्पष्ट है कि प्रकृति आनुवंशिकता के मामले में पीढ़ी-दर-पीढ़ी के बाद स्वयं शुद्धता एवं संतुलन बनाने के लिए प्रयत्नशील रहती है। व्यक्तियों की आनुवंशिकता के सम्बन्ध में निम्नलिखित बिन्दुओं का महत्व सर्वाधिक बताया गया है—

(i) बालक की आनुवंशिकता में केवल उसके माता-पिता की ही देन नहीं होती, बल्कि बालक की आनुवंशिकता का आधा भाग माता-पिता से, एक-चौथाई भाग दादा-दादी, नाना-नानी से, शेष भाग परदादा-परदादी, परनाना-परनानी आदि से मिलता है। इसलिए एक शिशु पूर्णतः अपने माता-पिता पर ही निर्भर नहीं करता और अपने पूर्वजों के गुणों को अपने में कुछ हद तक सम्मिलित किए रहता है।

(ii) क्रोमोसोम्स सदा जोड़े में रहते हैं। क्रोमोसोम्स में जीन भी जोड़े में होते हैं। इन्हीं जीन्स के आधार पर शिशुओं के गुणों का निर्धारण होता है। शिशु अपने माता या पिता के लक्षण सहित पैदा हो सकता है। जैसे मान लिया जाए कि पिता का कद नाटा और रंग गोरा है और माता का कद लम्बा तथा रंग साँवला है तो शिशु लम्बा और गोरा या नाटा एवं साँवला हो सकता है।

(iii) किसी भी नवजात शिशु को 23 क्रोमोसोम्स माता से तथा 23 क्रोमोसोम्स पिता से मिलते हैं। इस तरह से कुल 46 क्रोमोसोम्स या 23 जोड़े क्रोमोसोम्स नवजात शिशु में होते हैं। इनमें 22 जोड़े यानी 44 क्रोमोसोम्स बालक या बालिका में आकार एवं विस्तार में समान होते हैं। इन्हें आटोजोम्स कहा जाता है। 23वाँ जोड़ा यौन क्रोमोसोम्स होता है जो बालिका में समान अर्थात् XX होता है, परन्तु बालक में भिन्न अर्थात् XY होता है। Y क्रोमोसोम्स X क्रोमोसोम्स की अपेक्षा छोटा होता है तथा इसमें X क्रोमोसोम्स की तुलना में कम जीन्स होते हैं। मानव में शिशु के यौन का निर्धारण पिता द्वारा होता है (क्योंकि पिता में XY होते हैं) न कि माता द्वारा (जिसमें हमेशा XX क्रोमोसोम्स ही होते हैं)।

वंशानुक्रम की प्रक्रिया
(Process of Heredity)

मानव शरीर की प्रत्येक कोशिका के केन्द्रक में छड़ी के आकार की संरचना होती है जिसे क्रोमोसोम्स की संज्ञा दी जाती है। इसकी संख्या प्रत्येक कोशिका के केन्द्रक में 46 यानी 23 जोड़ा होती है। परन्तु, जनन कोशिका के केन्द्रक में मात्र 23 क्रोमोसोम्स ही पाये जाते हैं। हाँ, जब पुरुष के टेस्टीज से निकलने वाले शुक्राणु की कोशिका स्त्री के ओवरी से निकलने वाले अण्डाणु की कोशिका से मिलती है जिसके फलस्वरूप गर्भधारण होता है, तो शुक्राणु के 23 क्रोमोसोम्स तथा अण्डाणु के 23 क्रोमोसोम्स दोनों मिलकर नए जीव में क्रोमोसोम्स की उचित संख्या अर्थात् 46 यानी 23 जोड़ा बना देता है। इनमें क्रोमोसोम्स के 22 जोड़ों का आकार स्त्री और पुरुष दोनों में ही समान होता है और इन्हें आटोजोम्स कहा जाता है। क्रोमोसोम्स का 23वाँ जोड़ा सेक्स क्रोमोसोम्स होता है जो स्त्री में तो समान होता है, परन्तु पुरुष में भिन्न। सेक्स क्रोमोसोम्स दो तरह के होते हैं—एक लम्बा क्रोमोसोम्स तथा दूसरा नाटा क्रोमोसोम्स कहा जाता है। पिता में X तथा Y क्रोमोसोम्स दोनों होते हैं जबकि माँ में सिर्फ X क्रोमोसोम्स होते हैं। जब पिता के वैसे शुक्राणु जिसमें X क्रोमोसोम्स होते हैं, माँ के अण्डाणु के X क्रोमोसोम्स से मिलते हैं, तो ऐसी अवस्था में लड़की उत्पन्न होती है, परन्तु जब पिता के वैसे शुक्राणु जिसमें Y क्रोमोसोम्स होते हैं, माँ के X क्रोमोसोम्स से मिलता है तो ऐसी अवस्था में लड़का उत्पन्न होता है।

क्रोमोसोम्स में ही एक विशेष संरचना होती है जिसे जीन कहा जाता है। इन्हीं जीन्स के द्वारा माता-पिता के अपने तथा अपने पुरखों के गुण अपने पुत्र या पुत्रियों में जाते हैं। एक ही क्रोमोसोम्स में सैकड़ों जीन्स हो सकते हैं और प्रत्येक जीन्स का सम्बन्ध एक खास गुण के निर्धारण से होता है। 1950 में विशेषज्ञों द्वारा यह पता लगाया गया है कि जीन में मुख्य रूप से दो जैविक अणु होते हैं जिन्हें डी. एन. ए. या Deoxyribonucleic acid तथा आर. एन. ए. या Ribonucleic acid कहा जाता है। DNA में विशेष गुण जो मूलतः माता-पिता से मिले होते हैं, संचित रहता है तथा इससे इस बात का निर्धारण होता है कि जीव किस प्रकार का शीलगुण विकसित करेगा। RNA द्वारा DNA के संदेशों को ढोया जाता है। इस तरह स्पष्ट है कि जीन्स द्वारा ही मूलतः आनुवंशिक गुणों का संचरण होता है।

क्रोमोसोम्स के जोड़े के दोनों सदस्यों में एक ही गुण वाले जीन्स होते हैं और इसलिए जीन्स के भी जोड़े होते हैं। ये दोनों जीन्स अपने-अपने क्रोमोसोम्स में एक खास जगह पर होते हैं। ऐसे क्रोमोसोम्स को होमोलोगस क्रोमोसोम्स तथा ऐसे जीन्स को होमोलोगस जीन्स कहा जाता है। ये दोनों होमोलोगस जीन्स समरूप या असमान हो सकते हैं। जब वे समान होते हैं, तो जीव निश्चित रूप से सम्बन्धित गुण दिखाता है। जैसे मान लिया जाए कि ये दोनों जीन्स हकलाने के ही है, तो शिशु अवश्य हकलाएगा। ऐसा भी सम्भव है कि ये दोनों जीन्स समरूप न होकर असमान हो। ऐसे जीन्स को ऐलेल्स कहा जाता है। जैसे सम्भव है कि जोड़े का एक जीन हकलाने का हो और दूसरा जीन सामान्य ढंग से बातचीत करने का हो। ऐसी अवस्था में जीव में कौन-सा गुण विकसित होगा, यह निर्भर इस बात पर करता है कि इन दोनों में कौन-सा जीन प्रबल है तथा कौन अप्रबल? प्रबल जीन वैसे जीन को कहा

जाता है जो अप्रबल जीन के साथ होने पर अपना गुण संतान में अधिक दिखाता है, परन्तु अप्रबल जीन के गुण को पूर्णतः समाप्त नहीं कर देता। कभी जब अगली पीढ़ी में या उससे अगली पीढ़ी में इस तरह के अप्रबल जीन एकसाथ मिलते हैं तो अपना गुण संतान में दिखा देते हैं। जब होमोलोगस जीन्स के जोड़े का एक जीन हकलाने का है और दूसरा जीन सामान्य ढंग से बातचीत करने का है, तो बालक सामान्य ढंग से ही बातचीत करेगा; क्योंकि यह जीन हकलाने वाले जीन से अधिक प्रबल होता है। सामान्यतः अप्रबल जीन से सम्बद्ध गुण बालक में तभी देखे जाते हैं जब एक ही गुण के दोनों जीन समरूप हों। जब किसी गुण से सम्बन्धित दोनों जीन्स बालक में समरूप होते हैं तो वैसे बालक को होमोजाइगोअस बालक कहा जाता है, परन्तु जब वे भिन्न-भिन्न होते हैं तो उसे हेट्रोजाइगोअस बालक कहा जाता है।

कुछ अज्ञात कारणों से कभी-कभी कुछ व्यक्तियों में सामान्य से अधिक X या Y क्रोमोजोम्स पाये जाते हैं। जन्म के पहले दिन यदि बच्चे के शरीर से खून लेकर एक विशेष प्रविधि, जिसे कैरियोटाईपिंग कहा जाता है, द्वारा यदि जाँच की जाए, तो यह स्पष्ट रूप से पता चल जायेगा कि उस बच्चा या बच्ची में क्रोमोसोम्स का सामान्य जोड़ा अर्थात् XY या XX है या इस सामान्य संख्या से X या Y ज्यादा या कम संख्या में है। क्रोमोसोम्स के जोड़े में वैसे तो कई तरह की असामान्यताएँ पाई जाती हैं, परन्तु उसमें प्रमुख असामान्यताएँ हैं— XXY की असामान्यता, XYY की असामान्यता तथा XO की असामान्यता। XXY की असामान्यता में व्यक्ति देखने में पुरुष जैसा लगता है, परन्तु सचमुच वह अप्रजायी होता है। इसे क्लाइनफेल्टर्स सलक्षण भी कहा जाता है। XO की असामान्यता में महिला होते हुए भी उसमें महिला का गुण नहीं पाया जाता है तथा वह बाँझ होती है। इसे टर्नर्स सलक्षण भी कहा जाता है। XYY की असामान्यता होने पर पुरुष अपराधी हो जाता है।

बालक पर वंशानुक्रम का प्रभाव (Influence of Heredity on Child)

कुछ मनोवैज्ञानिकों के आधार पर वंशानुक्रम के प्रभाव का वर्णन निम्न प्रकार है—

1. **मूल-शक्तियों पर प्रभाव—थार्नडाइक** (Thorndike) का मत है कि बालक की मूल शक्तियों का प्रधान कारण उसका वंशानुक्रम है।
2. **शारीरिक लक्षणों पर प्रभाव—कार्ल पीयरसन** (Karl Pearson) का मत है कि यदि माता- पिता की लम्बाई कम या अधिक होती है तो उनके बच्चे की भी लम्बाई कम या अधिक होती है।
3. **प्रजाति की श्रेष्ठता पर प्रभाव—क्लिनबर्ग** (Klinberg) का मत है कि बुद्धि की श्रेष्ठता का कारण प्रजाति है। यही कारण है कि अमरीका की श्वेत प्रजाति, नीग्रो प्रजाति से श्रेष्ठ है।
4. **व्यावसायिक योग्यता पर प्रभाव—कैटल** (Cattell) का मत है कि व्यावसायिक योग्यता का मुख्य कारण वंशानुक्रम है। वह इस निष्कर्ष पर अमरीका के 885 वैज्ञानिकों के परिवारों का अध्ययन करने के परिणामस्वरूप पहुँचा। उसने बताया कि इन परिवारों में से 2/5 व्यवसायी-वर्ग के, 1/2 उत्पादक-वर्ग के और केवल 1/4 कृषि-वर्ग के थे।
5. **चरित्र पर प्रभाव—डगडेल** (Dugdale) का मत है कि चरित्रहीन माता-पिता की सन्तान चरित्रहीन होती है। उसने यह बात सन् 1877 ई. में ज्यूस (Jukes) के वंशजों का अध्ययन करके सिद्ध की। 1720 में न्यूयार्क में जन्म लेने वाला ज्यूकस एक चरित्रहीन मनुष्य था और उसकी पत्नी भी उसके समान चरित्रहीन थी। इन दोनों के वंशजों के सम्बन्ध में **नन** (Nunn) ने लिखा है—"पाँच पीढ़ियों में लगभग 1,000 व्यक्तियों में से 300 बाल्यावस्था में मर गए, 310 ने 2,300 वर्ष दरिद्रगृहों में व्यतीत किए, 440 रोग के कारण मर गए, 130 (जिनमें 7 हत्या करने वाले थे) दण्ड-प्राप्त अपराधी थे और केवल 20 ने कोई व्यवसाय करना सीखा।"
6. **महानता पर प्रभाव—गाल्टन** (Galton) का मत है कि व्यक्ति की महानता का कारण उसका वंशानुक्रम है। यह वंशानुक्रम का ही परिणाम है कि व्यक्तियों के शारीरिक और मानसिक लक्षणों में विभिन्नता दिखाई देती है। व्यक्ति का कद, वर्ण, वजन, स्वास्थ्य, बुद्धि, मानसिक शक्ति आदि उसके वंशानुक्रम पर आधारित रहते हैं। **गाल्टन** ने लिखा है—"महान् न्यायाधीशों, राजनीतिज्ञों, सैनिक पदाधिकारियों, साहित्यकारों, वैज्ञानिकों और खिलाड़ियों के जीवन-चरित्रों का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि इनके परिवारों में इन्हीं क्षेत्रों में प्रशंसा-प्राप्त अन्य व्यक्ति भी हुए हैं।"
7. **वृद्धि पर प्रभाव—गोडार्ड** (Goddard) का मत है कि मन्द-बुद्धि माता-पिता की सन्तान मन्द-बुद्धि और तीव्र-बुद्धि माता-पिता की संतान तीव्र-बुद्धि वाली होती है। उसने यह बात कालीकॉक (Kallikak) नामक एक सैनिक के वंशजों का अध्ययन करके सिद्ध की। कालीकॉक ने पहले एक मन्द-बुद्धि स्त्री से और कुछ समय के बाद एक तीव्र-बुद्धि की स्त्री से विवाह किया। पहली स्त्री के 480 वंशजों में से 143 मन्द-बुद्धि, 46 सामान्य, 36 अवैध सन्तान, 32 वेश्यायें, 24 शराबी, 8 वेश्यालय- स्वामी, 3 मृगी-रोग वाले और 3 अपराधी थे। दूसरी स्त्री के 496 वंशजों में से केवल 3 मन्द-बुद्धि और चरित्रहीन थे। शेष ने व्यवसायियों, डाक्टरों, शिक्षकों, वकीलों आदि के रूप में समाज में सम्मानित स्थान प्राप्त किए।

बालक पर वातावरण का प्रभाव (Influence of Environment on Child)

कुछ मनोवैज्ञानिकों के अनुसार वातावरण के प्रभाव का वर्णन निम्न प्रकार है—

1. **शारीरिक अन्तर पर प्रभाव—फ्रेंज बोन्स** (Franz Bons) का मत है कि विभिन्न प्रजातियों के शारीरिक अन्तर का कारण वंशानुक्रम न होकर वातावरण है। उसने अनेक उदाहरण देकर सिद्ध किया है कि जो जापानी और यहूदी, अमरीका में अनेक पीढ़ियों से निवास कर रहे हैं, उनकी लम्बाई भौगोलिक वातावरण के कारण बढ़ गयी है।
2. **मानसिक विकास पर प्रभाव—गोर्डन** (Gordon) का मत है कि उचित सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण न मिलने पर मानसिक विकास की गति धीमी हो जाती है। उसने यह बात नदियों के किनारे रहने वाले बच्चों का अध्ययन करके सिद्ध की। इन बच्चों का वातावरण गन्दा और समाज के अच्छे प्रभावों से दूर था।
3. **प्रजाति की श्रेष्ठता पर प्रभाव—क्लार्क** (Clark) का मत है कि कुछ प्रजातियों की बौद्धिक श्रेष्ठता का कारण वंशानुक्रम न होकर वातावरण है। उसने यह बात अमरीका के कुछ गोरे और नीग्रो लोगों की बुद्धि-परीक्षा लेकर सिद्ध की। उसके समान अनेक अन्य विद्वानों का मत है कि नीग्रो प्रजाति की बुद्धि का स्तर इसलिए निम्न है, क्योंकि उनको अमरीका की श्वेत प्रजाति के समान शैक्षिक, सांस्कृतिक और सामाजिक वातावरण उपलब्ध नहीं है।
4. **बुद्धि पर प्रभाव—कैंडोल** (Candolle) का मत है कि बुद्धि के विकास में वंशानुक्रम की अपेक्षा वातावरण का प्रभाव कहीं अधिक पड़ता है। उसने यह बात 552 विद्वानों का अध्ययन करके सिद्ध की। ये विद्वान् लन्दन की **'रॉयल सोसायटी'**, पेरिस की **'विज्ञान अकादमी'**, और बर्लिन की **'रॉयल अकादमी'** के सदस्य थे।

5. **व्यक्तित्व पर प्रभाव—कूले** (Colley) का मत है कि व्यक्तित्व के निर्माण में वंशानुक्रम की अपेक्षा वातावरण का अधिक प्रभाव पड़ता है। उसने सिद्ध किया है कि कोई भी व्यक्ति उपयुक्त वातावरण में रहकर अपने व्यक्तित्व का निर्माण करके महान् बन सकता है। उसने यूरोप के 71 साहित्यकारों के उदाहरण देकर बताया है कि **बनयान** (Banyan) और **बर्न्स** (Burns) का जन्म निर्धन परिवारों में हुआ था, फिर भी वे अपने व्यक्तित्व का निर्माण करके महान् बन सके। इसका कारण केवल यह था कि उनके माता-पिता ने उनको उत्तम वातावरण में रखा।

6. **अनाथ बच्चों पर प्रभाव**—समाज-कल्याण केन्द्रों में अनाथ और परावलम्बी बच्चे आते हैं। वे साधारणतः निम्न परिवारों के होते हैं, पर केन्द्रों में उनका अच्छी विधि से पालन किया जाता है, उनको अच्छे वातावरण में रखा जाता है और उनके साथ अच्छा व्यवहार किया जाता है।

7. **जुड़वाँ बच्चों पर प्रभाव**—जुड़वाँ बच्चों के शारीरिक लक्षणों, मानसिक शक्तियों और शैक्षिक योग्यताओं में अत्यधिक समानता होती है। **न्यूमैन** (Newman), **फ्रीमैन** (Freeman) और **होलजिंगर** (Holzinger) ने 20 जोड़े जुड़वाँ बच्चों को अलग-अलग वातावरण में रखकर उनका अध्ययन किया। उन्होंने एक जोड़े के एक बच्चे को गाँव के फार्म पर और दूसरे को नगर में रखा। बड़े होने पर दोनों बच्चों में पर्याप्त अन्तर पाया गया। फार्म का बच्चा अशिष्ट, चिन्ताग्रस्त और कम बुद्धिमान था। उसके विपरीत, नगर का बच्चा शिष्ट, चिन्तामुक्त और अधिक बुद्धिमान था।

   स्टीफैन्स (Stephens) का विचार है—"इस प्रकार के अध्ययनों से हम यह निर्णय कर सकते हैं कि पर्यावरण का बुद्धि पर साधारण प्रभाव होता है और उपलब्धि पर अधिक विशेष प्रभाव होता है।"

8. **बालक पर बहुमुखी प्रभाव**—वातावरण, बालक के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक आदि सभी अंगों पर प्रभाव डालता है। इसकी पुष्टि 'एवेरॉन के जंगली बालक' के उदाहरण से की जा सकती है। इस बालक को जन्म के बाद ही भेड़िया उठा ले गया था और उसका पालन-पोषण जंगली पशुओं के बीच में हुआ था। कुछ शिकारियों ने उसे सन् 1799 में पकड़ लिया। उस समय उसकी आयु 11 या 12 वर्ष की थी। उसकी आकृति पशुओं की-सी थी और वह उनके समान हाथों-पैरों से चलता था। वह कच्चा माँस खाता था। उसमें मनुष्य के समान बोलने और विचार करने की शक्ति नहीं थी। उसको मनुष्य के समान सभ्य और शिक्षित बनाने के सब प्रयास विफल हुए।

   भारत में रामू नामक भेड़िया बालक एवं अमला तथा कमला नामक भेड़िया बालिकाओं के उदाहरण वातावरण का महत्त्व सिद्ध करते हैं। कास्पर हाउजर (Casper Houser) नामक राजकुमार को शैशवावस्था से राजनैतिक कारणों से समाज से पृथक् रखा गया। वह केवल उन्हीं ध्वनियों को, जिन्हें उसने सुना होगा, उच्चरित कर सकता था।

वंशानुक्रम व वातावरण का सम्बन्ध एवं सापेक्षिक महत्व (Relation and Comparative Importance of Heredity and Environment)

वंशानुक्रम तथा वातावरण, एक-दूसरे से पृथक् नहीं हैं। ये दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। बीज तथा खेत जैसा इनका सम्बन्ध है। एक के बिना दूसरे की सार्थकता नहीं है। स्वस्थ बीज तभी स्वस्थ पौधे का रूप धारण कर सकता है जबकि वातावरण स्वस्थ एवं सन्तुलित हो। अच्छी खाद, समय पर पानी, धरती की तैयारी, निराई-गुड़ाई आदि वातावरण की सृष्टि करती हैं। **लैण्डिस** और **लैण्डिस** ने इसीलिये कहा है—"वंशक्रम हमें विकसित होने की क्षमतायें प्रदान करता है। इन क्षमताओं के विकसित होने के अवसर हमें वातावरण से मिलते हैं, वंशक्रम हमें कार्यशील पूँजी देता है और परिस्थिति हमें इसको निवेश करने के अवसर प्रदान करती है।"

"Heredity gives the capacities to be developed but opportunity for the development of these capacities must come from environment. Heredity gives us working capital, environment gives us the opportunity to invest it." —**Landis** and **Landis**

बालक के विकास में वंशानुक्रम और वातावरण में से कौन अधिक महत्वपूर्ण है, यह निश्चित रूप से कहना सम्भव नहीं प्रतीत होता है। मानव- विकास में दोनों का अपने-अपने स्थान पर महत्व है। दोनों में से किसी एक की अवहेलना करके मानव के सामाजिक विकास का अध्ययन नहीं किया जा सकता। वास्तव में विकास कार्य में दोनों एक-दूसरे के पूरक और सहायक हैं। मनोवैज्ञानिक वुडवर्थ ने बीज और धरती का उदाहरण देकर दोनों की तुलना करते हुए स्पष्ट कर दिया है कि अच्छी उपज के लिए उत्तम बीज और उत्तम धरती का होना आवश्यक है। एक अच्छा बीज सुन्दर, स्वस्थ और लहलहाता हुआ पौधा तभी बन सकता है जब कि हम उसे अच्छी भूमि में बोयें और उसे अच्छी खाद, समय पर पानी और निराई-गुड़ाई की सुविधा प्रदान करें। हम लाख प्रयत्न करके आलू के बीज से टमाटर का पौधा नहीं तैयार कर सकते, किन्तु अच्छी खाद और समय पर पानी तथा निराई-गुड़ाई करने से एक ही पौधे के अच्छे नमूने और इन सबके अभाव में उसी पौधे से खराब प्रकार के नमूने दिखाई पड़ सकते हैं। अतः बीज के अच्छे होने और धरती के खराब होने पर उपज अच्छी नहीं हो सकती। उसी प्रकार धरती बहुत अच्छी हो और बीज खराब हो तो भी उपज अच्छी नहीं हो सकती। यहाँ जो सम्बन्ध बीज और धरती का है वही सम्बन्ध वंशक्रम और वातावरण का है। विभिन्न परीक्षणों द्वारा भी यह सिद्ध किया गया है कि वंशानुक्रम और वातावरण दोनों ही मानव-विकास में सापेक्षिक प्रभाव डालते हैं और ये दोनों पृथक् नहीं हैं। दोनों को किसी भी स्थिति में अलग करके विचार नहीं किया जा सकता। **मैकाइवर** और **पेज** ने इन दोनों के सापेक्ष महत्व को स्वीकार करते हुए कहा है—''जीवन की प्रत्येक घटना दोनों का परिणाम होती है। किसी भी निश्चित परिणाम के लिए एक उतनी ही आवश्यक है जितनी कि दूसरी। कोई भी न तो हटाई जा सकती है और न ही कभी पृथक् की जा सकती है।''

"Every phenomenon of life is the product of both. Each is as necessary to the result as the other. Neither can ever be eliminated and neither can ever be isolated." —**MacIver** and **Page**

मानव के विकास में वंशक्रम और वातावरण दोनों का समान योग है। **वुडवर्थ** और **मारिक्वस** के अनुसार—''व्यक्ति वंशानुक्रम और वातावरण का योगफल नहीं वरन् दोनों तत्वों का गुणनफल है।'' अर्थात् ''विकास = वंशानुक्रम × वातावरण। वंशानुक्रम को व्यक्ति बीज रूप में प्राप्त करता है और बीज का विकास उचित पोषण द्वारा होता है। इस प्रकार वंशानुक्रम वह गुण है जो उपयुक्त पर्यावरण में ही यथार्थता प्राप्त करता है जैसा कि **मैकाइवर** और **पेज** ने कहा है—''जीवन के सभी गुण वंशक्रम में हैं, इन गुणों का प्रकट होना पर्यावरण पर निर्भर करता है।''

"All the qualities of life are in the heredity, all the evocation of qualities depend on the environment."

अन्त में हम कह सकते हैं कि बालक के व्यक्तित्व के विकास में ये दोनों कारक महत्वपूर्ण हैं। इन दोनों कारकों पर ध्यान देते हुए शिक्षकों और अभिभावकों को बालक के विकास में सहयोग देना चाहिए।

बालक के विकास में वंशानुक्रम और वातावरण की भूमिका (Role of Heredity and Environment in the Development of Child)

मानव विकास के संदर्भ में वंशानुक्रम सम्बन्धी जितने अध्ययन या प्रयोग हुए हैं, उनसे प्रतीत होता है कि मनुष्य के विकास पर वंशानुक्रम का ही प्रभाव पड़ता है तथा वातावरण सम्बन्धी जितने अध्ययन या प्रयोग किए गए हैं उनसे लगता है कि मनुष्य के विकास का मूल कारक वातावरण है। वंशानुक्रम और वातावरण में कौन अधिक महत्वपूर्ण है, यह निश्चित रूप से कहना मुश्किल है। बालक के विकास में दोनों का अपना-अपना महत्वपूर्ण स्थान है। दोनों में से किसी एक को महत्व देकर और दूसरे की अवहेलना करना उचित नहीं है। वास्तव में विकास कार्य में दोनों एक-दूसरे के पूरक और सहायक हैं।

बालक के विकास में वंशानुक्रम और वातावरण की भूमिका को इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है–

1. **वंशानुक्रम व वातावरण की अपृथकता** (Non-seperation of Heredity and Environment)–बालक के व्यक्तित्व के किसी भी विशेष गुण या विशेषता के बारे में यह नहीं कहा जा सकता है कि यह वंशानुक्रम के कारण है अथवा वातावरण के। वास्तव में वंशानुक्रम और वातावरण की संयुक्त देन ही व्यक्तित्व है। मैकाइवर और पेज के उपरोक्त कथन से इस बात को बल मिलता है।

2. **वंशानुक्रम और वातावरण का परस्पर सहयोगी प्रभाव** (Co-acting influences of Heredity and Environment)–बालक के विकास में वंशानुक्रम और वातावरण दोनों में से कौन अधिक महत्वपूर्ण है, यह कहना संभव नहीं है, दोनों ही अति आवश्यक और समान उपयोगी हैं। किसी हालत में दोनों को एक-दूसरे का विरोधी नहीं किया जा सकता है। दोनों एक-दूसरे के पूरक तथा घनिष्ठ सहयोगी हैं। बीज और भूमि दोनों में से कोई अकेला पौधे को जन्म नहीं दे सकता, बीज में उगने की शक्ति होती है और आगे जरूर एक विशेष किस्म का पौधा बन सकता है लेकिन वह ऐसा कितनी अच्छी तरह कर पाएगा, यह उस भूमि पर निर्भर करता है जिसमें उसे लगाया जा रहा है। उन्नत किस्म के अच्छे बीज और उपजाऊ मिट्टी दोनों का ठीक ढंग से संयोग होने पर ही अधिक अच्छे पौधे की आशा की जाती है। इसी प्रकार बालक के उत्तम विकास के लिए वंशानुक्रम तथा वातावरण का उत्तम संयोग आवश्यक है। **गैरेट** ने इसी को स्पष्ट करते हुए लिखा है–"इससे निश्चित कोई और बात नहीं है कि वंशानुक्रम और वातावरण परस्पर सहयोगी हैं और दोनों ही सफलता के लिए अनिवार्य है।"

"Nothing is more certain than that heredity and environment are co-acting influences and both are essentials to achievement."

– Garrett

3. **वंशानुक्रम और वातावरण का समान महत्व** (Equal Importance of Heredity and Environment)–बालक की वृद्धि और विकास के संदर्भ में वंशानुक्रम और वातावरण के बीच जो रिश्ता है उसमें 'अथवा' और 'या' की कोई जगह नहीं होती। यह सम्बन्ध केवल 'और' से व्यक्त किया जा सकता है। अतः बालक का विकास वंशानुक्रम और वातावरण दोनों पर निर्भर करता है। वंशानुक्रम और वातावरण के बीच वास्तव में क्या सम्बन्ध है, इस सम्बन्ध में **वुडवर्थ** और **मार्क्विस** का विचार है–"वंशानुक्रम और वातावरण का सम्बन्ध जोड़ की तरह न होकर गुणा की तरह अधिक है।

व्यक्ति = वंशानुक्रम + वातावरण नहीं बल्कि वंशानुक्रम × वातावरण है।"

"The relation of heredity and environment is not like addition but more like multiplication. The individual does not equal heredity + environment but does equal heredity × environment."

– Woodworth and Marquis

4. **वंशानुक्रम और वातावरण के प्रभावों में अन्तर करना संभव नहीं** (Differentiation is not Possible between the Impact of Heredity and Environment)–बालक की शिक्षा और विकास पर कितना प्रभाव वंशानुक्रम का पड़ता है और कितना वातावरण का, यह बता पाना संभव नहीं है। वंशानुक्रम में वे सभी बातें आ जाती हैं जो व्यक्ति के जन्म के समय नहीं, वरन् गर्भावस्था के समय उत्पन्न थीं। इसी प्रकार वातावरण में वे सब बाह्य तत्व आ जाते हैं, जो व्यक्ति को जन्म के समय प्रभावित करते हैं। मनुष्य के विकास में वंशानुक्रम आधारभूत कारक का कार्य करता है और वातावरण साधन रूप कारक का कार्य करता है और इनमें से किसी एक के अभाव में भी मानव का विकास नहीं किया जा सकता। मनोवैज्ञानिक अध्ययन एवं प्रयोगों के आधार पर यह निष्कर्ष तो निकाले सके हैं कि मनुष्य के किसी भी प्रकार के विकास में वंशानुक्रम और वातावरण दोनों का प्रभाव पड़ता है, परन्तु यह नहीं ज्ञात कर सके कि वंशानुक्रम का कितना प्रभाव पड़ता है और वातावरण का कितना? अन्त में यह कहा जा सकता है कि बालक के व्यक्तित्व के विकास में ये दोनों कारक महत्वपूर्ण हैं। इन दोनों कारकों पर ध्यान देते हुए अध्यापकों और अभिभावकों को बालक के विकास में सहयोग देना चाहिए।

शिक्षक के लिए वंशानुक्रम व वातावरण का महत्व (Importance of Heredity and Environment for Teacher)

शिक्षक के लिए वंशानुक्रम और वातावरण का क्या महत्त्व है और वह उनके ज्ञान से अपना और अपने छात्रों का किस प्रकार हित कर सकता है, इस पर हम अलग-अलग शीर्षकों के अन्तर्गत विचार कर रहे हैं, यथा–

(अ) वंशानुक्रम का महत्त्व (Importance of Heredity)

1. वंशानुक्रम के कारण बालकों में शारीरिक विभिन्नता होती है। शिक्षक इस ज्ञान से सम्पन्न होकर उनके शारीरिक विकास में योग दे सकता है।
2. वंशानुक्रम के कारण बालकों की जन्मजात क्षमताओं में अन्तर होता है। शिक्षक इस बात को ध्यान में रखकर कम प्रगति करने वाले बालकों को अधिक प्रगति करने में योग दे सकता है।
3. बालकों और बालिकाओं में लिंगीय भेद वंशानुक्रम के कारण होता है, जिससे विभिन्न विषयों में उनकी योग्यता कम या अधिक होती है। शिक्षक इस ज्ञान से उनके लिए उपयुक्त विषयों के अध्ययन की व्यवस्था कर सकता है।
4. वंशानुक्रम के कारण बालकों में अनेक प्रकार की विभिन्नताएँ होती हैं, जो उनके विकास के साथ-साथ ही अधिक स्पष्ट होती जाती हैं। शिक्षक, बालकों की इन विभिन्नताओं का अध्ययन करके इनके अनुरूप शिक्षा का आयोजन कर सकता है।
5. वंशानुक्रम के कारण बालकों की सीखने की योग्यता में अन्तर होता है। शिक्षक इस ज्ञान से अवगत होकर देर में सीखने वाले बालकों के प्रति सहनशील और जल्दी सीखने वाले बालकों को अधिक कार्य दे सकता है।
6. बालकों को वंशानुक्रम से कुछ प्रवृत्तियाँ (Tendencies) प्राप्त होती हैं, जो वांछनीय और अवांछनीय–दोनों प्रकार की होती हैं। शिक्षक इन प्रवृत्तियों का अध्ययन करके वांछनीय प्रवृत्तियों का विकास और अवांछनीय प्रवृत्तियों का दमन या मार्गान्तरीकरण कर सकता है।

7. **वुडवर्थ** (Woodworth) के अनुसार—देहाती बालकों की अपेक्षा शहरी बालकों के मानसिक स्तर की श्रेष्ठता आंशिक रूप से वंशानुक्रम के कारण होती है। शिक्षक इस ज्ञान से युक्त होकर अपने शिक्षण को उनके मानसिक स्तरों के अनुरूप बना सकता है।
8. वंशानुक्रम का एक नियम बताता है कि योग्य माता-पिता के बच्चे अयोग्य और अयोग्य माता-पिता के बच्चे योग्य हो सकते हैं। इस नियम को भली-भाँति समझने वाला शिक्षक ही बालकों के प्रति उचित प्रकार का व्यवहार कर सकता है।

(ब) वातावरण का महत्त्व (Importance of Environment)

1. बालक अपने परिवार, पड़ोस, मुहल्ले और खेल के मैदान में अपना पर्याप्त समय व्यतीत करता है और इससे प्रभावित होता है। शिक्षक इन स्थानों के वातावरण को ध्यान में रखकर ही बालक का उचित पथ-प्रदर्शन करता है।
2. **सोरेन्सन** (Sorenson) के अनुसार—शिक्षा का उत्तम वातावरण बालकों की बुद्धि और ज्ञान की वृद्धि में प्रशंसनीय योग देता है। इस बात की जानकारी रखने वाला शिक्षक अपने छात्रों के लिए उत्तम शैक्षिक वातावरण प्रदान करने की चेष्टा कर सकता है।
3. **रूथ बैंडिक्ट** (Ruth Bendict) के अनुसार—व्यक्ति जन्म से ही एक निश्चित सांस्कृतिक वातावरण में रहता है और उसके आदर्शों के अनुरूप ही आचरण करता है। इस तथ्य को जानने वाला शिक्षक, बालक को अपना सांस्कृतिक विकास करने में योगदान दे सकता है।
4. अनुकूल वातावरण में जीवन का विकास होता है और व्यक्ति उत्कर्ष की ओर बढ़ता है। इस बात को समझने वाला शिक्षक अपने छात्रों की रुचियों, प्रवृत्तियों और क्षमताओं के अनुकूल वातावरण प्रदान करके उनको उत्कर्ष की ओर बढ़ने में सहायता दे सकता है।
5. **यूनेस्को** (UNESCO) के कुछ विशेषज्ञों का कथन है कि वातावरण का बालकों की भावनाओं पर व्यापक प्रभाव पड़ता है और उससे उनके चरित्र का निर्माण भी होता है। इस कथन में विश्वास करके शिक्षक, बालकों के लिए ऐसे वातावरण का निर्माण कर सकता है, जिससे न केवल उनकी भावनाओं का संतुलित विकास हो, वरन् उनके चरित्र का भी निर्माण हो।
6. वातावरण, बालक के विकास की दशा निश्चित करता है। वातावरण ही निश्चित करता है कि बालक बड़ा होकर अच्छा या बुरा, चरित्रवान् या चरित्रहीन, संयमी या व्यभिचारी, व्यापारी या साहित्यकार, देशप्रेमी या देशद्रोही बनेगा। इस तथ्य पर मनन करने वाला शिक्षक अपने छात्रों के लिए ऐसे वातावरण का सृजन कर सकता है, जिससे उनका विकास उचित दिशा में हो।
7. प्रत्येक समाज का एक विशिष्ट वातावरण होता है। बालक को इसी समाज के वातावरण से अपना अनुकूलन करना पड़ता है। इस बात से भली-भाँति परिचित होने वाला शिक्षक, विद्यालय को लघु समाज का रूप प्रदान करके बालकों को अपने वृहत् समाज के वातावरण से अनुकूलन करने की शिक्षा दे सकता है।

महत्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

1 क्या बच्चे इसलिए भाषा अर्जित करते हैं, क्योंकि उनमें आनुवंशिक रूप से ऐसा करने की पूर्व प्रवृत्ति होती है या उनके माता-पिता प्रारम्भिक अवस्था से ही उन्हें गहन रूप से सिखाते हैं ? यह प्रश्न आवश्यक रूप से दर्शाता है–

(A) बहु-कारक योग्यता के रूप में विकास पर चर्चा

(B) क्या विकास एक सतत् प्रक्रिया है या एक असतत् प्रक्रिया

(C) प्रकृति और पोषण पर बहस

(D) भाषा के विकास पर संज्ञान का प्रभाव

2 .....जन्मजात वैयक्तिक गुणों का योगफल है।

(A) निरन्तरता (B) समानता

(C) वंशानुक्रम (D) युयुत्सा

3 .....के अनुसार, ''बालक का विकास आनुवंशिकता तथा वातावरण का गुणनफल है।''

(A) वुड्वर्थ (B) हॉलैण्ड

(C) थॉर्नडाइक (D) गैरेट

4 वह अवस्था जो कि माता के 21वें गुणसूत्र जोड़े के अलग न हो पाने के कारण होती है, कहलाती है–

(A) डाउन सिण्ड्रोम

(B) टर्नर सिण्ड्रोम

(C) विल्सन सिण्ड्रोम

(D) क्लीनफेल्टर सिण्ड्रोम

5 ''किसी व्यक्ति को आकार देने में वातावरण के घटकों की कोई भूमिका नहीं होती, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति की वृद्धि उसकी आनुवंशिक संरचना से निर्धारित होती है।'' यह कथन–

(A) ठीक है, क्योंकि वातावरण के घटक किसी व्यक्ति की वृद्धि और विकास में कम योगदान करते हैं

(B) ठीक है, क्योंकि बहुत-से शोध यह सिद्ध करते हैं कि आनुवंशिक पदार्थ व्यक्ति के विकास की भविष्यवाणी करता है

(C) ठीक नहीं है, क्योंकि बहुत-से शोध यह सिद्ध करते हैं कि विकास में वातावरण का बड़ा प्रभाव पड़ सकता है

(D) ठीक है, क्योंकि किसी व्यक्ति की आनुवंशिक संरचना बहुत प्रबल होती है

6 .....तथा.....की विशिष्ट अन्योन्य क्रिया का परिणाम विकास के विविध मार्गों और निष्कर्षों के रूप में हो सकता है।

(A) चुनौतियाँ, सीमाएँ

(B) खोज, पोषण

(C) वंशानुक्रम, पर्यावरण

(D) स्थिरता, परिवर्तन

7 क्या बच्चे इसलिए भाषा अर्जित करते हैं, क्योंकि उनमें आनुवंशिक रूप से ऐसा करने की पूर्व प्रवृत्ति होती है या उनके माता-पिता प्रारम्भिक अवस्था से ही उन्हें गहन रूप से सिखाते हैं ? यह प्रश्न आवश्यक रूप से दर्शाता है–

(A) क्या विकास एक सतत् प्रक्रिया है या एक असतत् प्रक्रिया

(B) भाषा के विकास का संज्ञान का प्रभाव

(C) प्रकृति और पोषण पर बहस

(D) बहु-कारक योग्यता के रूप में विकास पर चर्चा

8 निम्नलिखित में से.....के अतिरिक्त सभी वातावरणीय कारक विकास को आकार देते हैं।

(A) शिक्षा की गुणात्मकता

(B) शारीरिक गठन

(C) पौष्टिकता की गुणवत्ता

(D) संस्कृति

9. निम्नलिखित में से कौन-सा मुख्य रूप से आनुवंशिकता सम्बन्धी कारक है ?
(A) समकक्ष व्यक्तियों के समूह के प्रति अभिवृति
(B) चिन्तन पैटर्न
(C) आँखों का रंग
(D) सामाजिक गतिविधियों में भागीदारिता

10. मानव विकास का अध्ययन करने के लिए आनुवंशिक विधि का उपयोग किया जा सकता है–
(A) क्षैतिज
(B) लम्बरूप
(C) क्षैतिज और लम्बरूप दोनों
(D) इनमें से कोई नहीं

11. यदि.....गुणसूत्रों का मिलान हो तो लड़के का जन्म होता है।
(A) YY (B) XY
(C) XX (D) BY

उत्तरमाला

1 (C) 2 (C) 3 (A) 4 (A) 5 (C)
6 (C) 7 (C) 8 (B) 9 (C) 10. (C)
11. (B)

अध्याय
1

अपठित गद्यांश एवं पद्यांश

अपठित गद्यांश

निर्देश (प्रश्न संख्या 1 से 8 तक)

गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों में **सबसे उचित** विकल्प को चुनिए–

मनुष्य अपने विकास के लिए प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करके अपनी विविध आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण, संवर्धन एवं मितव्ययितापूर्वक उपयोग मानव की कुशलता, लगन एवं समर्पण पर निर्भर है। प्रकृति के अमूल्य उपहारों, जैसे–वन, जल, खनिज आदि को अपने कल्याण के लिए सम्पूर्ण प्रयोग करना मानव–मात्र की इच्छा शक्ति व तर्क शक्ति पर निर्भर है। मानव की प्रगति के लिए सतत् विकास का महत्व गाँधीजी ने बहुत पहले ही पहचान लिया था। इसलिए सतत् विकास हेतु मानव की आत्मनिर्भरता को ध्यान में रखकर संसाधनों के संरक्षण पर जोर दिया। विकास का ध्येय जीवन के आर्थिक ही नहीं वरन् सामाजिक, आर्थिक, नैतिक और आध्यात्मिक स्तर को ऊँचा उठाना होना चाहिए। प्रकृति से संस्कृति की ओर बढ़ने की आकांक्षा हमेशा होनी चाहिए। जहाँ इस आकांक्षा की पूर्ति होगी उसे इतिहास में स्वर्ण युग का नाम देना उचित होगा न कि साहित्य और कला की तरक्की का। इस दृष्टि से अभी तक भारत का स्वर्ण युग दूर–दूर तक दिखाई नहीं देता।

1. भारत का स्वर्ण युग दूर–दूर तक इसलिए दिखाई नहीं देता, क्योंकि–
- (A) भारत में सोना कम हो गया है
- (B) प्रकृति से संस्कृति की ओर बढ़ने की आकांक्षा पूरी नहीं हो रही है
- (C) प्रकृति के संसाधनों का संरक्षण नहीं हो रहा है
- (D) लोगों का आर्थिक स्तर नहीं बढ़ा है

2. मनुष्य अपने विकास के लिए क्या करता है?
- (A) प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करता है
- (B) अधिक मेहनत करता है
- (C) प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करता है
- (D) विविध संसाधन जुटाता है

3. मानव की कुशलता, लगन और समर्पण पर क्या निर्भर करता है?
- (A) प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण
- (B) प्राकृतिक संसाधनों का संवर्धन
- (C) प्राकृतिक संसाधनों की मितव्ययता
- (D) उपर्युक्त सभी

4. गाँधीजी ने किस पर जोर दिया?
- (A) औद्योगिक विकास पर
- (B) तकनीकी विकास पर
- (C) प्राकृतिक संरक्षण पर
- (D) मानव की आत्मनिर्भरता पर

5. गद्यांश के अनुसार कौन–सा विकास का ध्येय ***नहीं*** है?
- (A) नैतिक स्तर को ऊँचा उठाना
- (B) भौतिक स्तर को ऊँचा उठाना
- (C) सामाजिक स्तर को ऊँचा उठाना
- (D) आध्यात्मिक स्तर को ऊँचा उठाना

6. गद्यांश के अनुसार कहा जा सकता है कि–
- (A) मनुष्य को प्रकृति के अमूल्य उपहारों का प्रयोग सोच–समझकर करना चाहिए
- (B) प्रकृति ने मनुष्य को बहुत कम उपहार दिए हैं
- (C) प्रकृति ने मनुष्य को उपहारस्वरूप केवल वन और जल दिया है
- (D) मनुष्य प्राकृतिक उपहारों का अधिक संरक्षण करता है

7. किस शब्द में 'इक' प्रत्यय का प्रयोग ***नहीं*** हो सकता?
- (A) अर्थ (B) नीति
- (C) कला (D) अध्यात्म

8. निम्नलिखित में से कौन–सा संज्ञा शब्द ***नहीं*** है?
- (A) भारत (B) मानव
- (C) गाँधीजी (D) दिखाई

निर्देश (प्रश्न संख्या 9 से 15 तक)

गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों में **सबसे उचित** विकल्प को चुनिए–

हैरानी की बात यह है कि मेरी दलील मित्रों के हलक से नहीं उतरती थी, तब मैं उनसे कहता था–'साहित्य की हर विधा को, हर तरह की लेखनी को मैं बतौर चुनौती स्वीकार करता हूँ। आम आदमी से लेकर खास आदमी तक के हृदय को छूना कोई मामूली बात नहीं होती। यह तो आप भी स्वीकार करेंगे, क्योंकि यह काम सिर्फ रामायण और महाभारत जैसे ग्रंथ ही कर पाते हैं।' मेरी यह दलील रामबाण सिद्ध होती थी, वे सारे मित्र सोच में पड़ जाते थे, क्योंकि वे केवल किसी भी एक वर्ग के लिए लिख पाते थे–'मास' के लिए या 'क्लास' के लिए। उनके दायरे सीमित थे, लेकिन मैं दायरों के बाहर का शख्स हूँ। शायद इसी कारण मैं आपसे खुलकर अंतरंग बातें भी कर सकता हूँ। बात कहानी की रचना–प्रक्रिया से आरम्भ की थी। तब मैं 'ओ. हेनरी' की एक कहानी पढ़ता था और भीतर दो नई कहानियों के बीज अपने आप पड़ जाते थे। न कोई मशक्कत, न कोई गहरी सोच। यह प्रोसेस मेरे लिए उतना ही आसान था जितना कि कैरम का खेल। फिर भी ये रचनाएँ कहानी के शिल्प में कहानी विधा के अन्तर्गत लिखी गई पुख्ता किस्सागोई हैं। पर यह किस्सागोई जिंदगी से अलग नहीं हो सकती।

9. लेखक ने किस्सागोई को जिंदगी से अलग नहीं माना, क्योंकि–
- (A) हर लेखक अपनी जिंदगी की लम्बी कहानी लिखता है
- (B) हम अपने आस–पास जो देखते, महसूस करते हैं, उसे शब्द देते हैं
- (C) कहानियों में लोगों के जीवन की सच्ची घटनाएँ होती हैं
- (D) किस्सागोई का अर्थ ही है जिंदगी की कहानियाँ

10. 'दलील का हलक से नहीं उतरने' का आशय है–
- (A) दलील को स्वीकार न कर पाना
- (B) दलील को दूसरों को न बताना
- (C) दलील को हलके से न लेना
- (D) दलील के विपरीत दूसरी दलील रखना

11. लेखक के लेखन की क्या खास बात है?
- (A) वे केवल किस्सागोई में निपुण हैं
- (B) वे केवल जिंदगी की कहानी लिखते हैं
- (C) उनका लेखन सभी तरह के लोगों के दिल को छूता है
- (D) उनका लेखन खास लोगों के ही दिल को छूता है

12. गद्यांश के आधार पर कहा जा सकता है कि–
- (A) लेखक को 'ओ. हेनरी' की ही किताबें पढ़ना पसंद था
- (B) लेखक के लेखन का दायरा थोड़ा बड़ा है
- (C) लेखक बेहद कल्पनाशील और सृजनशील हैं
- (D) लेखक दूसरों की कहानियों से जल्दी प्रभावित हो जाते हैं

13. लेखक को कहानी लिखने में–

(A) बहुत मेहनत करनी पड़ती है

(B) मेहनत नहीं करनी पड़ती है

(C) बहुत सोचना–विचारना पड़ता है

(D) कहानी के शिल्प पर बहुत मेहनत करनी पड़ती है

14. 'क्लास' का अर्थ है–

(A) कक्षा (B) आम लोग

(C) खास वर्ग (D) मुनाफा

15. 'पुख्ता' का अर्थ है–

(A) ठोस (B) आसान

(C) कठिन (D) नई

निर्देश (प्रश्न संख्या 16 से 23 तक)

नीचे दिए गए गद्यांश को पढ़कर सबसे उचित विकल्प का चयन कीजिए :

जिनमें सहिष्णुता की भावना होती है, केवल ऐसे लोग अध्यापक होने योग्य होते हैं। जिनका बच्चों से प्यार भरा लगाव होता है, उनमें धैर्य स्वभावतः आ जाता है। अध्यापकों को जिस अंतर्निहित गंभीर समस्या से जूझना पड़ता है, वह यह है कि उन्हें जिनको देखना है वे शक्ति और प्रभुत्ता में उनकी बराबरी के नहीं होते। अध्यापक के लिए एकदम तुच्छ या बिना किसी कारण के या फिर वास्तविकता की बजाए किसी काल्पनिक कारण के चलते अपने छात्रों के सामने धैर्य खो देना, उनकी खिल्ली उड़ाना, उन्हें अपमानित या दंडित करना एकदम आसान और संभव है। जो एक निर्बल अधीन राष्ट्र पर शासन करते हैं, उनमें न चाहते हुए भी गलत काम करने की प्रवृत्ति पाई जाती है।

उसी तरह ऐसे अध्यापक होते हैं जो बच्चों के ऊपर अपने प्रभुत्व का शिकार हो जाते हैं। जो शासन के अयोग्य होते हैं, उन्हें केवल कमज़ोर लोगों पर अन्याय करते हुए कोई अपराध बोध नहीं होता, बल्कि ऐसा करने में उन्हें एक खास तरह का मजा मिलता है। बच्चे अपनी माँ की गोद में कमजोर अहसाय और अज्ञानी होते हैं। माता के हृदय में स्थित प्रचुर प्यार ही उनकी रक्षा की एकमात्र गारंटी होता है इसके बावजूद हमारे घरों में इस बात के उदाहरण कम नहीं कि कैसे हमारे स्वाभाविक प्यार पर धीरज का अभाव और उद्धत प्राधिकार विजय प्राप्त कर लेते हैं और बच्चों को अनुचित कारणों से दंडित होना पड़ता है।

16. किस तरह के लोग कमज़ोर लोगों पर अन्याय करते हैं?

(A) जो निर्बल होते हैं।

(B) जो अध्यापक होते हैं।

(C) जिनमें शासन करने की योग्यता नहीं होती।

(D) जो दण्ड देने में कुशल हैं।

17. इस गद्यांश का मुख्य भाव यह है कि–

(A) अध्यापक में धैर्य, ममत्व, सहिष्णुता और तार्किकता होनी चाहिए।

(B) अध्यापक को सदा निर्लिप्त भाव से पेश आना चाहिए।

(C) केवल उचित कारणों पर ही अध्यापक बच्चों को अवश्य दंड दें।

(D) अध्यापक में अपराध–बोध होना चाहिए।

18. बच्चे अपने माँ की गोद में ही स्वयं को सुरक्षित समझते हैं, क्योंकि

(A) माँ सदैव उनकी गलतियाँ माफ़ करती रहती है।

(B) केवल माँ ही उनका लालन–पालन करती रहती है।

(C) माँ के पास सुरक्षा की शक्ति परिपूर्ण है।

(D) माँ के हृदय में स्नेह होता है।

19. कौन–सा शब्द–समूह शेष शब्द–समूहों से भिन्न है?

(A) अयोग्य, अज्ञानी, अभाव

(B) अन्याय, अपराध, अपमानित

(C) अभाव, अपमानित, अधीन

(D) असहाय, अपराध, अनुचित

20. 'इत' प्रत्यय से बनने वाला शब्द है–

(A) नीत (B) दंडित

(C) अनुचित (D) कृत

21. अध्यापक के लिए उचित विशेषण शब्द है–

(A) धैर्य (B) सहिष्णु

(C) ज्ञान (D) योग्यता

22. लेखक के अनुसार अध्यापक बनने योग्य वही होते हैं जो–

(A) अत्यंत ज्ञानवान् होते हैं।

(B) उच्च डिग्री प्राप्त होते हैं।

(C) धैर्यवान् होते हैं।

(D) बच्चों से बहुत ज़्यादा शक्तिशाली होते हैं।

23. विद्यालयों में बच्चों को बिना किसी कारण दंडित करना–

(A) असंभव है।

(B) अध्यापक की धैर्यहीनता का चिह्न है।

(C) अध्यापकीय प्रवृत्ति है।

(D) दुर्लभ है।

निर्देश (प्रश्न संख्या 24 से 30 तक)

नीचे दिए गए गद्यांश को पढ़कर सबसे उचित विकल्प का चयन कीजिए :

यदि हम सुनने के साथ–साथ सुनाते भी हैं, अर्थात् वार्तालाप भी करते हैं तो बातें याद रहने की संभावना काफी अधिक रहती है। इसलिए भाषण तो हमें याद नहीं रहते, परंतु वार्तालाप हम भूलते नहीं हैं। सुनने के लिए पुराना भूलना भी ज़रूरी है। बुद्धि के पास वह शक्ति है जिससे वह सुनी हुई बातों का सार निकालकर बाकी विस्तार को भुला देती है, तभी हम नई बातें सुन सकते हैं। दो कान इसलिए हैं कि सुनने को इतना कुछ है कि एक कम पड़ता है। प्रकृति ने हमें मुख एक ही दिया है इसलिए कि सुनो ज़्यादा, बोलो कम। सामने वाले की बात ध्यान से सुनना एक प्रकार की गतिविधि है।

सुनने की कला आज दुर्लभ होती जा रही है। शोध बताते हैं कि हम जितना सुनते हैं, उसका मात्र बीस प्रतिशत ही हमें याद रहता है। सुनी बातों में से तीन दिन बाद केवल दस प्रतिशत ही याद रहता है। इसके अलावा सुनने और समझने के बीच हमारा पूर्णाग्रह, पूर्ण जानकारी, पूर्व अर्जित ज्ञान भी प्रभाव डालता है।

24. भाषण और वार्तालाप में क्या अंतर है?

(A) भाषण में हम बोलते हैं, वार्तालाप में सुनते हैं।

(B) भाषण रोचक नहीं होता, वार्तालाप रोचक होता है।

(C) भाषण में केवल बोलना होता है, वार्तालाप में सुनना और बोलना दोनों होते हैं।

(D) भाषण लंबा होता है, वार्तालाप संक्षिप्त होता है।

25. लेखक के अनुसार क्या महत्त्वपूर्ण है?

(A) सुनना

(B) ध्यान से सुनना

(C) ध्यान से सुनकर सारा तत्त्व ग्रहण करना

(D) सुनकर याद रखना

26. सुनकर समझने को कौन–सा तत्त्व प्रभावित करता है?

(A) पूर्वाग्रह

(B) पूर्व जानकरी

(C) पूर्व अर्जित ज्ञान

(D) ये सभी

27. 'सुनने के लिए पुराना भूलना भी ज़रूरी है।' वाक्य है–

(A) प्रश्नवाचक (B) विधानवाचक

(C) अनिश्चयात्मक (D) आश्चर्यबोधक

28. यह जड़ी–बूटी तो आज बड़ी ..... है। वाक्य के रिक्त स्थान पर शब्द आएगा–

(A) दुर्लभ (B) दुर्गम

(C) दुस्तर (D) दुराव

29. 'पूर्वाग्रह' का संधि–विच्छेद है

(A) पूर्व + ग्रह (B) पूर्वा + ग्रह

(C) पूर्व + आग्रह (D) पूरव + आ + ग्रह

30. इस गद्यांश में बुद्धि की कौन–सी महत्त्वपूर्ण शक्ति का उल्लेख है?

(A) बुद्धि सुनकर याद कर लेती है।

(B) बुद्धि सुनकर सार ग्रहण करती है।

(C) बुद्धि विस्तार को तुरंत भूल जाती है।
(D) बुद्धि सदैव नई बातें सुनती है।

निर्देश (प्रश्न संख्या 31 से 37 तक)

गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों में **सबसे उचित** विकल्प चुनिए।

विद्याभ्यासी पुरुष को साथियों का अभाव कभी नहीं रहता। उसकी कोठरी में सदा ऐसे लोगों का वास रहता है, जो अमर हैं। वे उसके प्रति सहानुभूति प्रकट करने और उसे समझाने के लिए सदा प्रस्तुत रहते हैं। कवि, दार्शनिक और विद्वान् जिन्होंने प्रकृति के रहस्यों का उद्‌घाटन किया है और बड़े–बड़े महात्मा, जिन्होंने आत्मा के गूढ़ रहस्यों की थाह लगा ली है, सदा उसकी बातें सुनने और उसकी शंकाओं का समाधान करने के लिए उद्यत रहते हैं।

बिना किसी उद्देश्य के सरसरी तौर पर पुस्तकों के पन्ने उलटते जाना अध्ययन नहीं है। लिखी हुई बातों को विचारपूर्वक पूर्णरूप से हृदय से ग्रहण करने का नाम अध्ययन है। प्रत्येक स्त्री–पुरुष को अपने पढ़ने का उद्देश्य स्थित कर लेना चाहिए। इसके लिए सबसे मुख्य बात यह है कि पढ़ना नियमपूर्वक हो अर्थात इसके लिए नित्य का समय उपयुक्त होता है।

(अध्ययन – निबंध, रामचंद्र शुल्क)

31. अध्ययन क्या है?
(A) कुछ भी पढ़ लेना
(B) बिना कारण के पुस्तकों के पन्ने पलटना
(C) नियमपूर्वक पढ़ना
(D) लिखी हुई बातों को विचारपूर्वक हृदय से ग्रहण करना

32. विद्या का अभ्यास करने वाले व्यक्तियों को साथियों की कमी महसूस नहीं होती है, क्योंकि
(A) उनके अनेक साथी होते हैं
(B) उन्हें साथी की आवश्यकता नहीं होती है
(C) उन्हें मित्र बनाना अच्छा नहीं लगता है
(D) पुस्तकें उनकी साथी होती हैं

33. विद्याभ्यासी पुरुष के पास किसका वास रहता है?
(A) पुस्तकों का
(B) गुरुजनों का
(C) सम्बन्धियों का
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

34. अध्ययन के लिए किस नियम का दृढ़ता से पालन होना चाहिए?
(A) अध्ययन केवल प्रातःकाल किया जाए
(B) अध्ययन के लिए नित्य एक समय निश्चित किया जाए
(C) अध्ययन कम–से–कम चार घंटे अवश्य किया जाए
(D) अध्ययन स्नान करके ही करना चाहिए

35. कौन–सा शब्द 'प्र' उपसर्ग लगाकर **नहीं** बना है?
(A) प्रगति (B) प्रयुक्त
(C) प्रसिद्ध (D) प्रश्न

36. 'विद्वान्' शब्द का विलोम है :
(A) विद्वता (B) विदुषी
(C) मूर्ख (D) मंदबुद्धि

37. 'स्त्री–पुरुष' में ———— समास है।
(A) तत्पुरुष (B) द्वंद्व
(C) द्विगु (D) कर्मधारय

निर्देश (प्रश्न संख्या 38 से 45 तक)

गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों में **सबसे उचित** विकल्प चुनिए।

एक संस्कृत व्यक्ति किसी नयी चीज की खोज करता है, किन्तु उसकी संतान को वह अपने पूर्वज से अनायास प्राप्त हो जाती है। जिस व्यक्ति की बुद्धि ने अथवा उसके विवेक ने किसी भी नए तथ्य का दर्शन किया, वह व्यक्ति ही वास्तविक संस्कृत व्यक्ति है और उसकी संतान जिसे अपने पूर्वज से वह वस्तु अनायास ही प्राप्त हो गई है, वह अपने पूर्वज की भाँति सभ्य भले ही बन जाए, संस्कृत नहीं कहला सकता। एक आधुनिक उदाहरण लें। न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत का आविष्कार किया। वह संस्कृत मानव था। आज के युग का भौतिक विज्ञान का विद्यार्थी न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण से तो परिचित है ही, लेकिन उसके साथ उसे और भी अनेक बातों का ज्ञान प्राप्त है, जिनसे शायद न्यूटन अपरिचित ही रहा। ऐसा होने पर भी हम आज के भौतिक विज्ञान के विद्यार्थी को न्यूटन की अपेक्षा अधिक सभ्य भले ही कह सकें, पर न्यूटन जितना संस्कृत नहीं कह सकते।

38. 'संस्कृत' का अर्थ है :
(A) भाषा का नाम
(B) सभ्य
(C) आविष्कार करने वाला
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

39. वास्तविक संस्कृत व्यक्ति वह है जो
(A) नए आविष्कार करे
(B) नए आविष्कारों का प्रयोग करता है
(C) संस्कृत भाषा जानता है
(D) तथ्यों को याद करता है

40. सभ्य व्यक्ति वह है जो :
(A) जो आविष्कारों का ज्ञाता हो
(B) अच्छे कपड़े पहनता हो
(C) शिक्षित हो
(D) नए आविष्कार करता हो

41. 'विद्यार्थी' शब्द का संधि–विच्छेद है :
(A) वि + द्यार्थी (B) विद्या + र्थी
(C) विद्या + थी (D) विद्या + अर्थी

42. 'न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण बल की खोज की'। वाक्य को कर्मवाच्य में बदलिए।
(A) न्यूटन के द्वारा गुरुत्वाकर्षण बल की खोज की गई
(B) गुरुत्वाकर्षण बल न्यूटन ने खोजा
(C) न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण बल की खोज की
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

43. 'पूर्वज' का विलोम शब्द है :
(A) अग्रणी (B) पूर्वा
(C) पूर्व (D) अग्रज

44. 'अनायास' का अर्थ है :
(A) कठिनाई से (B) सरलता से
(C) परिश्रम से (D) बिना प्रयास के

45. 'आधुनिक' का समानार्थी शब्द है :
(A) प्रवीण (B) प्राचीन
(C) नवीन (D) शाश्वत

निर्देश (प्रश्न संख्या 46 से 52 तक)

गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों में **सबसे उचित** विकल्प चुनिए।

जिन्होंने भी बच्चों को पढ़ाने की कोशिश की है— चाहे वे माता–पिता हों या शिक्षक— उनके खाते में सफलता के साथ–साथ असफलता और निराशा भी दर्ज होती है। ऐसे में एक सवाल उठता है कि आखिर इतना मुश्किल क्यों है पढ़ाना?

एक मुख्य समस्या तो यह है कि पढ़ाने वालों का विश्वास बच्चों की क्षमताओं या योग्यताओं पर काफ़ी कम होता है। यह बात मैं यूँ ही नहीं कह रही बल्कि एक अभिभावक, एक शिक्षक और एक शिक्षक प्रशिक्षक होने के आधार पर कह रही हूँ।

कई बार मैं उस पाठ को लेकर बच्चों (दूसरी, तीसरी या फिर पाँचवीं के) के सामने खड़ी होती हूँ जो मुझे उन्हें पढ़ाना है। मेरे पास कुछ जानकारी है जो मैं बच्चों को देना चाहती हूँ। लेकिन मैं यह जानकारी उन्हें क्यूँ देना चाहती हूँ? क्योंकि मुझे लगता है कि वे इसके बारे में नहीं जानते; इसे जानने में उन्हें मज़ा आएगा; यह दुनिया के बारे में उनके नज़रिए को विस्तृत करने में मदद करेगी; यह उन्हें बेहतर इंसान बनने में मदद करेगी, भले ही थोड़ा–सा।

लेकिन कभी–कभार पढ़ाना शुरू करने से पहले ही मेरे दिमाग़ में यह खयाल बुदबुदाना शुरू कर देता है कि शायद उन्हें वह पहले से ही मालूम हो जो मैं उन्हें बताना चाहती हूँ। तो उन्हें कुछ बताने की बजाए मैं उनके सामने सवाल रख देती हूँ।

46. लेखिका को कौन–सा ख्याल परेशान करता है?
(A) जो हम पढ़ाने जा रहे हैं कहीं बच्चे उसके विषय में पहले से ही तो नहीं जानते
(B) बच्चों को भला इंसान कैसे बनाया जाए
(C) बच्चों को सही तरीक़े से कैसे पढ़ाया जाए
(D) बच्चों को रोचक तरीके से कैसे पढ़ाया जाए

47. अनुच्छेद में किस मुख्य समस्या की बात की गई है?
(A) पढ़ाना अपने आप में बहुत मुश्किल काम है
(B) छोटी कक्षाओं को पढ़ाना
(C) शिक्षक अच्छी तरह से पढ़ाते नहीं हैं
(D) बच्चों की योग्यता में विश्वास नहीं किया जाता

48. बच्चों को पढ़ाने से पहले स्वयं से 'क्यों' वाला सवाल पूछना क्यों जरूरी है?
(A) ताकि हम बच्चों से भी 'क्यों' वाले सवाल पूछ सकें
(B) यह पढ़ाने के उद्देश्य और तरीके निर्धारित करने में मदद करता है
(C) इससे पाठ्यक्रम जल्दी खत्म हो जाता है
(D) इससे न पढ़ाने के लिए तार्किक आधार मिल जाता है

49. अनुच्छेद में यह संकेत किया गया है कि–
(A) बच्चे खेल–खेल में जल्दी सीखते हैं
(B) शिक्षक, अभिभावक पढ़ाना नहीं जानते
(C) बच्चे सारे सवालों के जवाब दे सकते हैं
(D) बच्चे बहुत कुछ जानते हैं

50. किस शब्द में उपसर्ग और प्रत्यय – दोनों का प्रयोग हुआ है?
(A) योग्यताओं (B) क्षमताओं
(C) असफलता (D) नम्रता

51. 'आखिर इतना मुश्किल क्यों है पढ़ाना?' वाक्य को यदि हिंदी की सामान्य वाक्य–रचना के अनुसार लिखा जाए तो वाक्य होगा–
(A) आखिर पढ़ाना इतना मुश्किल क्यों है?
(B) आखिर पढ़ाना मुश्किल क्यों है इतना?
(C) इतना मुश्किल क्यों है पढ़ाना आखिर?
(D) पढ़ाना इतना मुश्किल क्यों है आखिर?

52. 'इसे जानने में उन्हें मजा आएगा।' वाक्य में रेखांकित सर्वनामों का प्रयोग किनके लिए हुआ है?
(A) 'पाठ', बच्चों के लिए
(B) 'पाठ', 'शिक्षकों' के लिए
(C) 'जानकारी', अभिभावक के लिए
(D) 'जानकारी', 'बच्चों' के लिए

निर्देश (प्रश्न संख्या 53 से 60 तक)

गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों में **सबसे उचित** विकल्प चुनिए।

बच्चे और खिलौने का संबंध सदैव से ही रहा है। हम यह भी कह सकते हैं कि खिलौनों के बिना हम बच्चों की दुनिया की कल्पना भी नहीं कर सकते। चाहे हम बच्चों को खिलौने खरीदकर दें या न दें बच्चे अपने लिए किसी–न–किसी चीज़ (चाहे वे टूटे–फूटे डिब्बे हों या इसी तरह की अन्य सामग्री) को खिलौने की शक्ल दे ही देते हैं।

बच्चों को एकदम छुटपन से ही मुँह से या खिलौनों से अजीबो–ग़रीब आवाजें निकाल कर हम बहलाते हैं और बच्चे बहल भी जाते हैं। यही बच्चे जैसे–जैसे बड़े होते जाते हैं, खुद भी चीजों को जोड़–तोड़कर खिलौने बनाने में अपनी रचनात्मक ऊर्जा का खूब इस्तेमाल करते हैं। इसलिए भी यह जरूरी हो जाता है कि बच्चों की इस रचनात्मक ऊर्जा को उभारने के लिए उन्हें भरपूर मौके दिए जाएँ।

पहले हम गौर करें कि बच्चे अपने रोज़मर्रा के जीवन में कौन–कौन–सी चीजें बनाते हैं? इसके लिए अगर हम अपने अतीत में गोता लगाएँ और अपने बचपन की दुनिया में झांकें तो तरह–तरह के खिलौनों का ख़ज़ाना हमारी स्मृति में से निकलकर आता है – ढेर सारी माचिस की खाली डिब्बियों को बिल्कुल सरल तरीक़े से जोड़कर बनती रेलगाड़ी, कागज़ से बनाई जाने वाली ढेरों चीजें जैसे नाव, हवाई जहाज़, तितली, नाग आदि क्या–क्या नहीं बनाते थे इन सब से।

53. अनुच्छेद में इस बात की ओर संकेत किया गया है कि–
(A) पुराने जमाने में बच्चे केवल कागज़ की नाव से ही खेलते थे
(B) बच्चों को टूटी–फूटी चीजें ही देनी चाहिए
(C) बच्चों को खिलौने खरीदकर देने की आवश्यकता नहीं है
(D) बच्चे अपने आस–पास की चीज़ों को खिलौने बना लेते हैं

54. जैसे–जैसे बच्चे बड़े होते हैं–
(A) खिलौने बनाने में अपनी रचनात्मक ऊर्जा का प्रयोग करने लगते हैं
(B) चीज़ों को तोड़कर खिलौने बनाने लगते हैं
(C) उन्हें टूटे–फूटे डिब्बे पसंद नहीं आते
(D) उनका खिलौनों के प्रति आकर्षण समाप्त होने लगता है

55. खिलौने बच्चों की ..... को बढ़ाते हैं।
(A) सामाजिकता (B) ऊर्जा
(C) भावनाओं (D) सृजनात्मकता

56. निम्नलिखित में से कौन–सी चीज़ बच्चे के लिए दूरबीन बन सकती है?
(A) माचिस
(B) पेंसिल
(C) चूड़ी
(D) टूथपेस्ट का खाली डिब्बा

57. बच्चों की रचनात्मक ऊर्जा को उभारने के लिए–
(A) सारा टूटा–फूटा सामान दे देना चाहिए
(B) उन्हें खिलौने बनाने का औपचारिक प्रशिक्षण देना चाहिए
(C) घर का सारा सामान उन्हें दे देना चाहिए
(D) अनुपयोगी परंतु सुरक्षित सामान दे सकते हैं

58. 'अतीत में गोता लगाने' का अर्थ है–
(A) अतीत में इस तरह के व्यवहार की खोज करना
(B) अतीत के बारे में जानना
(C) अतीत की झील में डुबकी लगाना
(D) अतीत की स्मृतियों को बनाए रखना

59. 'बचपन' शब्द ..... शब्द है।
(A) विशेषण
(B) भाववाचक संज्ञा
(C) व्यक्तिवाचक संज्ञा
(D) जातिवाचक संज्ञा

60. बच्चे और खिलौने का ..... सदैव से ही रहा है।
(A) तालमेल (B) रिश्ता
(C) सरोकार (D) दोस्तीपना

निर्देश (प्रश्न संख्या 61 से 69 तक)

गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों में **सबसे उचित** विकल्प चुनिए।

कमजोर विचारक तत्काल उत्तर की ओर दौड़ता है। पर सोचने वाले बच्चे समय लेते हैं। सवाल पर विचार करते हैं। क्या यह अंतर केवल सोचने के कौशल के होने या न होने के कारण है? एक ऐसा कौशल जो केवल एक तकनीक है और जिसे, अगर भाग्य ने साथ दिया तो, हम बुद्धि से बच्चों को सिखा सकते हैं। क्या बच्चों को इस कौशल में प्रशिक्षित कर सकते हैं? मुझे भय है कि ऐसा नहीं है। अच्छा विचारक सोचने में समय इसलिए लगा सकता है, क्योंकि वह अनिश्चय को सह सकता है। वह इस बात को भी झेल सकता है कि वह कोई चीज नहीं जानता। पर कमजोर विचारक को कुछ न जानने की कल्पना ही असहनीय लगती है। क्या इस पूरे विश्लेषण से हम यह नहीं पाते कि असल में इन बच्चों में 'गलत' होने का भय बैठा होता है। बेशक यही भय है जो मोनिका जैसे बच्चों पर भयानक दबाव डालता है। ठीक ऐसे ही दबाव हैल भी महसूस करता है। शायद मैं भी। मोनिका अकेली नहीं है जो सही होना चाहती है और गलत होने से डरती है, पर यहाँ शायद एक दूसरी असुरक्षा की भावना काम करती होती है। यह असुरक्षा की भावना पैदा होती है सवाल के लिए कोई भी जवाब नहीं होने से।

(स्रोत – बच्चे असफल कैसे होते हैं – जॉन हॉल्ट, एकलव्य)

61. कमजोर विचारक :
(A) कमजोर होता है
(B) जल्दी उत्तर देना चाहता है
(C) देर से उत्तर देता है
(D) हमेशा अज्ञानी होता है

62. अच्छे विचारक वे हैं जो :
(A) जिनकी बुद्धि बहुत तेज होती है
(B) सोच–विचार कर जवाब देते हैं
(C) हमेशा सही जवाब देते हैं
(D) उलझे से रहते हैं

63. मोनिका पर किस बात का दबाव रहता है?
(A) गलत होने का
(B) बुद्धि का प्रशिक्षण न होने का
(C) असुरक्षित होने का
(D) अच्छा विचारक न कहलाए जाने का

64. लेखक के अनुसार क्या जरूरी है?
(A) देर से जवाब देना
(B) अच्छी तरह चिंतन करने के बाद जवाब देना
(C) असुरक्षा न होना
(D) सही जवाब

65. कमजोर विचारक को क्या असहनीय लगता है?
(A) प्रशिक्षण
(B) सोचने का कौशल
(C) उत्तर न जानना
(D) विचार

66. 'प्रशिक्षित' शब्द में उपसर्ग और प्रत्यय हैं–
(A) प्र, क्षित (B) प्र, इत
(C) प्र, त (D) प्र, ईत

67. 'वह गलत होने से·····डरती है।' वाक्य में उचित क्रिया–विशेषण शब्द आएगा।
(A) धीरे–धीरे (B) बहुत
(C) तेज (D) अचानक

68. 'शायद मैं भी।' वाक्य है–
(A) विधानवाचक (B) संदेहवाचक
(C) संकेतवाचक (D) इच्छार्थक

69. 'तत्काल' शब्द का संधि–विच्छेद है–
(A) ततः + काल (B) तत् + काल
(C) तत + काल (D) त + अकाल

निर्देश (प्रश्न संख्या 70 से 74 तक)

गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों में **सबसे उचित** विकल्प चुनिए।

अभी भी इस बारे में बहुत कम जानकारी है कि आधुनिक कही जाने वाली आज की दुनिया आखिर कैसे संचालित हो रही है ? हालाँकि हरेक देश के पास इसकी कोई–न–कोई आधिकारिक व्याख्या जरूर है कि वे कैसे और किन संदर्भों में आधुनिक हो रहे हैं ? लेकिन इस बारे में मेरा कहना है कि आधुनिकता को समझने के लिए जरूरी है कि आप अपने अंदर झाँक सकें। इससे आपको पता चलेगा कि आधुनिकता की राह पर बढ़ने के लिए समाज को किन चीजों की जरूरत होती है। बेशक, आज हर कोई मॉडर्न होना चाहता है लेकिन आधुनिकता की राह उतनी स्पष्ट नहीं है, जितनी वह मानी जाती है। इसीलिए मैं यह बात बार–बार कहता हूँ कि पश्चिमी समाज कभी–कभी आधुनिक नहीं रहे। पश्चिम के पास एकमात्र उल्लेखनीय चीज है साइंस, जिसमें उसने तरक्की की लेकिन जिन साइंटिस्टों के बलबूते वहाँ आधुनिकता का परचम लहराया जाता है, खुद वे साइंटिस्ट अपने कल्चर में उलझे रहते हैं। उनका यह कल्चर आधुनिकता का झंडाबरदार नहीं है। यह भी नहीं कहा जा सकता है कि उनके कल्चर पर दूसरी संस्कृतियों और लोकाचारों का असर नहीं हुआ होगा। अगर यह असर हुआ है तो सिर्फ वही आधुनिक क्यों कहा जाए?

(ब्रूनो लातूर – फ्रेंच सोशल साइंटिस्ट)

70. लेखक ने किस बात की अस्पष्टता की ओर संकेत किया है?
(A) तरक्की का अर्थ
(B) आधुनिकता की सही व्याख्या
(C) आधुनिक बनने के मानदंडों में वैविध्य
(D) पश्चिम देश की संस्कृति

71. हर देश ने :
(A) अपने द्वारा निर्धारित मानदंडों को सही नहीं कहा है
(B) अपने–आप को आधुनिक साबित किया है
(C) आधुनिक होने के अपने अर्थ और मानदंड तय किए हैं
(D) आधुनिक होने की समान व्याख्या की है

72. लेखक के अनुसार आधुनिक होने के लिए क्या जरूरी है?
(A) साइंस में तरक्की करना
(B) अपनी संस्कृति का संरक्षण
(C) आधुनिकता की निश्चित परिभाषा
(D) स्वयं का विश्लेषण

73. 'पश्चिमी समाज कभी–कभी आधुनिक नहीं रहे।' लेखक ने ऐसा क्यों कहा होगा?
(A) पश्चिमी समाज यह नहीं जानता कि आधुनिक का अर्थ क्या है और कौन–सी चीजें समाज को आधुनिक बनाती हैं
(B) पश्चिमी समाज आधुनिक नहीं है
(C) पश्चिमी समाज दूसरे कल्चर का असर ग्रहण कर रहा है
(D) पश्चिमी समाज के पास साइंस है

74. लेखक इस गद्यांश में क्या कहना चाहता है?
(A) विज्ञान में उन्नति करना ही आधुनिक होने का मानदंड नहीं है।
(B) आधुनिक होने के लिए विज्ञान में तरक्की करना जरूरी है।
(C) पश्चिमी समाज आधुनिक हैं।
(D) वैज्ञानिकों को केवल अपनी संस्कृति का ज्ञान है।

अपठित पद्यांश

निर्देश (प्रश्न संख्या 1 से 96 तक)

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सबसे उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनिये।

वह आता–
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता।
पेट–पीठ दोनों मिलकर हैं एक,
चल रहा लकुटिया टेक,
मुट्ठी–भर दाने को–भूख मिटाने को
मुँह फटी पुरानी झोली को फैलाता–
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता।

1. 'कलेजे को दो टूक करना' का आशय है–
(A) मन को कष्ट पहुँचाना।
(B) दिल की चीर–फाड़ करना।
(C) कठिनाई पैदा करना
(D) टुकड़े–टुकड़े करना।

2. भिखारी अपनी झोली क्यों फैलाता है ?
(A) झोली में कुछ छिपाना चाहता है।
(B) मुट्ठी–भर अनाज दिखाना चाहता है।
(C) अपनी गरीबी के बारे में बताना चाहता है।
(D) भूख मिटाने के लिए कुछ अन्न चाहता है।

3. 'मुँह' शब्द में प्रयुक्त चंद्रबिंदु है–
(A) अनुनासिक (B) नासिक्य
(C) शिरोरेखा (D) अनुस्वार

4. काव्यांश से हमारे मन में उठने वाला मुख्य भाव है–
(A) हास्य (B) करुणा
(C) वीरता (D) शृंगार

5. 'वह आता' में 'वह' सर्वनाम किसका द्योतक हो सकता है ?
(A) अतिथि (B) भिक्षुक
(C) विकलांग (D) गांधीजी

6. 'पेट–पीठ दोनों मिलकर हैं एक' इसका कारण क्या हो सकता है ?
(A) झुककर चलना।
(B) कुछ भी भोजन न करना ।
(C) भीख माँगने का नाटक करना ।
(D) सिकुड़कर बैठना।

निर्देश (प्रश्न संख्या 7 से 12 तक)

नीचे दिए गए पद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के सही/सबसे उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनिए।

माँ तुम्हारा ऋण बहुत है मैं अकिंचन
किंतु फिर भी कर रहा इतना निवेदन
थाल में लाऊँ सजाकर भाल जब भी
कर दया स्वीकार लेना वह समर्पण।
माँ मुझे बलिदान का वरदान दे दो
तोड़ता हूँ मोह का बंधन क्षमा दो
आज सीधे हाथ में तलवार दे दो

और बाएँ हाथ में ध्वज को थमा दो।
सुमन अर्पित चमन अर्पित
नीड़ का कण–कण समर्पित
चाहता हूँ, देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।

7. 'माँ' संबोधन किसके लिए है?
(A) मातृभूमि के लिए
(B) देवी दुर्गा के लिए
(C) जननी के लिए
(D) पृथ्वी के लिए

8. कवि निवेदन कर रहा है कि–
(A) उसके जीवनदान को स्वीकार किया जाए
(B) उस पर दया की जाए
(C) उसे ऋण चुकाने का अवसर मिले
(D) वह मूल्यवान थाल में माथा सजाकर लाए

9. 'नीड़ का कण–कण समर्पित' कथन में 'नीड़' का आशय है–
(A) झोपड़ी (B) महल
(C) तिनके (D) घर–परिवार

10. "चाहता हूँ, देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ"—कथन में 'कुछ और' से तात्पर्य है कि कुछ ऐसा दिया जाए जो–
(A) ब्याज चुकाने से बेहतर हो
(B) थाल में दी जाने वाली भेंट से अच्छा हो
(C) ऋण चुकाने से बढ़कर हो
(D) बलिदान से भी बढ़कर हो

11. 'अकिंचन' का अर्थ है–
(A) परमदुखी (B) अति निर्धन
(C) ऋणी (D) बेसहारा

12. 'बलिदान' शब्द से बना विशेषण है–
(A) आत्मबलि (B) बलिदानी
(C) प्रबल दानी (D) बलवान

निर्देश (प्रश्न संख्या 13 से 15 तक)

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही/सबसे उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनिए।

न अवरोध कोई, न बाधा कही है
न संदेह कोई, न व्यवधान कोई
बहुत दूर से हैं दिशाएँ बुलातीं
नहीं पथ–डगर आज अनजान कोई
दिशाएँ निमंत्रण मुझे दे रही हैं,
दिगंतर खुला सिर्फ मेरे लिए है।
नहीं कुछ यहाँ राह जो रोक पाए
न कोई यहाँ जो मुझे टोक पाए
अजानी हवा में उड़ा जा रहा हूँ
विजय गीत मेरा गगन मस्त गाए
हृदय में कहीं कह रहा बात कोई,
धरा और गगन सिर्फ तेरे लिए है।

13. कवि को कोई कह रहा है कि–
(A) बाधाओं से दूर रहना चाहिए
(B) धरती और आसमान उसके लिए है
(C) लक्ष्य अभी बहुत दूर है
(D) अजानी हवा में उड़ो

14. कविता में दो समानार्थी शब्द एक ही वाक्य में आए हैं। वह वाक्य कौन–सा है?
(A) धरा और गगन सिर्फ तेरे लिए हैं
(B) न अवरोध कोई, न बाधा कहीं है
(C) न संदेह कोई, न व्यवधान कोई
(D) अजानी हवा में उड़ा जा रहा हूँ

15. कवि को कौन निमंत्रण दे रहा है?
(A) दिशाएँ (B) हवा
(C) गगन (D) दिगंतर

निर्देश (प्रश्न संख्या 16 से 21 तक)

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के **सबसे उचित** उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए।

गरजते घन घनन–घन–घन,
नाचता है मोर–सा मन,
ऐसी पड़ी झर–झर झड़ी–
भीगा बदन बेसुध है मन।
आज वर्षा अजब आई!
बह रही है मस्त पुरवाई,
नदी है द्वार तक आई,
मेघों से लिपटकर सो गया सूरज–
ले रहे हैं खेत अँगड़ाई।
आज वर्षा गजब आई!

16. 'पुरवाई, से आशय है–
(A) पूर्व को बहने वाली नदी
(B) पूर्व की ओर बहने वाली पवन
(C) मदमस्त करने वाली हवा
(D) पूर्व से आने वाली वायु

17. 'बेसुध है मन' कहकर कवि बताना चाहता है कि मन–
(A) मस्त हो जाता है।
(B) गाने लगता है।
(C) झूमने लगता है।
(D) पानी से भीग जाता है।

18. खेत अँगड़ाइयाँ ले रहे हैं क्योंकि–
(A) सूर्य के सो जाने से उन्हें भी नींद आ रही है।
(B) सुबह हो गई, वे नींद से जाग रहे हैं।
(C) उन्हें बहुत आनंद आ रहा है।
(D) सूर्य दिखाई नहीं दे रहा है।

19. 'गरजते घन घनन–घन–घन' – में अलंकार है–
(A) अनुप्रास (B) रूपक
(C) श्लेष (D) उपमा

20. मन की उपमा किससे दी गई है?
(A) वर्षा से (B) मोर से
(C) सावन से (D) बादलों से

21. 'लिपटकर सो गया सूरज' का भाव है कि सूर्य–
(A) खो गया है। (B) थक गया है।
(C) छिप गया है। (D) नींद में है।

निर्देश (प्रश्न संख्या 22 से 27 तक)

दी गई कविता की पंक्तियाँ पढ़कर पूछे गए प्रश्नों में सबसे उचित उत्तर वाले विकल्प चुनिए–

चमकीली है सुबह आज की आसमान में
निश्चय कल की सुबह और चमकीली होगी
बेचैनी की बाँहों में कल फूल खिलेंगे
घुटन गमकती साँसों की आवाज सुनेगी।
कुण्ठाओं की टहनी छिन्न–भिन्न होगी फिर
आशा अपने हाथों से अब कुसुम चुनेगी,
चटकीली है आज चहकती हुई चाँदनी
कल चन्दा की किरण और चटकीली होगी खुल जाएँगे,
अब सबके दिल के दरवाजे आँखें अपनी आँखों को पहचान सकेंगी।

22. काव्यांश में 'चमकीली सुबह' का आशय है–
(A) अन्धकार समाप्ति के बाद आशाभरी सुबह
(B) सूर्य की किरणों से चमकती सुबह
(C) सफेद कोहरे से चमकती सुबह
(D) प्रातः काल का समय

23. कवि को विश्वास है कि–
(A) सुबह का समय सदा सुहाना होता है
(B) कल की सुबह आज से अच्छी होगी
(C) सुबह का सूर्य कष्ट दूर करता है
(D) आज की सुबह सबसे अच्छी होगी

24. 'कुण्ठाओं की टहनी छिन्न–भिन्न होगी' से तात्पर्य है–
(A) दुःख की अनुभूति खत्म होगी
(B) पुरानी डाल टूट जाएगी
(C) निराशा दूर होगी
(D) मन का दुःख दूर होगा

25. 'चाँदनी' का विशेषण है–
(A) चटकीली (B) तड़पती
(C) गमकती (D) महकती

26. 'दिल के दरवाजे खुल जाएँगे' का क्या अर्थ है ?
(A) आपस में बातें करेंगे
(B) दिलों में सबके प्रति मित्रता रहेगी
(C) कोई बात छिपी नहीं रहेगी
(D) हृदय से हृदय मिलेंगे

27. 'कुसुम' का पर्यायवाची शब्द नहीं है–
(A) कमल (B) प्रसून
(C) पुष्प (D) सुमन

निर्देश (प्रश्न संख्या 28 से 33 तक)

नीचे दी गई काव्य–पंक्तियों को पढ़कर **सबसे उचित** विकल्प का चयन कीजिए:

सदियों की ठंडी–बुझी राख सुगबुगा उठी,
मिट्टी सोने का ताज पहन इठलाती है;
दो राह, समय के रथ का घर्घर–नाद सुनो
सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।
जनता, हाँ, मिट्टी की अबोध मूरतें वही,

जाड़े–पाले की कसक सदा सहने वाली
जब अंग–अंग में लगे साँप हों चूस रहे,
तब भी न कभी मुँह खोल दर्द कहने वाली।

28. काव्य में किस जनता की ओर संकेत किया गया है?
(A) जिसे बोध है
(B) जिसे साँप काटते हैं
(C) जो खेतों–खलिहानों, कारखानों में काम करती है
(D) जो रथ चलाती है

29. ''समय के रथ का घर्घर–नाद सुनो'' पंक्ति का आशय है–
(A) अब समय बदल रहा है
(B) समय का रथ बढ़ा आ रहा है
(C) समय कोलाहल कर रहा है
(D) समय ने युद्ध–नाद बजा दिया है

30. ''सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।'' पंक्ति का भाव है–
(A) राजा के सिंहासन को खाली करना होगा
(B) जनता, राजा का सिंहासन हिला देगी
(C) सारी जनता अब सिंहासनों पर ही बैठेगी
(D) राजतंत्र के विरुद्ध लोकतंत्र का स्वागत

31. सामान्य जनता ने अब तक बहुत कष्ट सहे हैं–इस भाव को व्यक्त करने वाली पंक्ति है–
(A) जनता, हाँ, मिट्टी की अबोध मूरतें वही
(B) जाड़े–पाले की कसक सदा सहने वाली
(C) सदियों की ठंडी–बुझी राख सुगबुगा उठी
(D) मिट्टी सोने का ताज पहन इठलाती है

32. 'साँप' किसकी ओर संकेत करता है?
(A) विषैले साँपों की ओर
(B) ज़मीदारों की ओर
(C) शोषकों की ओर
(D) सूदखोरों की ओर

33. 'सुगबुगा उठना' का अर्थ है
(A) राख का जल उठना
(B) अफ़वाह फैलाना
(C) धीरे–धीरे कहना
(D) अपने हक़ के लिए प्रयत्नशील होना

निर्देश (प्रश्न संख्या 34 से 40 तक)

कविता की पंक्तियाँ पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों में **सबसे उचित** विकल्प चुनिए–

एक ही दीया, स्नेह से भरा,
प्रेम का प्रकाश, प्रेम से धरा,
झिलमिला हवा को तिलमिला रहा
ज्योति का निशान जो हिला रहा
मुस्करा रहा है अंधकार पर!
यह मजार है किसी शहीद का,
दर्शनीय था जो चाँद ईद का,
देश का सपूत था, गुमान था
सत्य का स्वरूप नौजवान था
जो चला किया सदा दुधार पर!

34. हवा क्यों तिलमिला रही है?
(A) दीये के चलने से
(B) दीये के निरन्तर जलने से
(C) दीये के स्नेह से
(D) अंधकार होने से

35. ईद का चाँद किसे कहा गया है?
(A) मज़ार को
(B) दर्शनीय–स्थल को
(C) शहीद को
(D) नौजवानों को

36. शहीद की कौन–सी विशेषता बताई गई है?
(A) वह सच्चा इंसान था
(B) वह तलवारबाजी में निपुण था
(C) ईद के दिन पैदा हुआ था
(D) उसे अपने ऊपर बहुत घमण्ड था

37. कविता में 'अंधकार' शब्द से आशय है–
(A) तम (B) रात्रि
(C) बुराइयाँ (D) चुनौतियाँ

38. 'दर्शनीय' शब्द में प्रत्यय है–
(A) ईय (B) नीय
(C) ई (D) य

39. 'हवा' का पर्यायवाची शब्द ***नहीं*** है–
(A) अनिल (B) मारुत
(C) समीर (D) अनल

40. "भाषा और चिन्तन में सम्बन्ध होता है।" यह कथन–
(A) पूर्णतः सही है
(B) आंशिक रूप से सही है
(C) पूर्णतः गलत है
(D) व्यर्थ का है

निर्देश (प्रश्न संख्या 41 से 47 तक)

नीचे दी गई पंक्तियों को पढ़कर सबसे उचित विकल्प का चयन कीजिए :

दम्भ का जहाँ–जहाँ पड़ाव था,
सत्य से जहाँ–जहाँ दुराव था,
वह चला कि अग्नि–बाण मारता
पाप की अहा–अहा उजाड़ता,
वज्र बन गिरा गिरे विचार पर!

41. 'गिरे विचार' से तात्पर्य है–
(A) सभी प्रकार के विचार
(B) मिथ्या विचार
(C) सत्य और हित से परे विचार
(D) उलझे विचार

42. नौजवान शहीद ने अग्नि–बाण इसलिए चलाए क्योंकि वह–
(A) अपना साम्राज्य स्थापित करना चाहता था।
(B) सुराज स्थापित करना चाहता था।
(C) वज्र गिराना चाहता था।
(D) अपनी शक्ति की गरिमा बनाए रखना चाहता था।

43. 'दुराव' शब्द से तात्पर्य है–
(A) दुर्गम स्थल (B) आवरण
(C) काठिन्य (D) बैर

44. 'जहाँ–जहाँ' शब्द है–
(A) एकार्थी शब्द–युग्म
(B) पुनरुक्त शब्द–युग्म
(C) विपरीतार्थक शब्द–युग्म
(D) भिन्नार्थी शब्द–युग्म

45. 'पाप' का विलोम शब्द है–
(A) प्रायश्चित्त (B) अपाप
(C) पुण्य (D) निरपराध

46. नौजवान शहीद ने किसे नष्ट किया?
(A) अहंकार को
(B) असत्य को
(C) अहंकार और सत्य को
(D) अहंकार और असत्य को

47. उच्च प्राथमिक स्तर पर कहानी, कविता पढ़ाने के बाद यह ज़रूरी है कि बच्चे–
(A) प्रश्नों के लिखित उत्तर दे सकें।
(B) उसे अपने शब्दों में दोहरा सकें।
(C) विपरीत भाव की कहानी या कविता लिख सकें।
(D) उन्हें अपने अनुभव संसार से जोड़ सकें।

निर्देश (प्रश्न संख्या 48 से 53 तक)

कविता की पंक्तियाँ पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों में **सबसे उचित** विकल्प चुनिए।

मेघ आए, बड़े बन–ठन के सँवर के
आगे–आगे नाचती–गाती बयार चली
दरवाजे–खिड़कियाँ खुलने लगीं गली–गली
पाहुन ज्यों आए हों गाँव में शहर के।
मेघ आए बड़े बन–ठन के सँवर के
पेड़ झुक झाँकने लगे गरदन उचकाए
आँधी चली, धूल भागी घाघरा उठाए,
बाँकी चितवन उठा नदी ठिठकी घूँघट सरके।
मेघ आए बड़े बन–ठन के सँवर के।
बूढ़े पीपल ने आगे बढ़कर जुहार की
बरस बाद सुधि लीन्हीं
बोली अकुलाई लता ओट हो किवार की
हरसाया ताल लाया पानी परात भर के
मेघ आए बड़े बन–ठन के सँवर के
क्षितिज–अटारी गहराई दामिनी दमकी,
क्षमा करो गाँठ खुल गई अब भरम की
बाँध टूटा झर–झर मिलन के अश्रु ढरके,
मेघ आए बड़े बन–ठन के सँवर के

48. 'मेघ आए बड़े बन–ठन के सँवर के' पंक्ति का भाव किसमें है?
(A) बादलों ने सूरज को ढक लिया है
(B) बादलों ने बिजली से शृंगार किया है
(C) बादल सज–धज कर आए हैं
(D) भूरे–काले बादल आकाश में घिर आए हैं

49. मेघों के आने से लगता है
(A) बादल आसमान में छा गए हैं
(B) मानों कहीं उत्सव मनाया जा रहा है
(C) मानो गाँव में शहर से मेहमान आए हों
(C) उपर्युक्त में से कोई नहीं

50. 'बरस बाद सुधि लीन्हीं' – इस पंक्ति का भाव किसमें है?
(A) बादल एक बरस के बाद आए हैं।
(B) बादलों ने याद किया है
(C) बादल बन सँवर कर आए हैं
(D) बादल मेहमान बन कर आए हैं।

51. पूरी कविता में कौन–सा अलंकार है?
(A) श्लेष अलंकार
(B) रूपक अलंकार
(C) मानवीकरण अलंकार
(D) उत्प्रेक्षा अलंकार

52. बूढ़े पीपल ने किस प्रकार मेघों का स्वागत किया?
(A) झुककर प्रणाम करके
(B) प्रसन्न होकर
(C) गले लगाकर
(D) आगे बढ़कर

53. 'पाहुन' शब्द का क्या अर्थ है?
(A) आना (B) पालना
(C) मेहमान (D) पैर

उत्तरमाला

अपठित गद्यांश

1. (B) **2.** (A) **3.** (D) **4.** (C) **5.** (B)
6. (A) **7.** (C) **8.** (D) **9.** (B) **10.** (A)
11. (C) **12.** (C) **13.** (B) **14.** (C) **15.** (A)
16. (C) **17.** (A) **18.** (D) **19.** (A) **20.** (B)
21. (B) **22.** (C) **23.** (B) **24.** (C) **25.** (C)
26. (D) **27.** (B) **28.** (A) **29.** (C) **30.** (B)
31. (D) **32.** (D) **33.** (A) **34.** (B) **35.** (D)
36. (C) **37.** (B) **38.** (C) **39.** (A) **40.** (A)
41. (D) **42.** (A) **43.** (D) **44.** (D) **45.** (C)
46. (A) **47.** (D) **48.** (C) **49.** (D) **50.** (C)
51. (A) **52.** (D) **53.** (D) **54.** (A) **55.** (D)
56. (D) **57.** (D) **58.** (A) **59.** (B) **60.** (B)
61. (B) **62.** (A) **63.** (A) **64.** (B) **65.** (C)
66. (B) **67.** (B) **68.** (B) **69.** (B) **70.** (B)
71. (C) **72.** (D) **73.** (A) **74.** (A)

अपठित पद्यांश

1. (A) **2.** (D) **3.** (A) **4.** (B) **5.** (B)
6. (B) **7.** (A) **8.** (C) **9.** (D) **10.** (D)
11. (B) **12.** (B) **13.** (B) **14.** (B) **15.** (A)
16. (D) **17.** (A) **18.** (A) **19.** (A) **20.** (B)
21. (C) **22.** (A) **23.** (B) **24.** (C) **25.** (A)
26. (B) **27.** (A) **28.** (C) **29.** (A) **30.** (D)
31. (B) **32.** (C) **33.** (D) **34.** (B) **35.** (C)
36. (A) **37.** (C) **38.** (A) **39.** (D) **40.** (A)
41. (C) **42.** (B) **43.** (D) **44.** (B) **45.** (C)
46. (D) **47.** (D) **48.** (C) **49.** (C) **50.** (A)
51. (C) **52.** (D) **53.** (C)

❑❑

Chapter

1

Comprehension

[Questions based on Inference, Grammar and Verbal Ability]

A Comprehension Exercise is mainly consisted of a passage, upon which questions are set. The main purpose of this exercise is to test the ability of a student.

Therefore student is need to read the passage carefully and choose the correct answer out of the given alternatives.

Poem is a form of literary art which uses aesthetic and rhythmic qualities of language such as phonoaesthetic sound symbolism etc. 'Poem' comes from the Greek word poiema which means a "thing made."

Important Questions

Passage

Direction (Q. No. 1 to 8)

Read the passage given below and answer the questions that follow by selecting the correct/ most appropriate options :

The richness of her childhood experience came from living a life, which embraced tradition on one hand and exposure to the world of change, of questioning and questing on the other. Her father's prooressive ideas, his involvement in bringing about change in the restricted Brahminical society, his encouragement of Kamladevi to follow her own inclinations and yet give her an opportunity to study in a school and participate in all the social functions with which he was involved, as a Senior Revenue Official, gave her confidence. The example of her grandmother, who lived the life of a scholar and fearless woman, who travelled alone without any fear of any social disapproval or adverse consequences, was a fitting example to Kamladevi, who later travelled all over the world, often risking her life.

Girjabai, her mother was a dominant influence throughout her childhood and youth who set an example by overcoming all difficulties without a murmur. She discarded meaningless social customs and observances. She championed the cause of women. Her conviction was that a woman must educate herself, so that she could be independent and her insistence that Kamladevi should not only study, but also participate in cultural activities and sports, enriched her daughter's life.

Kamaladevi went with her mother to Seva Sadan and saw her exhorting women even older than her to become literate. She heard hre read to them from the newspapers, magazines and extracts from books by social reformers and nationalists, followed by discussions and saw their attitudes changing. Girjabai's love for music was shared by Kamladevi and she was encouraged to learn North Indian and Carnatic music. This love of music was a great source of peace for Kamaladevi in her later years.

1. 'which embraced tradition'

The word 'embraced' here means :

(A) pleased (B) followed

(C) disused (D) performed

2. 'an example by overcoming all difficulties'

The word 'overcoming' means :

(A) conquering (B) over bearing

(C) reaching (D) not coming

3. 'living a life, which embraced tradition,

Which part of speech is the underlined word ?

(A) Pronoun (B) Determiner

(C) Adjective (D) Adverb

4. Which two contradictory kinds of experience did Kamaladevi have in her childhood ?

(A) Childlike and Adult

(B) Social and Individual

(C) Questioning and Questing

(D) Tradition and Change

5. Her father did not believe in :

(A) allowing children to join the adults in their activities

(B) female education

(C) removing brahminical restrict-ions

(D) giving freedom to children

6. Which of the following statements is NOT correct of her grandmother ?

(A) She was not afraid of social criticism.

(B) She travelled unescorted.

(C) She believed that women should lead a secure life

(D) She loved to read books.

7. Which of the following statements is correct about her mother ?

(A) She preferred studies to sports.

(B) She did not believe in adult literacy.

(C) She struggled through life smilingly.

(D) She observed faithfully all the social customs.

8. Study the following statements :

(A) Kamaladevi's mother read to her from newspapers and magazines.

(B) Music was a sourec of great comfort to her.

(A) Both (A) and (B) are right.

(B) Both (A) and (B) are wrong.

(C) (A) is right and (B) is wrong.

(D) (A) is wrong and (B) is right.

Direction (Q. No. 9 to 15)

Read the passage given below and answer the questions that follow by selecting the correct/ most appropriate options :

The goal of independence was achieved in India through a prolonged struggle, during which, the far-sightednness of the leaders of the freedom movement resulted in giving a final shape to our soical and economic goals to be achieved after freedom. This vision imagined to build a self-reliant nation through maximum utillization of the resources in men and materials, and the establishment of a noble and liberal society. It has been an article of faith amongst the policy planners in India the while economic strength determined the scope and quality of political freedom for millions that quality of freedom depends on increased work and production in factories. It leads to just and equal distriubtion of wealth among the people so that the poor can also enjoy the benefit of freedom. This, it is recognized, is possible only through increased employment opportunities in the society.

In human terms, democracy means availability of equal opportunities to all the people irrespective of caste, creed, sex and religion to develop their personalities. It means access to education in Arts, Science and Humanities

and also awareness of our age old values and traditions, it needs to be emphasized that the Indian policy has been based on a concern for the individual not as a worker working for the economic development of the society but also as an end in itself.

In the Indian context, the concept of national development goes far beyond economic growth; it is concerned with the creation of a nation united in one purpose, of people speaking different languages, professing. different religions and rooted in a variety of cultures.

9. 'While economic strength determined the scope'

The word 'determined' means :

(A) preferred (B) rejected

(C) established (D) decried

10. 'our social and economic goal' Part of speech of the underlined word is :

(A) Interjection (B) Conjunction

(C) Pronoun (D) Determiner

11. 'In the Indian context, the concept of' The word 'concept' mean :

(A) Care (B) Inception

(C) Curiosity (D) Idea

12. The Independence was achieved in India

(A) through violent means

(B) by making use of every resource available

(C) through a long struggle

(D) by self-reliant leadership

13. Our leaders' vision of independent India was based on :

(A) economic self-reliance

(B) diversification of employment

(C) boycott of foreign goods

(D) development of defence forces

14. In addition to economic growth our society, as a consequence, also needs

(A) to pay attention to climatic changes.

(B) just and equitable distribution of wealth

(C) development of countryside.

(D) to give importance to cultural variety.

15. Study the following statements :

A. Along the economic growth, we also want to develop a united nation with one aim.

B. A noble and liberal society depends entirely on economic wealth.

(A) Both (A) and (B) are right.

(B) Both (A) and (B) are wrong.

(C) A is right and (B) is wrong.

(D) A is wrong and (B) is right.

Direction (Q. No. 16 to 23)

Read the passage given below and answer the questions that follow by choosing the correct/ most appropriate options :

The other day I received an unusual and very gratifying gift : I was given a tree. Or rather, I was given half-a-dozen trees, which would be planted on my behalf. I had been invited to give a talk to an organisation. After such events, the speaker is usually given a token gift. Sometimes the gift is that of a pen, or something useful. Often, the gift is in the form of a plaque or similar commemorative token. However well-meant, such gifts are destined to gather dust in forgotten corners. Which is why I was agrreably surprised to be given a scroll which attested that, in a designated plantation established for the purpose, six trees would be added in my name, as part of 'green' movement being sponsored by the organization.

In an increasingly environmentally-conscious world, the gift of a living tree or plant makes for a perfect present. The tradition of giving and receiving gifts has increasingly become a highly evolved marketing exercise. Apart from festivals like Diwali, Holi, Christmas, Eid and others, a whole new calendar of celebratory events has been created to promote the giving of gifts : Mother's Day, Father's Day, Teacher's Day, Valentine's Day and so on and on.

What do you give to people — friends, relatives, spouses, children, parents, employees, clients, well-wishers who have more or less everything, or at least everything that you could afford to give them as a gift? Another shirt or kurta? Another bottle of scent or aftershave? Another box of chocolates ? Another any other?

16. Why do you not very much care for it when you receive a shirt or a kurta as a gift ?

(A) You already have so many of them

(B) You don't like the colour

(C) You were not asked about your choice

(D) The giver had to spend a lot of money

17. The word 'gratifying' means :

(A) satisfying (B) giving

(C) fortifying (D) annoying

18. The word 'destined' means :

(A) decided (B) declined

(C) departed (D) fated

19. Name the part of speech of the underlined word in the following clause :

which is why I was agreeably surprised.

(A) Adjective (B) Pronoun

(C) Adverb (D) Preposition

20. Identify the part of the following sentence which has an error in it.

(a) Your claim ought

(b) to succeed in that case

(c) the damages

(d) will be substantial

(A) (b) (B) (c)

(C) (d) (D) (a)

21. The writer was thrilled when he was given :

(A) six trees (B) a plaque

(C) a pen (D) a tree

22. What usually happens to the gifts he/she receives?

(A) He gives them away as gifts to others

(B) They are put away and forgotten

(C) He keeps them religiously as mementoes

(D) He uses them if he needs them

23. The gift received by the writer was :

(A) environment friendly

(B) very expensive

(C) gathering dust in a corner

(D) a marketing exercise

Direction (Q. No. 24 to 30)

Read the passage given below and answer the questions by selecting the correct/most appropriate options :

With more than 3,000 languages currently spoken, English undoubtedly is amongst the richest of all languages. The Oxford English Dictionary lists about half a million words of which only 2,00,000 are frequently used. This is because, the balance 3,00,000 words are technical and not found in ordinary dictionaries. The only language that can come near English is Chinese.

Apart from being the richest language, English also boasts of being one of the most widely spoken, second only to Mandarin Chinese. This remarkable achievement is only because of the one thing that we all love to do— copy ! 'Siesta' for example is of Spanish origin. 'Sputnik' as you must be aware of, has a Russian origin. 'Restaurant' is from France and 'Super' from Germany. Even before the birth of the 'genius' of 'drama', William Shakespeare, the words 'genius' and 'drama' were adapted from Greek.

Now, you must be wondering if English has anything original about it. Well, find it out ! Did you ever to find out how many different words of English we use in our daily life? Try to guess and then read on. A modern novelist has a vocabulary of anywhere between ten to fifteen thousand words.

William Shakespeare used thirty thousand words and the only writer to come close to him was James Joyce in 'Ulysses'. We normally have a vocabulary of about ten thousand words of which only five thousand are used in everyday conversation. This leads to a limited variety of words. This is because we repeat a lot of words. In conversation and in writing, it is 'the'. (Try counting it in this article and you will have proof of it.)

24. How many words are usually used by an English speaking person?
(A) 5,000 (B) 10,000
(C) 15,000 (D) 3,000

25. Which of the following words is most often used in English language?
(A) the (B) is
(C) one (D) a

26. The word that is similar in meaning to the word, 'remarkable' is :
(A) remedial
(B) remaining
(C) optional
(D) astonishing

27. The word that is opposite in meaning to the word, 'ordinary' is :
(A) complex (B) special
(C) liable (D) usual

28. Which part of speech is the underlined word in the following sentence?
Did you ever try to find out ?
(A) Adjective (B) Pronoun
(C) Verb (D) Adverb

29. English is the most widely used language in the world because :
(A) it is the richest language
(B) it has taken words from other languages
(C) it has half a million words in it
(D) Shakespeare has written in English

30. In our everyday conversation we use a limited number of words because :
(A) we are not a genius like Shakespeare
(B) everybody is not highly educated
(C) we repeat a lot of words
(D) our vocabulary is unlimited

Direction (Q. No. 31 to 38)

Read the passage given below and answer the questions that follow by selecting the correct/ most appropriate options :

As science progresses, superstitions ought to grow less. On the whole, that is true. However, it is surprising how superstitions linger on. If we are tempted to look down on savage tribes for holding such ideas, we should remember that even today, among most civilised nations, a great many equally stupid superstitions exist and are believed in by a great many people. Some people will not sit down thirteen at a table; or will not like to start anything important on a Friday; or refuse to walk under a ladder. Many people buy charms and talismans because they think they will bring them luck. Even in civilised nations today, many laws are made on the basis of principles which are just as much unproved. For instance, it is often held as a principle that white people are by nature superior to people of other colours. The ancient Greeks believed that they were superior to the people of Northern and Western Europe. The only way to see if there is anything in such a principle is to make scientific studies of a number of white and black and brown people under different conditions of life and find out just what they can and cannot achieve.

If is, however, true that the increase of scientific knowledge does reduce superstition and also baselessss guessing and useless arguments and practices. Civilised people do not argue and get angry about what water is composed of. The composition of water is known, and there is no argument about it.

31. Who believe in superstitions ?
(A) Only some civilised nations.
(B) Only some tribals.
(C) All tribals and some civilized nations.
(D) All civilised nations.

32. Study the following statements.
(a) Ancient Greeks were superior to other European nations.
(b) Science helps us fight superstitions.
(A) (a) is wrong and (b) is right.
(B) Both (a) and (b) are right.
(C) Both (a) and (b) are wrong.
(D) (a) is right and (b) is wrong.

33. Which part of speech is the underlined word in the following sentence ?
On the whole that is true.
(A) Pronoun
(B) Conjunction
(C) Preposition
(D) Determiner

34. Identify the part of speech of the underlined word in the following sentence.
It is often held that as a principle.
(A) Adverb
(B) Adjective
(C) Preposition
(D) Pronoun

35. Fill in the blank in the following setence.
.....is opposite in meaning to the word, 'superior'.
(A) Prior
(B) Inferior
(C) Lower
(D) Higher

36. The statement which best sums up the passage is :
(A) Irrational beliefs decline with the advancement of science.
(B) Civilized nations are no less superstitions than the savage tribes.
(C) We are very different from the savage nations in our beliefs.
(D) Superstitions disappear with the advancement of science.

37. We should not despise the savage tribes because :
(A) they indulge in useless arguments.
(B) the have stopped being superstitious.
(C) we are no less superstitions than they are.
(D) they do not believe in science.

38. Which of the following has a scientific basis for it ?
(A) Number thirteen is inauspicious.
(B) Talismans and charms always bring luck.
(C) Fridays are as good as other days.
(D) We should not walk under a ladder.

Direction (Q. No. 39 to 45)

Read the passage given below and answer the questions that follow by selecting the correct/ most appropriate options.

If asked, "What matters are related to health i.e. health decisions ?" most of us would answer – hospitals, doctors and pills. Yet we are all making a whole range of decisions about our health which go beyond this limited area of doctors, pills etc. For example, whether or not to smoke, take exercise, wear a seat belt, drive a motor bike, drink alcohol regularly etc.

The way we reach decisions and form attitudes about our health is only just beginning to be understood.

The main paradox is why people consistently do things which are known to be very hazardous. Two interesting examples of this are smoking and not wearing seat belts. Addiction makes smokers keep on smoking and whether to wear a seat belt or not is affected by safety considerations. Taken together both these examples show how people reach decisions about their health. Understanding this process is crucial. Only then can we effectively change public attitude towards voluntary activities like smoking.

Smokers run the risk of contracting heart disease, several times more as compared to non-smokers. Even lung cancer. Despite extensive press campaigns which have regularly told smokers and car drivers the grave risks they are running, the number of smokers and non-wearers of seat belts has remained much the same. Although the numbers of deaths from road accidents and smoking are well publicized, they have aroused little public interest.

If we give smokers the real figures of deaths caused by smoking, will it affect their views on the dangers of smoking ? Unfortunately not. Many of the real figures are in the form of probable estimates and evidence shows that people are very bad at understanding this kind of information.

39. Study the following statements :
(a) Though it is very dangerous, some people don't quit smoking.
(b) Whether or not to drink alcohol is not a health decision.
(A) (a) is wrong and (b) is right.
(B) Both (a) and (b) are right.
(C) Both (a) and (b) are wrong.
(D) (a) is right and (b) is wrong.

40. Which of the following pieces of advice can be easily ignored by the people ?
(A) Wear a seat belt.
(B) Don't drink alcohol.
(C) Don't drive a motor bike.
(D) Don't smoke.

41. Which part of speech is the underlined word in the following sentence ?
Yet, we are all making a whole range of decisions.
(A) Conjunction (B) Pronoun
(C) Preposition (D) Adverb

42. Which part of speech is the underlined word in the following setence ?
Understanding this process is crucial.
(A) Preposition
(B) Adverb
(C) Conjunction
(D) Determiner

43. Smokers run double the risk of contracting heart disease.
The word 'contracting' here means
(A) removing
(B) catching
(C) avoiding
(D) receiving

44. An example of 'limited area' of health is :
(A) taking exercise
(B) wearing a seat belt
(C) taking medicines
(D) smoking

45. Why does a common man choose to wear a seat belt ?
(A) He wants to protect himself.
(B) It is fitted in the car.
(C) For fear of the policeman.
(D) There is a law for it.

Direction (Q. No. 46 to 51)

Read the passage given below and answer the questions that follow by selecting the **correct/ most appropriate** options.

"A principal fruit of friendship", Francis Bacon wrote in his timeless meditation on the subject, "is the ease and discharge of the fullness and swellings of the heart, which passions of all kinds do cause and induce." For Thoreau, friendship was one of life's great rewards. But in today's cultural landscape of muddled relationships scattered across various platforms for connecting, amidst constant debates about whether our Facebook 'friendships' are making us more or less happy, it pays to consider what friendship actually is. That's precisely what CUNY Philosophy professor Massimo Pigliucci explores in *Answers for Aristotle : How Science and Philosophy Can Lead Us to a More Meaningful Life* (public library), which also gave us this provocative read on the science of what we call 'intuition'.

Philosophers and cognitive scientists agree that friendship is an essential ingredient of human happiness. But beyond the dry academic definitions—like, say, "voluntary interdependence between two persons over time, which is intended to facilitate socio-emotional goals of the participants, and may involve varying types and degrees of companionship, intimacy, affection and mutual assistance"—lies a body of compelling research that sheds light on how, precisely, friendship augments happiness. The way friendship enhances well-being, it turns out, has nothing to do with quantity and everything to do with quality—researchers confirm that it isn't the number of friends (or, in the case of Facebook, 'friends').

46. The change in the present situation which has forced us to rethink the concept of friendship is—
(A) there is more interest in the sciences
(B) friendships are not possible in the real world anymore, due to over-competition
(C) Bacon and Thoreau's theories are no longer available to read
(D) the arrival of social media on the scene

47. Friendship leads to happiness. Is it true?
(A) Friends cannot make each other happy
(B) One needs to find one's happiness alone, with peace of mind
(C) Yes, researches have proven that friendship does lead to happiness
(D) No, there is no relationships between friendship and happiness

48. Did Pigliucci's book discuss intuition too ?
(A) It discussed Aristotle's theories
(B) Yes
(C) No, it only discussed friendship
(D) It just explained science and philosophy

49. Is the quality of friends important ?
(A) Yes, it matters
(B) No, quality comes automatically with quantity
(C) No, it is important to have more number of friends, quality does not matter
(D) No, number of comments on social networking sites is important, not the quality of friends

50. As per the first paragraph, what are the debates about ?
(A) The quality of comments of social media is debatable.
(B) Thoreau and Aristotle's thinking is at loggerheads.
(C) They are centered around whether our Facebook friends are helping us become more or less happy.
(D) There are no debates around

friendship.

51. The word that is opposite in meaning to the word 'muddled' is—

(A) ordered (B) rumpled

(C) confused (D) chaotic

Direction (Q. No. 52 to 58)

Read the passage given below and answer the questions that follow by selecting the **correct/ most appropriate** options.

The strength of Indian democracy lies in its tradition, in the fusion of the ideas of democracy and national independence which was characteristic of the Indian national movement long before independence. Although the British retained supreme authority over India until 1947, the provincial elections of 1937 provided real exercise in democratic practice before national independence. During the Pacific War, India was not overrun or seriously invaded by the Japanese and after the War was over, the transfer of power to a government of the Indian Congress Party was a peaceful one as far as Britain was concerned. By 1947, Indianization' had already gone far in the Indian Civil Service and army, so that the new government could start with effective instruments of central control.

After independence, however, India was faced with two vast problems, the first, that of ethnic diversity and the aspirations of sub-nationalities. The Congress leadership was more aware of the former problem than of the second; as a new political elite which had rebelled not only against the British Raj, but also against India's social order; they were conscious of the need to initiate economic development and undertake social reforms, but as nationalists who had led a struggle against alien rule on behalf of all parts of India, they took the cohesion of the Indian nation too much for granted and underestimated the centrifugal forces of ethnic division, which were bound to be accentuated rather than diminished as the popular masses were more and more drawn into politics. The Congress Party was originally opposed to the idea of recognizing any division of India on a linguistic basis and preferred to retain the old provinces of British India which often cut across linguistic boundaries; it was only in response to strong pressures from below that the principle of linguistic States was conceded as the basis of a federal 'Indian Union'. The rights granted to the States created new problems for the Central Government. The idea of making Hindi the national language of a united India was thwarted by the recalcitrance of the speakers of other important Indian languages and the autonomy of the States rendered central economic planning extremely difficult.

Land reforms remained under the control of the States and many large-scale economic projects required a degree of cooperation between the Central Government and one or more of the States which it was found impossible to achieve. Coordination of policies was difficult even when the Congress Party was in power both in the States and at the Centre; when a Congress government in Delhi was confronted with non-Congress parties in office in the States, it became much harder.

52. Choose the word which is most nearly the same in meaning as the word 'thwarted' as used in the passage.

(A) Accepted

(B) Diverted

(C) Opposed

(D) Implemented

53. Choose the word which is most opposite in meaning of the word 'conceded' as used in the passage.

(A) Denounced

(B) Withdrawn

(C) Criticized

(D) Rejected

54. Why was central economic planning found to be difficult ?

(A) Autonomy given to the States in certain matters

(B) Lack of will in implementing land reforms

(C) Multiplicity of States and Union Territories

(D) Lack of coordination in different government departments

55. Which one of the following problems was India faced with after independence ?

(A) Improper coordination of various government policies

(B) Increasing the production from a very low level

(C) Military attack from across the border

(D) Lack of coordination between the Central and State Governments

56. Which one of the following issues was *not* appropriately realized by the Central Government ?

(A) Implementation of the formulated policies

(B) Centre-State relations

(C) Ethnic diversity of the people

(D) A national language for the country

57. Which, according to the passage, can be cited as exercise in democratic practice in India before independence ?

(A) The Indianization of the Indian Civil Service

(B) Several democratic institutions created by the Indian National Congress

(C) The handing over of the power by British to India

(D) None of the above

58. Which one of the following statements is *not* true in the context of the passage?

(A) The political elite in India rebelled against the British Raj.

(B) The Congress leadership was fully aware of the problems of ethnic diversity in India at the time of independence.

(C) The Congress Party was originally opposed to the idea of division of States on linguistic basis.

(D) Economic development and social reforms were initiated soon after independence.

Direction (Q. No. 59 to 66)

Read the passage given below and answer the questions that follow by selecting the **correct/ most appropriate** options.

Peoples' faces light up when I say I taste chocolate for a living, but it is not always delicious. I also have to taste defective chocolate, which might have a bitter or burnt flavour. I'm usually in a small room, not allowed to talk, and parked in front of a computer to log information. Sometimes the room has red lighting to disguise the appearance of the chocolate, so I can evaluate it only by taste, not appearance. I can sample as many as 30 chocolates per day, so as to keep my palate active, I spit the sweets back out. That's another not-so-glamorous part of the job. Between samples, I wait 30 seconds to let my senses rest, and I chew half an unsalted cracker biscuit and drink plain warm water, as carbonated water and ice numb one's senses.

First I smell the chocolate and log its aroma. I also listen : if chocolate doesn't sound crisp when broken, it may be a sign it's old or was improperly stored. Then I place one inch bit in my mouth and leave it there for a few seconds. I press it against my palate and let it melt, recording the four basic tastes—sweet, sour, bitter and salty. Then I blow out short puffs of

air through my nose. Certain sense receptors in the back of our head are stimulated by oxygen. They allow us to smell food when we chew. Exhaling sharply can bring out aromas like berry, mushroom, tea, citrus, beeswax, toast, cinnamon, and savoury spices that are sometimes too subtle for the nose to catch. I log these attributes, too, along with the texture.

59. People get surprised when the narrator tells them that he
(A) has to eat bitter chocolate
(B) has to work in a small room
(C) is a chocolate taster
(D) has to work under red light

60. There is no glamour in his job as
(A) his place of work is narrow
(B) he never ate burnt chocolate
(C) he has to blow out short puffs
(D) he keeps on spitting out chocolate

61. The narrator cannot eat and enjoy the chocolate :
(A) to keep his palate active
(B) as it has a burnt flavour
(C) as it has not been stored properly
(D) as it is defective

62. The process of chocolate tasting runs in the order of ..... and again smelling.
(A) smelling, breaking, listening, melting
(B) melting, listening, breaking, smelling
(C) breaking, smelling, listening, melting
(D) breaking, listening, smelling, melting

63. "Leave it there."
When the above sentence is changed into *passive voice,* it becomes :
(A) It was left there.
(B) Let it be left there.
(C) Let it was left there.
(D) It is left there.

64. "Peoples' faces light up ..... ."
The word 'light' here is a/an
(A) verb (B) adjective
(C) adverb (D) noun

65. The word 'parked' (Para 1) means
(A) operated (B) seated
(C) ran (D) managed

66. The word 'log' (Para 2) means
(A) cut (B) enjoy
(C) taste (D) record

Direction (Q. No. 67 to 73)

Read the passage given below and answer the questions that follow by selecting the **correct/ most appropriate** options.

The Kittur Fort

One can see today only the dilapidated walls and ruins of the great fort which was once known for its strength. The most important landmark as one goes towards the fort is the 'Bahadurgad'. Situated to the southwest of the fort and outside of it, on a natural hillock, the highest in the plain, the Bahadurgad', which was the watchtower, provides a most panoramic and commanding view of the sparsely wooded surrounding region of green grassland, fading, as if gradually, into soft contoured hills in the west and the horizons on the other sides. To the north of the tower is Ranagattikeret where Rani Chennamma fought her last stubborn fight against the British, with almost savage determination.

The actual fort, circular in plan, consisted of double walls, separated by moats on the outer sides, with semi-circular bastions on the exterior of the outer wall. It had originally the main gateway on the east, approached by the causeway across the outer moat known as ane honda which was used for bathing the elephants.

The entrances through the walls are deliberately not aligned, evidently in the interests of security. After passing by the winding path through the walls, one is led to the front side of the imposing main entrance of the palace located near the northern arc of the inner fort wall.

To the south of the palace, inside the fort, are the ruins of horse-stables and foundations of residential buildings, probably meant for the important officials of the palace. To the southwest is the heavily built watchtower relieved by a series of parallel buttresses at regular intervals.

67. Which one of the following statements is true ?
(A) From it, one can enjoy a view of the hills in the east.
(B) It was used as a watchtower.
(C) Rani Chennamma ruled Kittur from here.
(D) Bahadurgad is situated inside the Kittur Fort.

68. Rani Chennamma fought against the British :
(A) in the contoured hills
(B) at Ranagattikere
(C) in Bahadurgad Fort
(D) in the wooded grasslands

69. From Bahadurgad, one could easily get
(A) to see tall rugged hills in the west
(B) a look at green grasslands
(C) to see a natural hillock
(D) a commanding view of a dense forest

70. Unaligned gates in the walls
(A) make the fort secure
(B) make the fort insecure
(C) make the walls look imposing
(D) make the entry easy

71. "... as one goes towards ...."
'one' in the above clause is a/an
(A) verb (B) pronoun
(C) adjective (D) noun

72. "... and commanding view of ... ."
'commanding' in the above phrase is a/an
(A) verb (B) adjective
(C) adverb (D) noun

73. The word 'landmark' means the same as
(A) adventure (B) hill
(C) plain (D) marker

Poem

Direction (Q. No. 1 to 6)

Read the poem given below and answer the questions that follow by selecting the correct/ most appropriate options :

That time of year thou mayst in me behold,
When yellow leaves, or none, or few do hang
Upon those boughts which shake against the cold
Bare ruined choirs, where late the sweet birds sang.
In me thou seest the twilight of such day,
As after sunset fadeth in the west,
Which by and by black night doth take away,
Death's second self that seals up all in rest.
In me thou seest the glowing of such fire,
That on the ashes of his youth doth lie,
As the death-bed, whereon it must expire,
Consmed with that which it was nourished by.
This thou perceiv'st, which makes thy love more strong,
To love that well, which thou must leave ere long.

1. What does 'Death's second self' stand for?
(A) ashes of one's youth

(B) setting sun

(C) sleep that gives rest

(D) a dying fire

2. 'That on the ashes of his youth doth lie'. Which figure of speech has been used in the underlined phrase ?

(A) Personification

(B) Alliteration

(C) Simile

(D) Metaphor

3. The theme of the poem is

(A) love

(B) songs of the birds

(C) the idea of death

(D) the change of seasons

4. The poet't life, today, is like.....season.

(A) winter (B) summer

(C) spring (D) autumn

5. In this season the branches have..... leaves.

(i) few

(ii) no

(A) either (i) or (ii)

(B) neither (i) nor (ii)

(C) only (i)

(D) only (ii)

6. What did the branches of the tress enjoy earlier ?

(A) bright light of the sun

(B) darkness after the sunset

(C) a ruined group of singers

(D) sweet songs of birds

Direction (Q. No. 7 to 12)

Read the given poem and answer the questions that follow and select the **most appropriate** option.

I want to be with people who submerge
in the task, who go into the fields of harvest
and work in a row and pass the bags along,
who are not parlour generals and field deserters
but move in common rhythm
when the food must come in or the fire be put out.
The work of the world is common as mud.
Botched, it smears the hands, crumbles to dust.
But the thing worth doing well done
has a shape that satisfies, clean and evident.
Greek amphoras for wine and oil,
Hopi vases that held corn, are put in museums
but you know they were made to be used.
The pitcher cries for water to carry
and the person for work that is real.

7. The poet seems to admire

(A) farm workers

(B) parlour generals

(C) field deserters

(D) wage earners

8. What is common between parlour generals and field deserters ?

(A) Both of them love fighting

(B) Both love to work

(C) Both enjoy respect in society

(D) Neither of them fights

9. What happens when work with mud gets botched ?

(A) It is abandoned

(B) It leads to satisfaction

(C) Hands get dirty

(D) No one pays for it

10. The figure of speech used in lines 12-14 is ..... .

(A) metaphor (B) personification

(C) alliteration (D) irony

11. Mud in the hands of a good craftsman becomes ..... .

(A) a museum piece

(B) a useful article

(C) an expensive article

(D) a work of art

12. Amphoras, vases and pitchers are metaphors for ..... .

(A) antique art

(B) useful human labour

(C) pride in wealth

(D) items of luxury

Direction (Q. No. 13 to 18)

Read the given poem below and answer the questions that follow by selecting the **most appropriate** option.

Hawk

All eyes are fearful of the spotted hawk, whose
dappled wingspread opens to a phrase that only
victims gaping in the gaze
of Death Occurring can recite. To stalk; to plunge;
to harvest; the denial-squawk
of dying's struggle; these are but a day's
rebuke to hunger for the hawk, whose glazed
accord with Death admits no show of shock
Death's users know it is not theirs to own,
Nor can they fathom all it means to diefor young
to know a different Death from old.
But when the spotted hawk's last flight is flown,
He too becomes a novice, fear- struck by
The certain plummet once these feathers fold.

–Daniel Waters

13. The *denial-squawk* refers to the :

(A) hawk's response to the cry of its prey

(B) helpless cry of its prey to avert death

(C) warning call by the hawk before killing its prey

(D) desperate, pitiable cry of the prey

14. To the hawk, *a day's rebuke to hunger* suggests that the bird :

(A) bows to hunger

(B) causes death by preying on lesser animals

(C) averts own death by killing and eating its prey

(D) faces death fearlessly in contrast to its prey

15. Here, *glazed accord with Death* means that :

(A) the prey meets death willingly

(B) death is inevitable

(C) death is in partnership with starvation

(D) the hawk also becomes a victim of death at the end

16. The word that is closest in meaning to the word *dappled* in the poem is :

(A) spotted (B) fearful

(C) glazed (D) flown

17. Here, *he too becomes a novice* suggests that :

(A) the hawk's prey becomes a predator instead

(B) all living creatures are potentially victims of others

(C) death comes swiftly to the fearless hawk

(D) the hawk also meets death, as weak and helpless as its prey

18. The following line exemplifies the use of *personification* as a poetic device :

(A) Death's users know it is not theirs to own....

(B) ..... the certain plummet once these feathers fold.

(C) To stalk; to plunge; to harvest;...

(D) But when the spotted hawk's last flight is flown...

Direction (Q. No. 19 to 24)

Read the given poem and answer the questions that follow by selecting the **most appropriate** option.

Remnants Left Behind

A leaf detaching
herself from a tree
strong winds howling
catching in a gale
just won't let her be.
A ship sailing on an
ocean
being bashed by heavy
winds
forcing her to dry
land
seeking asylum once
again.
Footprints in the sand
leaving behind positive
thoughts
until the tide rushes
in
and everything is lost.
Remnants of two lovers
once so young, and bold
signatures etched on a
heart
A love story never told.

Heather Burns

19. The poet's message here is about the power of :

(A) human love that is permanent

(B) nature that can create or destroy

(C) the sea over human life

(D) human beings over nature

20. "..... just won't let her be ...." uses ..... as the poetic device.

(A) simile

(B) personification

(C) fallacy

(D) exaggeration

21. In the phrase ".... seeking asylum", 'asylum' here means

(A) port (B) shore

(C) beach (D) cliff

22. ".... Footprints in the sand ....." symbolises

(A) false images

(B) brief lives

(C) short memories

(D) patterns on the sand

23. The line "Remnants of two lovers ..." suggests to the reader that the lovers

(A) had died together at sea

(B) have decided to spend their lives together

(C) are no longer in love with each other

(D) are now separated from each other

24. In ".... signatures etched on a ...", 'etched' means.

(A) chipped (B) scratched

(C) engraved (D) cut

Direction (Q. No. 25 to 30)

Read the given poem and answer the questions that follow by selecting the most appropriate option :

As I Watch You Grow

Do you know how much you mean to me?
As you grow into what you will be.
You came from within, from just beneath my heart
It's there you'll always be though your own life will now start.
You're growing so fast it sends me a whirl,
With misty eyes I ask, Where's my little girl?
I know sometimes to you I seem harsh and so unfair,
But one day you will see, I taught you well because I care.
The next few years will so quickly fly,
With laughter and joy, mixed with a few tears to cry.
As you begin your growth to womanhood, this fact you must know,
You'll always be my source of pride, no matter where you go.
You must stand up tall and proud, within you feel no fear,
For all you dreams and goals, sit before you very near.
With God's love in your heart and the world by its tail,
You'll always be my winner, and victory will prevail.
For you this poem was written, with help from above,
To tell you in a rhythm of your Mother's heart-felt love! **Kay Theese**

25. 'Do you know how much you mean to me?' is a ..... question.

(A) rhetorical (B) restrictive

(C) convergent (D) divergent

26. An antonym for the word 'harsh' is

(A) severe (B) mild

(C) grim (D) clashing

27. In the expression 'It sends me a whirl', 'it' refers to

(A) travelling far

(B) growing up

(C) new experiences

(D) the real world

28. To 'stand up tall' is

(A) growing up healthy

(B) be tall like the boys

(C) being fearless

(D) getting ambitious

29. The phrase 'the world by its tail' means to

(A) be a good follower

(B) overcome challenges

(C) face one's enemies

(D) to avoid challenges

30. The poem addresses a

(A) friend (B) daughter

(C) mother (D) girl

Direction (Q. No. 31 to 36)

Read the poem given below and answer the questions that follow by selecting the **most appropriate** option.

I Bulid Walls

I build walls:
Walls that protect,
Walls that shield,
Walls that say I shall not yield
Or reveal
Who I am or how I feel.

I build walls:
Walls that hide,
Walls that cover what's inside,
Walls that stare or smile or look away,
Silent lies,
Walls that even block my eyes

From the tears I might have cried.

I build Walls:
Walls that never let me
Truly touch
Those I love so very much.
Walls that need to fall!
Walls meant to be fortresses
Are prisons after all.

31. What are the walls in this poem made of ?

(A) Hidden feelings and thoughts
(B) Bricks or any physical material
(C) Cement and tiles
(D) Blood and flesh

32. The poet uses ''walls'' as a :

(A) Alliteration
(B) Simile
(C) Personification
(D) Metaphor

33. When walls act as a protection, they

(A) surrender to strong feelings
(B) do not reveal what is inside
(C) make one shed tears
(D) touch the ones who are truly loved

34. The expression 'silent lies' in the second stanza implies that :

(A) walls lie silently around all of us
(B) walls are silent
(C) walls are liars
(D) walls make one hide one's true feelings

35. Why is it not a good idea to have these ''walls''?

(A) They hurt others
(B) They act as a fortress
(C) They act as a prison and keep loved ones away
(D) They are made of bricks

36. Walls build to protect us ultimately turn into a prison. It is an example of a :

(A) riddle (B) satire
(C) paradox (D) puzzle

Direction (Q. No. 37 to 42)

Read the given poem and answer the questions that follow by selecting **most appropriate** option.

Hope is the thing with feathers
That perches in the soul,
And sings the tune—without the words,
And never stops at all,
And sweetest in the gale is heard;
And sore must be the storm
That could abash the little bird
That kept so many warm,
I've heard it in the chillest land,
And on the strangest sea;
Yet, never, in extremity,
It asked a crumb of me.

Emily Dickinson

37. In the line 'Hope is the thing with feathers' the poet is using a/an

(A) hyperbole (B) imagery
(C) simile (D) allegory

38. The observation 'perches in the soul' refers to human.

(A) spirituality
(B) worries
(C) disappointment
(D) expectation

39. 'And sweetest in the gale is heard' means :

(A) joy and happiness go hand in hand
(B) winds blow loudly during a gale
(C) sorrow is the greatest during a storm
(D) expectation of relief even in sorrow

40. 'Abash' means a sense of :

(A) pride
(B) embarrassment
(C) hope
(D) loss

41. 'Never, in extremity,' refers to :

(A) unexpected
(B) extreme happiness
(C) longing excessively
(D) hope costs nothing

42. 'A crumb' is a metaphor for :

(A) food (B) hope
(C) sandess (D) reward

Direction (Q. No. 43 to 48)

Read the poem given below and answer the questions that follow by selecting the **most appropriate** option.

Common Cold

1. Go hang yourself, you old M.D.!
You shall not sneer at me.
Pick up your hat and stethoscope,
Go wash your mouth with laundry soap;
I contemplate a joy exquisite
I'm not paying you for your visit.
I did not call you to be told
My malady is a common cold.

2. By pounding brow and swollen lip;
By fever's hot and scaly grip;
By those two red redundant eyes
That weep like woeful April skies;
By racking snuffle, snort, and sniff;
By handkerchief after handkerchief;
This cold you wave away as naught
Is the damnedest cold man ever caught!

3. Bacilli swarm within my portals
Such as were ne'er conceived by mortals,
But bred by scientists wise and hoary
In some Olympic laboratory;
Bacteria as large as mice,
With feet of fire and heads of ice
Who never interrupt for slumber
Their stamping elephantine rumba.

43. What is the emotion that the poet displays in the first stanza?

(A) Anger (B) Joy
(C) Jealousy (D) Sympathy

44. Why and at whom does the poet show his emotion?

(A) At an old man because he has sneered at the poet
(B) At a doctor for an incorrect diagnosis of his medical condition
(C) At a friend who is happy at the poet's plight
(D) At a doctor who has said the poet merely has a cold

45. The poet describes his eyes as 'two red redundant eyes' because :

(A) he cannot see properly due to the cold
(B) they show how furious the poet is
(C) they have been affected by an eye-disease
(D) in his medical condition the poet is imagining things

46. 'Bacteria as large as mice' is an instance of a/an :

(A) simile and a hyperbole

(B) metaphor
(C) personification
(D) alliteration

47. 'Who never interrupt for slumber Their stamping elephantine rumba.' The meaning of these lines is that :
(A) the bacteria are continuously stamping their elephant-like feet
(B) the cold-causing germs are causing much discomfort and pain to the poet without any break
(C) the bacilli are so active that they refuse to go to sleep
(D) the poet is not able to concentrate on his work due to the raging cold

48. The general tone of the poem can be described as :
(A) satirical and harsh
(B) ironical and mocking
(C) whimsical and humorous
(D) sad and tragic

Direction (Q. No. 49 to 54)

Read the poem given below and answer the questions that follow by choosing the **most appropriate** option.

The Hand Holders :
A Tribute To Caregivers

There is no job more important than yours,
no job anywhere else in the land.
You are the keepers of the future;
You hold the smallest of hands.
Into your care you are trusted
to nurture and care for the young,
and for all of your everyday heroics,
your talents and skills go unsung.
You wipe tears from the eyes of the injured.
You rock babies brand new in your arms.
You encourage the shy and unsure child.
You make sure they are safe from all harm.
You foster the bonds of friendships,
letting no child go away mad.
You respect and you honour their emotions.
You give hugs to each child when they're sad.
You have more impact than does a professor,
a child's mind is moulded by four;
so whatever you lay on the table
is whatever the child will explore.
Give each child the tools for adventure,
let them be artists and writers and more;
let them fly on the wind and dance on the stars
and build castles of sand on the shore.
It is true that you don't make much money
and you don't get a whole lot of praise, but
when one small child says "I love you",
you're reminded of how this job pays.

Author unknown

49. The expression 'the smallest of hands' refers to :
(A) caregivers with small hands
(B) parents with small hands
(C) people with small hands
(D) babies

50. Though caregivers look after the young they are :
(A) not properly recognised
(B) not loved by the children under their care
(C) paid very well in return
(D) never tired of their work

51. A caregiver has more influence on a child than a professor because :
(A) the professor is not capable of providing love to a child
(B) the child spends the formative years with the caregiver
(C) the caregiver can teach better than a professor
(D) the child generally prefers a caregiver to a professor

52. What is the most valuable gift that a caregiver gets?
(A) Praise from the parents
(B) Money for her services
(C) Love from children
(D) Acknowledgement of the society

53. 'You give hugs to each child when they're sad.' This act can be described as one of :
(A) encouragement
(B) recrimination
(C) reassurance
(D) empathy

54. 'Letting no child go away mad' – the meaning of this line is :
(A) no child is permitted to go away from school without permission
(B) no child is allowed to become mad
(C) no caregiver is permitted to be mad with a child
(D) no child is allowed to be angry for long

Answers Key

Passage

1. (B) **2.** (A) **3.** (A) **4.** (C) **5.** (C)
6. (C) **7.** (C) **8.** (D) **9.** (C) **10.** (B)
11. (D) **12.** (C) **13.** (A) **14.** (B) **15.** (C)
16. (A) **17.** (A) **18.** (D) **19.** (B) **20.** (A)
21. (B) **22.** (B) **23.** (A) **24.** (A) **25.** (A)
26. (D) **27.** (B) **28.** (D) **29.** (B) **30.** (C)
31. (C) **32.** (A) **33.** (A) **34.** (A) **35.** (B)
36. (A) **37.** (C) **38.** (C) **39.** (D) **40.** (C)
41. (A) **42.** (D) **43.** (B) **44.** (C) **45.** (A)
46. (D) **47.** (C) **48.** (B) **49.** (A) **50.** (C)
51. (A) **52.** (C) **53.** (D) **54.** (A) **55.** (D)
56. (C) **57.** (D) **58.** (B) **59.** (A) **60.** (D)
61. (C) **62.** (A) **63.** (B) **64.** (A) **65.** (B)
66. (D) **67.** (B) **68.** (B) **69.** (A) **70.** (A)
71. (B) **72.** (B) **73.** (B)

Poem

1. (C) **2.** (D) **3.** (C) **4.** (A) **5.** (A)
6. (D) **7.** (A) **8.** (D) **9.** (C) **10.** (D)
11. (B) **12.** (B) **13.** (B) **14.** (C) **15.** (C)
16. (A) **17.** (D) **18.** (A) **19.** (B) **20.** (B)
21. (A) **22.** (C) **23.** (C) **24.** (B) **25.** (D)
26. (B) **27.** (B) **28.** (C) **29.** (B) **30.** (B)
31. (D) **32.** (D) **33.** (B) **34.** (D) **35.** (C)
36. (C) **37.** (B) **38.** (D) **39.** (D) **40.** (B)
41. (C) **42.** (D) **43.** (A) **44.** (D) **45.** (A)
46. (A) **47.** (B) **48.** (A) **49.** (D) **50.** (A)
51. (B) **52.** (C) **53.** (C) **54.** (C)

❑❑

अध्याय
1

प्राचीन भारत का इतिहास

बीती हुई घटनाओं के अध्ययन को इतिहास कहते हैं। इससे हमें उन प्रक्रियाओं को समझने में मदद मिलती है जिन्होंने मानव को अपने वातावरण पर विजय प्राप्त करने की तथा आज की सभ्यता का विकास करने की क्षमता दी। इसमें उपलब्ध स्रोतों के आधार पर एक लम्बी अवधि के समाज, अर्थव्यवस्था और सांस्कृतिक प्रवृत्तियों का विश्लेषण किया जाता है। इतिहासकार इस समय के दौरान आई विभिन्न स्थितियों का मूल्यांकन करता है और प्रश्न उठता है कि कुछ घटनाएँ क्यों घटीं और यह भी देखता है कि समस्त समाज पर उनका प्रभाव क्या रहा? इतिहास का शाब्दिक अर्थ है, 'ऐसा हुआ'। अंग्रेजी में इसका अनुवाद History (हिस्ट्री) किया जाता है।

प्राचीन भारतीय इतिहास के पुनर्निर्माण के स्रोत

प्राचीन भारतीय इतिहास की पुनःसंरचना के लिए प्रयुक्त स्रोत सामग्री की आवश्यकता होती है। लेकिन स्वयं स्रोत अतीत को हमारे सामने नहीं लाते। प्राचीन भारत को जानने के लिए इसके स्रोतों को दो भागों में वर्गीकृत किया जाता है :

(1) साहित्यिक स्रोत

(2) गैर–साहित्यिक स्रोत

मुद्रा शास्त्र, सिक्के, कागजी मुद्रा आदि के संग्रह एवं उसे अध्ययन का ज्ञान है। यह इतिहास और संस्कृति को जानने का सर्वाधिक विश्वसनीय दिलचस्प माध्यम है।

1. पाषाण काल या प्रागैतिहासिक काल (Stone Age or Prehistoric Time)

जिस काल का कोई लिखित साक्ष्य नहीं मिलता है, उसे 'प्रागैतिहासिक काल' कहते हैं। 'आद्य–ऐतिहासिक काल' में लिपि के साक्ष्य तो हैं किन्तु उनके अपठ्य या दुर्बोध होने के कारण उनसे कोई निष्कर्ष नहीं निकलता। जब से लिखित विवरण मिलते हैं, वह **'ऐतिहासिक काल'** है। प्रागैतिहास के अंतर्गत पाषाण कालीन सभ्यता तथा आद्य–इतिहास के अंतर्गत सिंधु घाटी सभ्यता एवं वैदिक सभ्यता आती है, जबकि छठीं शताब्दी ईसा पूर्व से ऐतिहासिक काल का आरंभ होता है। सर्वप्रथम 1863 ई. में भारत में पाषाण कालीन सभ्यता का अनुसंधान प्रारंभ हुआ। उपकरणों की भिन्नता के आधार पर संपूर्ण पाषाण युगीन संस्कृति को तीन मुख्य चरणों में विभाजित किया गया। ये हैं–पुरापाषाण काल, मध्य पाषाण काल और नवपाषाण काल।

उपकरणों की भिन्नता के आधार पर पुरापाषाण काल को भी तीन कालों में विभाजित किया जाता है–

1. पूर्व पुरापाषाण काल–हस्तकुठार, खंडक, विदारिणी,

2. मध्य पुरापाषाण काल–फलक उपकरण तथा

3. उच्च पुरापाषाण काल–तक्षिणी एवं खुरचनी उपकरण।

सर्वप्रथम पंजाब की सोहन नदी घाटी (पाकिस्तान) से चापर–चापिंग पेबुल संस्कृति के उपकरण प्राप्त हुए। फलकों की अधिकता के कारण मध्य पुरापाषाण काल को **'फलक संस्कृति'** भी कहा जाता है। इन उपकरणों का निर्माण क्वार्टजाइट पत्थरों से किया गया है। पुरापाषाणकालीन मानव का जीवन पूर्णतया प्राकृतिक था। वे प्रधानतः शिकार पर निर्भर रहते थे तथा उनका भोजन माँस अथवा कंदमूल हुआ करता था। अग्नि के प्रयोग से अपरिचित रहने के कारण वे माँस कच्चा खाते थे। इस युग का मानव शिकारी एवं खाद्य संग्राहक था। इस काल के मानव को पशुपालन तथा कृषि का ज्ञान नहीं था।

भारत में मध्य पाषाण काल के विषय में जानकारी सर्वप्रथम 1867 ई. में हुई जब सी.एल. कार्लाइल ने विंध्य क्षेत्र से लघु पाषाणोपकरण (Microliths) खोज निकाले। मध्यपाषाण काल के विशिष्ट औजार सूक्ष्म पाषाण या पत्थर के बहुत छोटे औजार हैं। राजस्थान के भीलवाड़ा नामक स्थान के पास बागोर में पशुपालन के परिणाम प्राप्त हुए हैं। भारत में मानव अस्थि पंजर सर्वप्रथम मध्यपाषाण काल से ही प्राप्त होने लगे हैं। गुजरात स्थित लंघनाज सबसे महत्वपूर्ण पुरास्थल है। यहाँ से लघु पाषाणोपकरणों के अतिरिक्त पशुओं की हड्डियाँ, कब्रिस्तान तथा कुछ मिट्टी के बर्तन भी प्राप्त हुए हैं।

पशुपालन का प्रारंभ मध्यपाषाण काल में हुआ। पशुपालन के साक्ष्य भारत में आदमगढ़ (होशंगाबाद म.प्र.) तथा बागोर (भीलवाड़ा, राजस्थान) से प्राप्त हुए हैं।

भीमबेटका की गुफा को देखने वाले पहले व्यक्ति वी. एस. वांककर हैं। इन्होंने सर्वप्रथम इस गुफा के शैलचित्र के प्रागैतिहासिक महत्त्व को खोजा। भीमबेटका की गुफा मध्य प्रदेश के रायसेन जिले में स्थित एक पुरापाषाणिक आवासीय पुरास्थल है।

2. सिन्धु घाटी सभ्यता (2350 ई. पू.–1750 ई. पू.) (Indus Valley Civilization)

सिंधु घाटी सभ्यता को भारत के अतीत की पहली तस्वीर माना जाता है, जिसके अवशेष सिंधु में मोहनजोदड़ो और पश्चिमी पंजाब में हड़प्पा में मिले हैं। यह सभ्यता विशेष रूप से उत्तर भारत में दूर तक फैली थी। यह एक नगरीय सभ्यता का उदाहरण है। सिन्धु घाटी सभ्यता के लोगों को लौह धातु की जानकारी नहीं थी।

- **सर जॉन मार्शल**, वर्ष 1902 से 1928 तक भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के महानिदेशक थे। इनके द्वारा ही हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की खुदाई की देख–रेख की गयी। वर्ष 1920 में मार्शल ने हड़प्पा में तथा वर्ष 1922 में मोहनजोदड़ो में खुदाई आरम्भ की। इन्होंने ही वर्ष 1924 में सिन्धु घाटी में नई सभ्यता की खोज की घोषणा की थी। 'ऐलेक्जेण्ड कनिघंम' को भारतीय पुरातत्व का जनक कहा जाता है। 'आर.ई. व्हीलर' (राबर्ट एरिक व्हीलर) भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के महानिदेशक थे।
- मोहनजोदड़ो का शाब्दिक अर्थ है–मृतकों का टीला। मोहनजोदड़ो, सैंधव सभ्यता के प्राचीन बड़े नगरों में से एक था। मोहनजोदड़ो से प्राप्त महास्नानागार सैंधव सभ्यता की सबसे महत्वपूर्ण इमारत है। इस स्नानागार के मध्य स्थित स्नानकुण्ड 11.88 मी लम्बा, 7.01 मी चौड़ा एवं 2.43 मी गहरा है। इसका उपयोग सम्भवतः आनुष्ठानिक क्रिया–कलापों के लिए किया जाता था।
- सर्वाधिक संख्या में मुहरें मोहनजोदड़ो से प्राप्त हुई है जो मुख्यतः चौकोर है।

- हड़प्पा सभ्यता विश्व की प्राचीन नदी–घाटी सभ्याताओं में से एक प्रमुख सभ्यता है, जो मुख्य रूप से दक्षिण एशिया के उत्तर–पश्चिमी क्षेत्रों में फैली है। इसकी सर्वमान्य तिथि कार्बन डेटिंग पद्धति द्वारा 2300-1750 ई.पू. मानी गई है। इस परिपक्व हड़प्पाई सभ्यता तथा सिंधु घाटी सभ्यता के अधिकतर स्थल घग्गर–हकरा नदी (सरस्वती) के (आर्द्र) तल के साथ–साथ पाये जाते हैं।
- लोथल, प्राचीन सिन्धु घाटी सभ्यता के शहरों में से एक बहुत ही महत्वपूर्ण शहर है। लगभग 2400 ईसा पूर्व पुराना यह शहर भारत के गुजरात राज्य के भाल क्षेत्र में स्थित है और इसकी खोज वर्ष 1954 में रावनाथ द्वारा की गई थी। लोथल बंदरगाह विश्व का प्राचीनतम बंदरगाह (पतन) है। यह एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र था। यहाँ से मोती, जवाहरात व कीमती गहनें पश्चिम एशिया व अफ्रीका में भेजे जाते थे।
- सिन्धु समाज उचित समतावादी था। यहाँ के सुनियोजित नगरों के भवन पक्की ईंटों से बने थे तथा सड़कें समकोण पर काटती थीं। इस सभ्यता के लोगों को लोहे का ज्ञान नहीं था। यह समाज मातृ प्रधान था तथा मातृदेवी की पूजा भी की जाती थी। योनि पूजा, पशुपति पूजा के भी प्रमाण मिले हैं। इनका व्यवसाय पशुपालन भी था।
- इस अज्ञात सभ्यता की खोज रायबहादुर दयाराम साहनी ने की थी तथा यह कार्य वर्ष 1921 में सर जॉन मार्शल के नेतृत्व में किया था। इस सभ्यता की लिपि को सर्वप्रथम पढ़ने का प्रयास 1954 में हंटर महोदय ने किया था। इस लिपि को ''गोमूत्रिका शैली'' या बास्त्रोफेदन कहा जाता है।

  सिन्धु के लोग कपास का उत्पादन करने वाले पहले व्यक्ति थे। इस सभ्यता में लोग घोड़े से परिचित थे। यहाँ घोड़े की अस्थियों के अवशेष सुरकोटदा (गुजरात) से प्राप्त हुए हैं। हड़प्पा कालीन धौलावीर (गुजरात) ऐसा नगर या जो तीन भागों में विभाजित था।

  स्वतंत्रता के बाद भारत में हड़प्पा के सबसे अधिक स्थल हरियाणा व पंजाब से प्राप्त हुये हैं।

हड़प्पाकालीन स्थल (Harrapan Sites)

प्रमुख स्थल	उत्खननकर्ता	वर्ष	वर्तमान स्थिति
हड़प्पा	श्री दयाराम साहनी	1921	पाकिस्तान के पंजाब प्रान्त में
मोहनजोदड़ो	राखालदास बनर्जी	1922	पाकिस्तान के सिन्ध प्रान्त में
सुत्कागेंडोर	ऑरल स्टाइन	1927	बलूचिस्तान
सुतकाकोह	जॉर्ज वेल्स	1962	बलूचिस्तान
बालाकोट	जॉर्ज वेल्स	1962	बलूचिस्तान
अमरी	जे. एम. कजाक	1959-61	सिन्ध
लोथल	एस. एम. तलवार, एस. आर. राव	1953-56	अहमदाबाद (गुजरात)
कालीबंगा	बी. बी. लाल एवं वी. के. थापर	1961	गंगानगर (राजस्थान)
बनवाली	रविन्द्र सिंह विष्ट	1973-74	हिसार (हरियाणा)
कोटदीजी	फजल अहमद खाँ	1955-57	सिन्ध प्रांत (पाकिस्तान)
देसलपुर	पी. पी. पाण्डेय और एम. ए. ढाके	—	भुज जिला (गुजरात)
सुरकोटदा	जगपति जोशी	1964	कच्छ (गुजरात)
रंगपुर	माधवस्वरूप वत्स	1931	अहमदाबाद (गुजरात)
राखीगढ़ी	सूरज भान	1969	हिसार (हरियाणा)
चन्हूदड़ो	गोपाल मजूमदार व अर्नेस्ट मैके	1931	सिंध (पाकिस्तान)

स्थल एवं नदी तट (Sites and River Banks)

स्थल	नदी तट
1. हड़प्पा	रावी
2. मोहनजोदड़ो	सिन्धु
3. लोथल	भोगवा
4. कालीबंगा	घग्घर
5. सुतकागेंडोर	दाश्क
6. चन्हूदड़ो	सिन्धु
7. बनवाली	घग्घर
8. सुरकोटदा	सरस्वती
9. मंडा	चिनाब
10. आलमगीरपुर	हिंडन
11. राखीगढ़ी	घग्घर
12. रोपड़	सतलज

प्रमुख वैदिक नदियाँ व उनके आधुनिक नाम

वैदिक नदी	आधुनिक नदी
1. कुथा	काबुल
2. परुष्णी	रावी
3. सदानीरा	गंडक
4. सुतुद्री	सतलज
5. विपाशा	ब्यास
6. विस्तारा	झेलम
7. आस्किनी	चेनाब
8. गोमल	गोमती

3. वैदिक सभ्यता एवं संस्कृति (Vedic Civilization & Culture)

वैदिक सभ्यता—हड़प्पा सभ्यता के पतन के बाद भारत में एक नई सभ्यता का विकास हुआ, जिसे वैदिक सभ्यता का नाम दिया गया। इनकी जानकारी हमें वेदों से प्राप्त होती है। यह सभ्यता भी हड़प्पा सभ्यता के क्षेत्र में ही जन्मी और धीरे–धीरे गंगा–यमुना के मैदानों में विकसित होती चली गई।

वैदिक सभ्यता के लोगों ने देवी–देवताओं के सम्मान में ऋचाओं का निर्माण किया। इन ऋचाओं का संकलन चार वेदों (ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद) में किया। वैदिक सभ्यता के लोग आर्य कहलाते थे।

वैदिक सभ्यता के लोग प्रारम्भ में घुमक्कड़ जीवन व्यतीत करते थे, परन्तु बाद में ये लोग बस्तियों में बसने लगे थे। आर्य समाज पितृसत्तात्मक होने के बाद भी यहाँ स्त्रियों का सम्मान और आदर किया जाता था।

वैदिक संस्कृति—चारों वेदों यथा ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद में वर्णित संस्कृति को वैदिक संस्कृति कहा जाता है। वैदिक संस्कृति के प्रणेता 'आर्य' थे। वैदिक संस्कृति को निम्नलिखित भागों में विभाजित किया जाता है—

- ऋग्वैदिक काल (1500 ई. पू. से 1000 ई. पू. तक)
- ऋग्वेद काल में स्थानीय स्वशासन की तीन इकाईयाँ थी—विधाता, सभा व समिति। विधाता धार्मिक व सेना वाले, काम, सभा–न्यायिक काम व समिति राजनीतिक कार्य करती थी।
- उत्तर वैदिक काल (1000 ई. पू. से 600 ई. पू. तक)
- वैदिक सभ्यता सरस्वती नदी के किनारे फली–फूली थी। ऋग्वेद में इस नदी को नदीतमा (पवित्र नदी) कहा गया है। ऋग्वेद के चौथे मण्डल को छोड़कर सरस्वती नदी का सभी मण्डलों में कई बार उल्लेख किया गया है।
- आर्यों के निवास क्षेत्र को सप्त सैन्धव प्रदेश कहा गया है। सप्त सिन्धु या सैंधव में प्रमुख सात नदियाँ सिन्धु, सरस्वती, सतलुज, व्यास, रावी, झेलम तथा चिनाब हैं।
- वैदिक काल में आर्यों की आर्थिक स्थिति का मूलाधार पशुधन ''गाय'' मुद्रा की भाँति समझी जाती थी।

विद्वान	आर्यों का मूल निवास स्थान
1. मैक्समूलर	मध्य एशिया (बैक्ट्रिया)
2. बाल गंगाधर तिलक	उत्तरी ध्रुव
3. दयानन्द सरस्वती	तिब्बत
4. गाइल्स	हंगरी अथवा डेन्यूब नदी

4. वैदिक साहित्य (Vedic Literature)

वैदिक सभ्यता सरस्वती नदी के तट पर विकसित हुई।

वेद शब्द 'विद' से बना है, जिसका अर्थ **ज्ञान अथवा बुद्धिमत्ता** से होता है। इन्हें ''श्रुति'' भी कहा जाता है। वेद 04 प्रकार के हैं—

(i) ऋग्वेद, (ii) सामवेद, (iii) यजुर्वेद तथा (iv) अथर्ववेद।

ऋग्वेद, सामवेद तथा यजुर्वेद को ''वेदात्रयी'' कहते हैं।

I. वेद या मंत्र संग्रह (Vedas or Collection of Hymns)

वेदों के संकलनकर्त्ता **महर्षि कृष्ण द्वैपायन वेद व्यास** हैं।

(i) ऋग्वेद—यह प्राचीनतम वेद है तथा इसमें 1028 सूक्त तथा 10 मंडल हैं। दसवें मंडल में ही पुरुष सूक्त है जिसमें चारों वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) का उल्लेख है।

गायत्री मंत्र ऋग्वेद के तीसरे मण्डल से लिया गया है जो सावित्री को समर्पित है।

इन्द्र, ऋग्वेद में वर्णित सर्वाधिक महत्वपूर्ण देवता हैं। उन्हें आर्यों का संरक्षक तथा वर्षा का देवता माना जाता है।

योग का वर्णन ऋग्वेद में किया गया है।

ऋग्वेद में अधन्य शब्द सामान्य रूप से गाय के लिए प्रयुक्त हुआ है।

(ii) सामवेद—इसमें **1549** ऋचायें हैं। इसका सम्बन्ध संगीत से है। इसके पुरोहित ''उद्गाता'' कहलाते हैं।

(iii) यजुर्वेद—इसका सम्बन्ध यज्ञों से है। इसके दो भाग हैं—कृष्ण यजुर्वेद तथा शुक्ल यजुर्वेद। इसके पुरोहित 'अध्वर्यु' कहलाते हैं।

(iv) अथर्ववेद—यह जादू–टोना तंत्र–मंत्र से सम्बन्धित है।

II. ब्राह्मण (Brahmins)

ये गद्य में रची गई टिप्पणियाँ हैं, जो संहिता के मंत्रों की उत्पत्ति और अर्थ स्पष्ट करती हैं। ये निम्न हैं—

ऋग्वेद—ऐतरेय तथा कौशीतकी

सामवेद—पंचविश षड्विश, जैमिनीय तथा छांदोग्य

यजुर्वेद—शतपथ तथा तैत्तीरीय

अथर्ववेद—गोपथ

III. आरण्यक (Aranyaks)

हर ब्राह्मण का दार्शनिक भाग, जंगलों में रहने वाले तपस्वियों के मार्गदर्शन हेतु संगृहीत है।

IV. उपनिषद् या वेदांत (Upnishads & Vedanta)

हर ब्राह्मण के अन्त में यह प्रस्तुत है। यह आर्यों के प्राचीन ग्रंथों में निहित आध्यात्मिक सिद्धान्तों का निचोड़ है। लगभग 108 उपनिषद् उपलब्ध हैं जिसमें मुख्य है—ऐतरेय, तैत्तिरीय, छांदोग्य, कोशीतकी, वृहदारण्य आदि। उपनिषद में ज्ञान के सिद्धान्त को महत्व दिया गया हैं। इसमें ब्रह्म और आत्मा के स्वभाव तथा सम्बन्धों की दार्शनिक व्याख्या की गई है।

उपनिषद् ज्ञान के सिद्धान्त पर बल देता है।

V. अन्य साहित्य (Other Literatures)

(i) वेदांग—वेदांग छः हैं—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद तथा ज्योतिष। इसमें सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कल्पसूत्र है जो आर्यों के गृहस्थ जीवन से सम्बन्धित है।

(ii) उपवेद

(a) ऋग्वेद—आयुर्वेद (चिकित्साशास्त्र से सम्बन्धित)

(b) यजुर्वेद—धनुर्वेद (युद्ध कला से सम्बन्धित)

(c) सामवेद—गांधर्ववेद (कला एवं संगीत से सम्बन्धित)

(d) अथर्ववेद—शिल्पवेद (भवन निर्माण कला से सम्बन्धित)

हिन्दुओं के **छः विख्यात** दार्शनिक सम्प्रदाय भी वैदिक साहित्य में आते हैं। ये छः प्रणालियाँ निम्नलिखित हैं—

गौतम	न्याय प्रणाली
कपिल	सांख्य दर्शन
कणाद	वैशेषिक
पतंजलि	योगदर्शन
जैमिनी	पूर्व मीमांसा
व्यास	उत्तर मीमांसा

- रामायण एवं महाभारत, दो महाकाव्य हैं। रामायण के रचयिता महर्षि वाल्मीकि तथा महाभारत के रचयिता महर्षि वेदव्यास हैं। महाभारत को ''जयसंहिता'' तथा ''सतसहस्री संहिता'' के नाम से तथा रामायण को ''चतुर्विंशति सहस्री संहिता'' के नाम से जाना जाता है।
- भगवद्गीता मूलतः शास्त्रीय संस्कृत में लिखी गई है, परन्तु इसे अब तक 175 भाषाओं में अनुवादित किया जा चुका है। भगवद्गीता के अनुसार, भगवान के साथ जुड़ने का प्रथम मार्ग 'भक्ति' तथा दूसरा मार्ग ज्ञान है।
- भगवद्गीता में 18 अध्याय और 700 श्लोक हैं। कुरुक्षेत्र की युद्ध भूमि में श्रीकृष्ण ने अर्जुन को जो उपदेश दिए थे, वह श्रीमद् भगवद्गीता के नाम से प्रसिद्ध हैं। यह महाभारत के भीष्म पर्व का अंग है।
- महाभारत के 16वें अध्याय में श्रीमद् भगवद्गीता वर्णित है। यह हिन्दुओं के पवित्र ग्रन्थों में से एक है तथा महाभारत के भीष्म पर्व के अन्तर्गत दिया गया एक उपनिषद् है। भगवद्गीता में एकेश्वरवाद, कर्म योग, ज्ञानयोग व भक्ति योग का अद्भुत वर्णन किया गया है। महाभारत में वर्णित कुरुक्षेत्र की लड़ाई 18 दिन तक चली।
- शंकराचार्य एक महान दार्शनिक व धर्म प्रवर्तक थे। वे अद्वैत दर्शन के प्रमुख प्रवर्तक थे। उन्होंने सनातन धर्म की अनेक विचारधाराओं का एकीकरण किया। उन्होंने उपनिषदों व वेदांतसूत्रों पर अनेक टीकाएँ भी लिखीं। इसके अतिरिक्त उन्होंने भारतवर्ष के चार मठों की स्थापना की, जिनके नाम ज्योतिषपीठ बदरीकाश्रम (उत्तराखण्ड), गोवर्धन मठ (पुरी, उड़ीसा), श्रंगेरी शारदा मठ (चिकमंगलूर, तमिलनाडु), शारदा मठ (द्वारका, गुजरात) हैं।
- योग दर्शन के प्रवर्तक महर्षि पतंजलि थे।
- कपिल को सांख्य दर्शन का प्रवर्तक माना जाता है।
- कणाद वैशेषिक दर्शन के प्रवर्तक है।
- जैमिनी मीमांस दर्शन के प्रमुख प्रवर्तक है।
- पुराणों की संख्या 18 है। अधिकांश पुराणों की रचना तीसरी शताब्दी में हुई है।
- सर्वाधिक प्राचीन एवं प्रामाणिक मत्स्य पुराण है जिसमें विष्णु के 10 अवतारों का उल्लेख है।

5. धार्मिक आन्दोलन (Religious Movements)

ब्राह्मणवाद के विरुद्ध प्रतिक्रिया के रूप में छठी शताब्दी ई. पू. दो सम्प्रदायों का उदय हुआ।

यथा—जैन धर्म तथा बौद्ध धर्म।

I. जैन धर्म (Jainism)

जैन धर्म की स्थापना ऋषभदेव ने की जो जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर माने जाते हैं। जैनधर्म की स्थापना का वास्तविक श्रेय 24वें तीर्थंकर वर्धमान महावीर को जाता है।

- 24वें व अंतिम तीर्थंकर महावीर स्वामी का जन्म वैशाली के निकट कुण्डग्राम (वाज्जिसंघ का गणतन्त्र) में 540 ई. पू. में हुआ था। इनके बचपन का नाम वर्धमान था।
- महावीर स्वामी के पिता सिद्धार्थ तथा माता त्रिशला, जो लिच्छिवी के राजा चेटक की बहन थीं।
- महावीर स्वामी का विवाह यशोदा के साथ हुआ था। इनकी पुत्री का नाम **अनोज्जा (प्रियदर्शना)** तथा दामाद का नाम **जमालि** था।
- महावीर स्वामी को 12 वर्ष की गहन तपस्या के बाद **जुम्भिकग्राम** के समीप ऋजुपालिका नदी के तट पर साल वृक्ष के नीचे सर्वोच्च ज्ञान (कैवल्य) की प्राप्ति हुई। इसी समय महावीर स्वामी **जैन (विजेता)**, अर्हत (पूज्य) तथा निर्गन्ध (बंधनहीन) कहलाए।
- जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ द्वारा प्रतिपादित चार महाव्रत—**सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह** तथा **अस्तेय** में महावीर स्वामी ने पाँचवाँ ब्रह्मचर्य जोड़ा।
- जैन धर्म दो पंथों में बँटा—श्वेताम्बर (श्वेत वस्त्र धारण करने वाले), दिगम्बर (नग्न रहने वाले)।
- लगभग 72 वर्ष की आयु में 468 ई. पू. में महावीर स्वामी की राजगृह के समीप **पावापुरी** (राजगीर) में मृत्यु हो गई।
- जैन धर्म के त्रिरत्न हैं—**सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् आचरण**।
- जैन धर्म को राष्ट्रकूट का संरक्षण प्राप्त था।

जैन धर्म के चौबीस तीर्थंकर और उनके चिह्न

- श्री ऋषभनाथ—बैल,
- श्री अजितनाथ—हाथी,
- श्री संभवनाथ—अश्व (घोड़ा),
- श्री अभिनंदननाथ—बंदर,
- श्री सुमतिनाथ—चकवा,
- श्री पद्मप्रभ—कमल,
- श्री सुपार्श्वनाथ—साथिया (स्वस्तिक),
- श्री चन्द्रप्रभ—चन्द्रमा,
- श्री पुष्पदंत—मगर
- श्री शीतलनाथ—कल्पवृक्ष
- श्री श्रेयांसनाथ—गैंडा
- श्री वासुपूज्य—भैंसा,
- श्री विमलनाथ—शूकर,
- श्री अनंतनाथ—सेही,
- श्री धर्मनाथ—वज्रदंड,
- श्री शांतिनाथ—मृग (हिरण),
- श्री कुंथुनाथ—बकरा
- श्री अरहनाथ—मछली
- श्री मल्लिनाथ—कलश
- श्री मुनिसुव्रतनाथ—कच्छप (कछुआ)
- श्री नमिनाथ—नीलकमल
- श्री नेमिनाथ—शंख
- श्री पार्श्वनाथ—सर्प
- श्री महावीर—सिंह

जैन सभाएँ (Jain Councils)

जैनसभा	वर्ष	शासक	अध्यक्ष
प्रथम (पाटलिपुत्र)	300 ई. पू.	चंद्रगुप्त मौर्य	स्थूल भद्रबाहु
द्वितीय (बल्लभी) गुजरात	512 ई.	ध्रुवसेन	देवार्द्ध क्षमाश्रवण

II. बौद्ध धर्म (Buddhism)

गौतम बुद्ध को बौद्ध धर्म का प्रवर्तक माना जाता है। ये महावीर के समकालीन थे। ज्ञान प्राप्त करने के बाद इन्हें बुद्ध कहा जाने लगा था।

- बुद्ध का अर्थ ज्ञान प्राप्ति होता है।
- उन्होंने सांसारिक दुःखों से मुक्ति पाने के लिए 29वें वर्ष में गृह त्याग किया। इस घटना को बौद्ध ग्रंथों में **महाभिनिष्क्रमण** कहा गया है।
- कई वर्षों की तपस्या के बाद 35 वर्ष की आयु में एक दिन **बोधगया (उरूवेला)** के निकट एक पीपल के वृक्ष के नीचे उन्हें ज्ञान का बोध हुआ और तब से बुद्ध हो गये।
- उन्होंने अपना प्रथम उपदेश **सारनाथ** (ऋषिपतन) में दिया। बौद्ध परम्परा में इसे **धर्मचक्रप्रवर्तन** के नाम से जाना जाता है।

  गौतम बुद्ध द्वारा अपने धर्म में दीक्षित किया जाने वाला अन्तिम व्यक्ति सुभद्दा था।

महाबोधि मन्दिर समूह बोधगया (गया, बिहार) में अवस्थित है। महाबोधि मन्दिर समूह में स्थित महाबोधि मन्दिर के निकट 'बोधिवृक्ष' है, जिसके नीचे महात्मा बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। यहीं से गौतम बुद्ध ने दुनिया के लिए बौद्ध धर्म के अपने दिव्य ज्ञान का प्रचार किया था। महाबोधि मन्दिर समूह में स्थित महाबोधि मन्दिर का निर्माण मौर्य शासक अशोक ने 250 ई. पू. में करवाया था।

- बिहार में स्थित प्रसिद्ध बौद्ध स्थल बोधगया, निरंजना नदी के तट पर स्थित है। इसे फाल्गू नदी भी कहा जाता है।
- महायान वर्तमान में बौद्ध धर्म की दो प्रमुख शाखाओं में से एक है, जिसका आरम्भ पहली शताब्दी के आस–पास माना जाता है। ये महात्मा बुद्ध की देवतुल्य उपासना करते थे। इस शाखा के अन्तर्गत बुद्ध की पहली मूर्ति बनी तथा बुद्ध की मूर्ति पूजा यहीं से शुरू हुई थी।
- नागार्जुन, महायान बौद्ध सम्प्रदाय के महत्वपूर्ण दार्शनिक थे। उन्हें बौद्ध धर्म की शाखा 'माध्यमिका' का प्रवर्तक माना जाता है। 'प्रज्ञापारमिता सूत्र' इनकी प्रमुख रचना है, जिसमें 'माध्यमिका दर्शन' का विवरण है। गौतम बुद्ध की माँ देवदह राज्य के शासक परिवार से जो अब उत्तर प्रदेश के महाराजगंज में हैं।

बौद्ध धर्म के चार आर्य सत्य (Four Noble Truth of Buddhism)

दुःख	अर्थात् समस्त संसार दुःखमय है।
दुःख समुदाय	संसार के समस्त दुःखों का कारण इच्छा या तृष्णा अथवा लालसा है।
दुःख निरोध	इच्छाओं या तृष्णाओं को अपने वशीभूत रखकर ही दुःख को खत्म किया जा सकता है।
दुःख निरोध गामिनी प्रतिपदा	इसके अन्तर्गत दुःख निवारक मार्ग बताये गये हैं। ये आठ मार्ग हैं जो अष्टांगिक मार्ग कहे जाते हैं।

उनकी शिक्षाएँ, जिन्हें बौद्ध धर्म कहा जाता है, चार आर्य सत्यों पर आधारित हैं–

दुःख	:	संसार में दुःख है।
दुःख समुदाय	:	दुःख के कारण हैं
निरोध	:	दुःख का निवारण हो सकता है
मार्ग	:	इसके निवारण के लिए अष्टांगिक मार्ग है।

- दुःखों का अस्तित्व है।
- दुःख इच्छाओं से उत्पन्न होता है तथा अधूरी इच्छाएँ पुनर्जन्म को प्रवृत्त करती हैं।
- जब इच्छाएँ दूर हो जाती हैं तो पुनर्जन्म नहीं लेना पड़ता है, यही निर्वाण है तथा
- इच्छाओं को विचार, व्यवहार और वाणी में शुद्धता लाकर, अष्टमार्ग पर चलकर जीता जा सकता है।

महात्मा बुद्ध का जीवन परिचय (Biography of Buddha)

जन्म	:	563 ई. पू.
जन्म स्थान	:	लुम्बिनी (कपिलवस्तु) इस स्थान को अशोक के रुम्मिनदेई स्तम्भ से अंकित किया गया है।
पिता	:	शुद्धोधन (शाक्यों के राजा कपिलवस्तु के शासक)
माता	:	महामाया देवी
बचपन का नाम	:	सिद्धार्थ
पालन–पोषण	:	गौतमी प्रजापति (मौसी)
विवाह अवस्था	:	यशोधरा (कोलिय गणराज्य की राजकुमारी)
पुत्र	:	राहुल
मृत्यु	:	काल 483 ई.पू.
स्थान	:	कुशीनगर

(i) अष्टमार्गी सिद्धान्त–यह दुःख निरोध मार्ग है। इसका निरूपण निम्न प्रकार से किया जा सकता है–

(i) सम्यक् ज्ञान,	(v) सम्यक् प्रयत्न,
(ii) सम्यक् इच्छा,	(vi) सम्यक् बुद्धि,
(iii) सम्यक् वाणी,	(vii) सम्यक् समाधि तथा
(iv) सम्यक् जीवन,	(viii) सम्यक् कार्य।

(ii) साहित्य–बौद्ध साहित्य मूलतः पाली भाषा में लिखे गये थे तथा मुख्यतः त्रिपिटकों में समाहित हैं, ये निम्नलिखित हैं–

(a) सुत्तपिटक (b) अभिधम्म पिटक (c) विनय पिटक

इसके अतिरिक्त अग्रलिखित बौद्ध साहित्य उल्लेखनीय हैं–

(iii) दीपवंश तथा महावंश

(iv) महावस्तु

(v) मिलिन्दपन्हो में यूनानी शासक मिलिन्द तथा बौद्ध भिक्षु नागसेन के दार्शनिक विषय से सम्बन्धी वाद–विवाद का वर्णन किया गया है।

बौद्ध संगीतियाँ
(Buddhist Councils)

बौद्ध संगीति	स्थान	वर्ष	शासक	अध्यक्ष
प्रथम	सप्तपर्णी गुफा (राजगृह)	483 ई. पू.	अजातशत्रु	महकस्यप
द्वितीय	वैशाली	383 ई. पू.	कालाशोक	सबकामी
तृतीय	पाटलिपुत्र	250 ई. पू.	अशोक	मोगलिपुत्र तिस्स
चतुर्थ	कुण्डलवन (कश्मीर)	72 ई.	कनिष्क	वसुमित्र (अध्यक्ष) अश्वघोष (उपाध्यक्ष)

प्राचीन भारत में बौद्धों द्वारा शिक्षा मठों में दी जाती थी। इस स्थान को बौद्ध मठ कहा जाता था।

कालचक्र धर्मानुष्ठान बौद्ध धर्म से सम्बन्धित हैं, बौद्ध धर्म के संस्थापक थे गौतम बुद्ध, जिनका वास्तविक नाम सिद्धार्थ था। इन्हें 35 वर्ष की आयु में निरंजना नदी के किनारे पीपल वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ था।

गौतम बुद्ध ने कौशाम्बी में उदयन के राज्य काल में प्रवेश किया था।

6. संगम युग
(Sangam Age)

दक्षिण भारत में लगभग तीन सौ ईसा पूर्व से तीन सौ ईस्वी के बीच की अवधि को संगम काल या संगम युग के नाम से जाना जाता है। इस युग की अवधि पहली शताब्दी से दूसरी शताब्दी के बीच थी।

सुदूर दक्षिण के संगम युग की जानकारी का प्रमुख स्रोत संगम साहित्य है। संगम साहित्य में हमें तीन प्रमुख राज्यों–**पाण्ड्य, चोल** तथा **चेरों** के विषय में जानकारी मिलती है। ई. की प्रथम शताब्दी से तीसरी शताब्दी ई. पू. के मध्य तक 'संगम युग' का समय माना जाता है।

I. संगम साहित्य (Sangam Literature)

तमिल भाषा में उपलब्ध प्राचीनतम साहित्य 'संगम– साहित्य' है, जो तीन संगमों के उपरान्त तैयार किया गया था। ये संगम पाण्ड्य शासकों के संरक्षण में हुआ था।

(i) प्रथम संगम (First Sangam)–यह संगम पाण्ड्य शासकों के संरक्षण में उनकी प्राचीन राजधानी **'मदुरा'** में **अगस्त्य ऋषि** की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ था।

(ii) द्वितीय संगम (Second Sangam)–द्वितीय संगम को भी पाण्ड्य शासकों का सहयोग प्राप्त हुआ था। यह **कपाटपुरम्** अथवा **अलवै** में शुरू में अगस्त्य ऋषि की अध्यक्षता, लेकिन बाद में तोल्काप्पियर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ था।

(iii) तृतीय संगम (Third Sangam)–यह संगम उत्तरी **मदुरा** में **नक्कीयर** की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ था।

II. प्रमुख तमिल ग्रंथ (Famous Tamil Texts)

(i) तोल्काप्पियम्–यह 'द्वितीय संगम' का एक मात्र शेष ग्रन्थ है। अगस्त्य ऋषि के बारह योग्य शिष्यों में से एक 'तोल्काप्पियर' द्वारा यह ग्रन्थ लिखा गया था।

(ii) पत्तिनपालै–इसकी रचना भी रुद्रनकन्नार ने की। इस ग्रन्थ में प्रेमगीत संगृहीत है।

(iii) सिरुपानात्रुप्पदै–इसकी रचना नत्थनार ने की थी।

(iv) पदिनेकिल्लकणवन्कु–यह तृतीय संगम का तीसरा संग्रह ग्रन्थ है।

III. संगमयुगीन राज्य (Sangam Aged States)

संगम साहित्य से सुदूर दक्षिण के तीन प्रमुख राज्यों–पाण्ड्य, चोल तथा चेर के विषय में जानकारी प्राप्त होती है।

(i) चोल राज्य (Chola Dynasty)

संगमयुगीन राज्यों में सर्वप्रथम चोलों का उदय हुआ था। इस राज्य की प्राचीनतम राजधानी उत्तरी मनलूर थी तथा इसके बाद उरैयूर में बनी। चोलों का राजकीय चिह्न **'बाघ'** था।

इलंजेत चेन्नि–इस वंश का महत्वपूर्ण प्रथम शासक था तथा **कारिकाल** को (मुक्तलसी टाँगों वाला' अर्थात् 'पांव जला व्यक्ति) इलंजेत चेन्नि का पुत्र था। सिंचाई के लिए 16 मील लम्बी चोल झील का निर्माण चोल शासक राजेन्द्र प्रथम द्वारा करवाया गया था।

(ii) पाण्ड्य राज्य (Pandya Dynasty)

प्राचीन पाण्ड्य राज्य चोल राज्य की प्रारम्भिक राजधानी **'कोरकाई'** थी। बाद में इसका केन्द्र **मदुरई** बना। पाण्ड्य राज्य का राजकीय चिह्न 'मछली' था।

(iii) चेर राज्य (Chera Dynasty)

प्राचीन चेर राज्य का राजकीय चिह्न **'धनुष'** था। प्राचीन चेर राज्य की दो राजधानियाँ थीं–वंजि और तोण्डी। इस राज्य के प्रमुख शासक निम्नलिखित थे–उदयनजेराल, नेन्दनजेराल, आदन कुट्टुवन, शेनगुट्टवन आदि।

7. छठी शताब्दी ई. पू. का भारत तथा महाजनपद काल
(6^{th} Century BC India & Mahajanpada Age)

ई. पू. छठी शताब्दी में भारतीय राजनीति में अनेक शक्तिशाली राज्यों का उदय हुआ, जिन्हें महाजनपद कहा गया। महाजनपद सोलह राज्यों का एक समूह था जो प्राचीन भारत में मौजूद थे।

महाजनपद काल प्रायः प्रारम्भिक राज्यों, लोहे के बढ़ते प्रयोग और सिक्कों के विकास के लिए विशेष रूप से जाना जाता है। इसी समय में बौद्ध और जैन सहित अनेक दार्शनिक विचारधाराओं का विकास हुआ।

सोलह महाजनपद (Sixteen Mahajanpadas)

छठी शताब्दी ई.पू. में उत्तरी भारत विभिन्न जनपदों में विभक्त था। बौद्ध ग्रंथ **अंगुत्तर निकाय** तथा जैन ग्रंथ **'भगवती सूत्र'** में सोलह (16) महाजनपदों का उल्लेख है जिसे **षोड्श महाजनपद** कहा जाता था। ये जनपद अग्र प्रकार थे–

महाजनपद (Mahajanpadas)

क्र.	जनपद	स्थिति	राजधानी
1.	काशी	वरुणा तथा आसी नदी के संगम पर	वाराणसी
2.	कौशल	उत्तर प्रदेश के मध्य में उत्तर की ओर	श्रावस्ती
3.	अंग	मगध राज्य के पूर्व में	चम्पानगरी
4.	मगध	आधुनिक बिहार राज्य के गया तथा पटना जिले के मध्य से	राजगृह
5.	मल्ल	वज्जि संघ राज्य के उत्तर में स्थित थी। यह दो भागों में विभाजित था	एक भाग– कुशीनगर दूसरा भाग– पावापुरी
6.	वज्जि	आधुनिक बिहार राज्य के उत्तरी भाग में स्थित। यह आठ राज्यों का एक संघ था	वैशाली
7.	चेदि	केन नदी के तट पर आधुनिक बुन्देलखण्ड में स्थित था	शुक्तिमती
8.	वत्स	आधुनिक इलाहाबाद के पास	कौशाम्बी
9.	कुरु	दिल्ली और मेरठ के समीप स्थित था	इन्द्रप्रस्थ
10.	पांचाल	गंगा यमुना के दोआब में आधुनिक रुहेलखण्ड में स्थित था। यह दो भागों में विभक्त था (क) उत्तरी पांचाल (ख) दक्षिणी पांचाल	आहिक्षत्र काम्पिल्य
11.	अश्मक	गोदावरी नदी के तट पर स्थित था दक्षिण भारत का एकमात्र महाजनपद	पोटली/पोतन
12.	मत्स्य	यह वर्तमान जयपुर, अलवर तथा भरतपुर के कुछ भागों में स्थित था	विराटनगरी
13.	शूरसेन	मत्स्य राज्य के दक्षिण में स्थित था	मथुरा
14.	गान्धार	यह आधुनिक कश्मीर के आस–पास स्थित था	तक्षशिला
15.	कम्बोज	यह कश्मीर, अफगानिस्तान तथा पामीर के भू–भाग तक था	हाटक
16.	अवन्ति	मालवा प्रदेश में स्थित था	उज्जयनी महिष्मती

8. मगध का उत्थान (Rise of Magadh)

छठी शताब्दी ई. पू. में मगध राज्य का उत्थान ब्रहद्रथ वंश से हुआ। इस राज्य के प्रमुख वंश निम्न हैं–

I. हर्यंक वंश (544 ई.पू. से 412 ई.पू.)

II. शिशुनाग वंश (412-344 ई.पू.)

III. नंद वंश (344-324 ई.पू.)

I. हर्यंक वंश (Haryank Dynasty)

हर्यंक वंश का काल 544 ई. पू. से 412 ई. पू. तक माना जाता है। इस वंश का वास्तविक संस्थापक बिम्बिसार, जबकि नागदशक अंतिम शासक था।

(i) बिम्बिसार (श्रेणिक)

- बिम्बिसार (558-491 ई. पू.) हर्यंक वंश का संस्थापक था। इनकी राजधानी **गिरिब्रज (राजगृह)** थी।
- बिम्बिसार ने अपने राजवैध 'जीवक' को अवन्ति नरेश चण्डप्रद्योत की पीलिया (पाण्डु) नामक बीमारी को ठीक करने के लिए भेजा था।

(ii) अजातशत्रु (कुणिक/अशोक चंड)

- बिम्बिसार के पुत्र अजातशत्रु (492-460 ई. पू.) ने उसकी हत्या कर सिंहासन प्राप्त किया।
- अजातशत्रु की हत्या उसके पुत्र उदायिन ने 461 ई. पू. की थी।
- अजातशत्रु ने अपनी राजधानी राजगृह से पाटलिपुत्र स्थानांतरित की।

(iii) उदायिन

- उदायिन ने गंगा एवं सोन नदियों के संगम पर स्थित पाटलिपुत्र को अपनी राजधानी बनाया। **पाटलिपुत्र (वर्तमान पटना)** की स्थापना का श्रेय उदायिन को जाता है।
- बौद्ध ग्रन्थों के अनुसार, उदायिन के तीन पुत्र–अनिरुद्ध, मंडक और नागदशक थे। इस वंश के अंतिम शासक नागदशक के सेनापति शिशुनाग ने 412 ई. पू. में शिशुनाग वंश की स्थापना की।

II. शिशुनाग वंश (Shishunag Dynasty)

- हर्यंक वंश के एक सेनापति शिशुनाग ने उदयिन के पुत्र नागदशक को हटाकर मगध के सिंहासन पर अधिकार करके शिशुनाग वंश की स्थापना की।
- शिशुनाग के शासन काल में राजधानी **पाटलिपुत्र** से बदलकर **वैशाली** ले जायी गयी।
- शिशुनाग वंश का अंतिम शासक नंदिवर्धन था।

III. नन्द वंश (Nanda Dynasty)

- इस वंश का संस्थापक **महापद्मनन्द** को माना जाता है।
- पुराणों में महापद्मनन्द को **सर्वक्षत्रान्तक** कहा गया है।
- नन्द वंश का अन्तिम शासक **धनानन्द** था। इसी के शासन काल में **सिकन्दर** ने भारत पर आक्रमण किया। धनानन्द की चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपने गुरु चाणक्य की सहायता से हत्या कर **मौर्य वंश** की स्थापना की।

9. सिकन्दर का आक्रमण (Alexander's Invasion)

- मेसीडोनिया (मकदूनिया) के शासक फिलिप द्वितीय के पुत्र सिकन्दर ने 326 ई. पू. में सिन्धु नदी पार करके भारत की धरती पर कदम रखा तथा झेलम नदी के तट पर राजा पोरस के साथ उसने 'वितस्ता का युद्ध' लड़ा।

- वितस्ता के युद्ध में पोरस की विशाल सेना पराजित हुई और पोरस को बन्दी बना लिया गया। सिकन्दर भारत में लगभग 19 महीने तक रहा। 323 ई. पू. में बेबीलोन पहुँचकर सिकन्दर का निधन हो गया।
- नियार्कस, आनेसिक्रिटस तथा अरिस्टोब्यूलस सिकन्दर के समकालीन थे।
- झेलम नदी के तट पर राजा पोरस तथा सिकन्दर के मध्य युद्ध हुआ था। इस युद्ध को हाइडस्पीरा के युद्ध के नाम से जाना जाता है।

10. मौर्य साम्राज्य (322-184 ई.पू.) (Mauryan Empire)

25 वर्ष की अवस्था में चन्द्रगुप्त मौर्य तथा विष्णुगुप्त ने अपनी योग्यता तथा कूटनीति से अन्तिम नन्द शासक धनानंद के विशाल साम्राज्य को **ध्वस्त करके मौर्य वंश की आधारशिला रखी।**

I. **चन्द्रगुप्त मौर्य (321-297 ई.पू.)**—305 ई.पू. में सीरिया के यूनानी शासक सेल्यूकस को पराजित किया तथा उसने सेल्यूकस की पुत्री **हेलेन** से विवाह किया। **मेगस्थनीज ने मौर्य प्रशासन पर 'इण्डिका'** नामक पुस्तक लिखी। चन्द्रगुप्त ने भद्रबाहु से जैन धर्म की दीक्षा ली तथा 298 ई. पू. उसकी मृत्यु हो गई।
चन्द्रगुप्त मौर्य के गुरू कौटिल्य थे जिन्होंने प्रसिद्ध व महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ अर्थशास्त्र की रचना की।

II. **बिन्दुसार (297-272 ई.पू.)**—यह चन्द्रगुप्त मौर्य का उत्तराधिकारी पुत्र था। उसे **'अमित्रघात'** भी कहा जाता है।
इनके दरबार में एक प्रसिद्ध चिकित्सक जीवक निवास करता था। जिसे बिंदुसार ने भगवान बुद्ध के निजी चिकित्सक के रूप में भेजा था।

III. **अशोक (273-232 ई.पू.)**—अशोक ने अपने **99 भाइयों** की हत्या कर राजगद्दी प्राप्त की। अपने शासनकाल के चार वर्षों बाद **269 ई.पू. में राज्याभिषेक** कराया। उसने **261 ई.पू.** में **कलिंग पर विजय** प्राप्त की, परन्तु भयानक रक्तपात व नरसंहार देखकर वह द्रवित हो उठा जिसके फलस्वरूप उसने **उपगुप्त** से शिक्षा प्राप्त कर बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया। अशोक को 'देवनाम प्रियदर्शी' के नाम से भी जाना जाता है।
  - सम्राट अशोक ने सम्पूर्ण एशिया में तथा अन्य महाद्वीपों में बौद्ध धर्म का प्रसार व प्रचार किया। अशोक के प्रशासन के दौरान बौद्ध धर्म के प्रसार व प्रचार की पुष्टि टोपरा सम्पादन द्वारा होती है। यह ब्राह्मी लिपि में लिखा गया है।
  - दक्षिण भारत से प्राप्त यास्की एवं गुजर्रा अभिलेखों में अशोक का नाम अशोक तथा पुराणों में अशोकवर्धन नामोल्लेख हुआ है।
  - अशोक के अधीन कश्मीर, गुर्जर व कर्नाटक के राज्य भी सम्मिलित थे।
  - मौर्य काल में एग्रोनोमई अधिकारी मार्ग निर्माण से सम्बन्धित थे।
  - मौर्य काल में सीता से तात्पर्य राजकीय भूमि से प्राप्त होने वाली आय से है।
  - अशोक स्तम्भ की लिपि ब्राह्मी है।

11. मौर्योत्तर काल (Later Maurya Age)

अशोक की मृत्यु के बाद धीरे–धीरे मौर्य साम्राज्य का पतन होने लगा। ई.पू. 185 ई. पू. में अन्तिम मौर्य शासक बृहद्रथ की हत्या उसके महासेनापति ने पुष्यमित्र शुंग ने कर दी तथा शुंग वंश की नींव रखी।

I. शुंग वंश (Shunga Dynasty)

- शुंग ब्राह्मण वंशीय शासक थे। इस राजवंश का अन्तिम राजा देवभूति था।
- भरहुत स्तूप का निर्माण **पुष्यमित्र शुंग** ने करवाया था।
- इंडो–यूनानी शासक मिनांडर को पुष्यमित्र शुंग ने पराजित किया था।
- शुंग शासकों ने अपनी राजधानी **विदिशा** में स्थापित की थी।

II. आन्ध्र सातवाहन वंश (Andhra-Satvahana Dynasty)

- सुशर्मा कण्व के सेनापति **सिमुक** ने 27 ई.पू. में उसका वध कर सातवाहन वंश की नींव डाली। सिमुक शतकर्णि, गौतमीपुत्र शतकर्णि, वसिष्ठीपुत्र, पुलुमावी तथा यज्ञश्री शतकर्णि इस वंश के प्रमुख शासक थे, जिन्होंने लगभग **250 ई.** तक शासन किया। **यज्ञश्री शतकर्णि** इस वंश का अन्तिम महत्त्वपूर्ण शासक था।
- गौतमी पुत्र **शातकर्णी** (106–130 ई.) इस वंश का सर्वाधिक महान शासक था।
- सातवाहन शासक **'हाल'** ने **'गाथासप्तशती'** नामक ग्रंथ की रचना की थी।
- इस काल में **ताँबे, काँसे** के अलावा **शीशे के सिक्के** काफी प्रचलित थे।

12. भारत के यवन राज्य (Greek States in India)

I. शक (Shaka)

- भारत के शक राजा अपने आपको **क्षत्रप** कहते थे।
- रुद्रदामन ने सातवाहन नरेश शतकर्णी को दो बार हराया तथा चन्द्रगुप्त मौर्य के मंत्री द्वारा बनवाई गई सुदर्शन झील के पुनर्निर्माण में भारी धन व्यय किया। जूनागढ़ का अभिलेख रुद्रदामन प्रथम से सम्बन्धित है।

II. कुषाण (Kushanas)

- कुषाण वंश का संस्थापक **कुजुल कडफिसेस** था।
- सर्वप्रथम **विम कडफिसेस** ने भारत में कुषाण सत्ता की स्थापना की और **सर्वप्रथम बड़ी मात्रा में सोने के सिक्के जारी किये।**
- कनिष्क ने 78 ई. में शक सम्वत् प्रचलित किया था, तथा इसी वर्ष कनिष्क का राज्याभिषेक हुआ था।
- कनिष्क के शासनकाल के तीसरे वर्ष में बौद्ध सन्त वाला द्वारा सारनाथ में बोधिसत्व प्रतिमा लेख स्थापित किया गया।
- कनिष्क की प्रथम राजधानी **पेशावर (पुरुषपुर)** तथा दूसरी राजधानी मथुरा थी।
- कनिष्क के दरबार में **पार्श्व, वसुमित्र, अश्वघोष** तथा **नागार्जुन** जैसे बौद्ध दार्शनिक भी निवास करते थे।
- बुद्धचरित अश्वघोष की प्रमुख रचना है।
- नागार्जुन को **भारत का आइन्सटीन** कहा जाता है। इन्होंने अपनी पुस्तक **माध्यमिक सूत्र में 'सापेक्षता का सिद्धान्त'** प्रतिपादित किया।
- भारत में सर्वाधिक शुद्ध सोने के सिक्कों का **प्रचलन कुषाणों ने चलवाया।**
- प्रसिद्ध पुस्तक **'कामसूत्र'** की रचना **'वात्स्यायन'** द्वारा इसी काल में की गई।

- कनिष्क के **राजवैद्य चरक (चरक संहिता के रचनाकार)** थे।
- यह काल गांधार शैली की उत्पत्ति का काल भी था।

13. गुप्त वंश (240-480 ई.) (Gupta Dynasty)

गुप्त वंश का उदय चौथी शताब्दी में हुआ था जिसने लगभग 300 वर्ष तक शासन किया। इस वंश के शासकों ने बड़े साम्राज्य की स्थापना की, जिसमें पूरा उत्तर भारत शामिल था। इस वंश के शासन काल में कला, वास्तुकला तथा साहित्य के क्षेत्र में बहुत प्रगति हुई।

I. श्रीगुप्त (240-280 ई.) (Srigupta)

श्रीगुप्त गुप्त वंश का संस्थापक था। उसने 240–280 ई. तक शासन किया। उसने महाराज की उपाधि प्राप्त की। उसके बाद उसका पुत्र घटोत्कच शासक बना।

II. चन्द्रगुप्त प्रथम (320–335 ई.) (Chandragupta I)

चन्द्रगुप्त प्रथम इस वंश का प्रथम प्रमुख शासक था तथा उसे **गुप्त संवत्** का संस्थापक माना जाता है।

III. समुद्रगुप्त (335–375 ई.) (Samudragupta)

उसे **भारत का नेपोलियन** भी कहते हैं।

(i) हरिषेण के **'प्रयागप्रशस्ति'** , इलाहाबाद का स्तंभ समुद्रगुप्त से सम्बन्धित है।
- समुद्रगुप्त की एक अन्य उपाधि पृभित्या प्रथम वीर भी थी।

(ii) समुद्रगुप्त उच्चकोटि का कवि एवं संगीतज्ञ भी था, इसी कारण उसे **'कविराज'** कहा जाता था।

(iii) समुद्रगुप्त को सिक्कों पर **वीणा बजाते हुए** चित्रित किया गया है।

IV. चन्द्रगुप्त द्वितीय (380–415 ई.) (Chandragupta II)

समुद्रगुप्त के बाद उसका पुत्र चन्द्रगुप्त द्वितीय शासक बना। चद्रगुप्त द्वितीय के अन्य नाम देवगुप्त, देवराज, तथा देवश्री और उपधियाँ क्रमशः विक्रमांक, विक्रमादित्य और परमभागवत थी। प्राचीन भारत की श्रेष्ठतम साहित्य प्रतिभा **कालिदास** उसकी राज्यसभा के रत्न थे। **धनवन्तरि** जैसे प्रसिद्ध चिकित्सक इसी के शासनकाल में हुए थे। चीनी यात्री फाह्यान भी इसी के शासनकाल में आया था।

प्रभावती गुप्त वंश के शासक चन्द्रगुप्त II की पुत्री थी उनका विवाह 410 ई. में वाकाटक नरेश रुद्रसेन II से हुआ था।

पुणे ताम्रपात्र अभिलेख से जानकारी प्राप्त होती है कि प्रभावती स्वयं शासक बनी थी।

- दिल्ली में कुतुबमीनार के समीप **महरौली का स्तम्भ** का निर्माण चन्द्रगुप्त द्वितीय ने करवाया था। इसके पुत्र कुमार गुप्त प्रथम ने नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। इसे **ऑक्सफोर्ड ऑफ महायान बौद्ध** कहा गया।
- इसी वंश के शासक स्कंदगुप्त के शासनकाल में **हूण जाति के लोगों ने अपने आक्रमण गुप्त राज्य पर आरम्भ** कर दिये थे।
- स्कन्दगुप्त ने गिरनार पर्वत पर स्थित **सुदर्शन झील** का पुनरुद्धार करवाया।
- गुप्त युग में शान्ति, समृद्धि का चतुर्मुखी विकास हुआ, जिसके फलस्वरूप इस काल को भारतीय इतिहास में स्वर्ण युग के नाम से जाना जाता है।
- गुप्त वंश के पश्चात् ईसा की छठी सदी के मध्य हूणों ने पंजाब पर अपना वर्चस्व स्थापित किया। हूण खानाबदोश लोग थे।
- हूणों द्वारा सर्वप्रथम 455 ई. में भारत पर आक्रमण किया गया, किन्तु स्कन्दगुप्त के पराक्रम के सामने उन्हें पराजय का सामना करना पड़ा। भारत पर आक्रमण करने वाले हूणों के नेता क्रमशः तोरमाण व मिहिर कुल थे। इसके अतिरिक्त खुशनबाज को हूणों का प्रथम राजा माना जाता है।
- जेजाक भुक्ति या जिझौति गुप्त काल का एक प्रसिद्ध राज्य था, जो यमुना और नर्मदा नदियों के बीच में स्थित है। इसका वर्तमान नाम बुन्देलखण्ड है। इस पर चन्देल राजाओं का शासन था।
- विक्रम संवत् की शुरुआत 57 ई. पू. में हुई। विक्रमादित्य ने शकों को पराजित करने की उपलब्धि के रूप में इसकी शुरुआत की।
- आर्यभट्ट प्राचीन भारत के एक महान गणितज्ञ थे इन्होंने आर्यभट्टीय ग्रन्थ की रचना की।
- कुमारसम्भव महाकवि कालिदास द्वारा लिखित तथा कार्तिकेय के जन्म से सम्बन्धित एक महाकाव्य है जिसकी गणना संस्कृत के पंच महाकाव्यों में की जाती है।
- भूमि स्पर्श मुद्रा की सारनाथ बुद्ध प्रतिमा गुप्त काल से सम्बन्धित है।

14. पुष्यभूति या वर्धन राजवंश (Pushyabhuti or Vardhan Dynasty)

- **हर्षवर्धन (606-647 ई.) (Harsh Vardhan)**
  - पुष्यभूति, वर्धन वंश का संस्थापक था। पुष्यभूति ने थानेश्वर को अपनी राजधानी बनाया। वह 'शिव' का परम भक्त था।
  - हर्षवर्धन, राज्यवर्धन के बाद थानेश्वर के सिंहासन पर बैठा। हर्षवर्धन के विषय में बाणभट्ट के 'हर्षचरित' से व्यापक जानकारी मिलती है। हर्षवर्धन ने लगभग 41 वर्ष (606-647AD) शासन किया।
  - हर्ष बौद्ध धर्म का अनुयायी था।
  - हर्ष ने अपनी राजधानी **थानेश्वर** से **कन्नौज** स्थानान्तरित की थी तथा हर्ष की सेना को 620 ई. में चालुक्य नरेश **पुलकेशिन द्वितीय** ने नर्मदा के तट पर पराजित किया था।
  - उसने संस्कृत में '**नागानन्द, रत्नावली** तथा **प्रियदर्शिका**' नामक नाटकों की रचना की थी।
  - हर्षवर्धन ने अपने राजदरबार में **कादम्बरी** और **हर्षचरित** के रचयिता **बाणभट्ट, सुभाषितवलि** के रचयिता **मयूर** और चीनी विद्वान **ह्वेनसांग** (सी–यू–की का रचयिता) को आश्रय प्रदान किया था।
  - **यात्रियों का राजकुमार, नीति का पंडित** एवं **शाक्यमुनि** कहे जाने वाले **ह्वेनसांग** को चीनी शासक **ताई सुंग** (629 ई.) ने हर्षवर्धन के दरबार में भेजा था।
  - नागानन्द (नागों का आनन्द), राजा हर्षवर्धन द्वारा रचित एक संस्कृत नाटक है। यह संस्कृत के सर्वश्रेष्ठ नाटकों में से एक है। यह नाटक पाँच अंकों में लिखा गया है।
  - 'हर्षचरित' बाणभट्ट द्वारा रचित प्रसिद्ध संस्कृत ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में हर्षवर्धन के जीवन तथा तत्कालीन भारत के इतिहास का वर्णन किया गया है।

15. राजपूत काल (800-1200 ई.)
(Rajput Age)

हर्ष की मृत्यु के बाद उत्तरी–पश्चिमी भारत में छोटे–छोटे स्वतन्त्र राज्यों का उदय हुआ। इन विभिन्न छोटे–छोटे स्वतन्त्र राज्यों के शासक राजपूत थे, जिन्होंने 1200 ई. तक लगभग 500 वर्षों तक शासन किया। भारतीय इतिहास में इस काल को **'राजपूत युग'** के नाम से भी जाना जाता है। मुख्य राजपूत राजाओं में पृथ्वीराज चौहान, जयचन्द, राणा संग्राम सिंह, राणा प्रताप सिंह आदि नाम शामिल हैं। इतिहासकार–वेदव्यास, सी. वी. वैध, गौरीशंकर ओझा निम्नलिखित थे।

शाही राजपूत–पंजाब के शासक भीमपाल, जयपाल, आनन्दपाल तथा त्रिलोचन पाल इस वंश के महत्वपूर्ण शासक थे। 1021 ई. में महमूद गजनी द्वारा हटाये गये।

I. चौहान वंश (Chauhan Dynasty)

यह उत्तर भारत का सबसे शक्तिशाली वंश था। पृथ्वीराज चौहान इस वंश का वीर, प्रतापी एवं अन्तिम शासक था जिसका मोहम्मद गौरी के साथ तराइन का प्रथम तथा द्वितीय युद्ध हुआ था। **इसी राजवंश के शासन काल में हुई।**

- **वासुदेव** ने चौहान वंश की स्थापना की। इसकी राजधानी **अहिक्षत्र** थी।
- अजयराज ने अजमेर की स्थापना कर **अजमेर** को चौहानों की राजधानी बनाया।
- अजयराज के बाद अर्णोराज शासक बना। इसने पुष्कर में वराह मंदिर का निर्माण करवाया।

(i) विग्रहराज-IV (1153–63 ई.)–यह अर्णोराज का पुत्र था जिसे बीसलदेव भी कहा जाता है। इसने **हरिकेलि** नाटक की रचना की। इसके दरबारी कवि **सोमदेव ने ललितविग्रहराज** की रचना की। **विग्रहराज-IV ने अजमेर में एक संस्कृत मठ बनवाया जिसे आज 'अढ़ाई दिन का झोंपड़ा' के नाम से जाना जाता है।** अढ़ाई दिन का झोंपड़ा एक मस्जिद है जिसका निर्माण **कुतुबुद्दीन ऐबक** ने कराया था। **इसकी दीवारों पर ललितविग्रहराज की पंक्तियाँ आज भी अंकित हैं।**

(ii) पृथ्वीराज चौहान तृतीय (1178–92 ई.)–इसने चंदेल राजा परमार्दिदेव को हरा दिया। इसको राय पिथौरा के भी नाम से भी जानते हैं। पृथ्वीराज रासो के लेखक **चन्दबरदाई, जयानक** इसके दरबारी कवि थे। जयानक ने **पृथ्वीराज विजय** की रचना की। पृथ्वीराज चौहान (तृतीय) ने मोहम्मद गौरी से दो युद्ध किए–

(i) तराइन का प्रथम युद्ध (1191 ई.)–इसमें मो. गौरी पराजित हुआ।

(ii) तराइन का द्वितीय युद्ध (1192 ई.)–इसमें मो. गौरी ने पृथ्वीराज-III को हरा दिया।

इस युद्ध के बाद चौहानों की शक्ति समाप्त हो गई और तुर्क राज्य की स्थापना हुई।

II. गहड़वाल (राठौर) वंश (Gahadwal/Rathore Dynasty)

- गहड़वाल वंश की स्थापना चन्द्रदेव ने (1080-85 ई.) की थी। इसकी राजधानी **कन्नौज** एवं द्वितीय राजधानी **वाराणसी** थी। इसका पुत्र महिचन्द्र एक महत्त्वपूर्ण शासक था।

(i) चन्द्रदेव–यह मदनचन्द्र का पुत्र था जिसने उत्तर भारत में महमूद की अनुपस्थिति में राष्ट्रकूट के राजा गोपाल को पराजित किया। इसकी राजधानी बनारस थी। चन्द्रदेव ने मुस्लिमों पर तरुक्षदंड नाम का कर लगाया, जो उनसे आगामी युद्ध पर आने वाले खर्च के लिए लिया जाता था।

(ii) गोविन्दचन्द्र–इसके शासन में कन्नौज ने अपनी ख्याति पुनः प्राप्त की । इसके मंत्री लक्ष्मीधर ने कानून और प्रक्रिया पर **कृत्य कल्पतरु(कल्पद्रुम)** की रचना की।

गोविन्दचन्द्र की एक **रानी कुमारदेवी** ने सारनाथ में धर्मचक्र–जिन विहार का निर्माण करवाया।

(iii) जयचंद–यह इस वंश का अंतिम शासक था। पृथ्वीराज-III इसका समकालीन था। चन्दबरदाई कृत पृथ्वीराज रासो के अनुसार पृथ्वीराज तृतीय ने जयचंद की पुत्री संयोगिता का अपहरण कर लिया था। मोहम्मद गौरी ने **1194 में चन्दावर के युद्ध** में जयचन्द को मार डाला।

III. बुन्देल या चन्देल वंश (Bundel/Chandel Dynasty)

इस वंश की स्थापना नन्नुक ने की। यशोवर्मन इस वंश का प्रथम प्रतापी एवं स्वतन्त्र शासक था। जिसने बुन्देलखण्ड पर शासन किया। परमाल अथवा परमर्दन चंदेल इस वंश का अन्तिम शासक था। इसी के शासनकाल में तुर्कों ने चंदेल राज्य पर आक्रमण किया था जिसके फलस्वरूप चन्देल वंश के पतन की शुरुआत हुई। इसी वंश के शासनकाल में खजुराहो मन्दिर का निर्माण हुआ। खजुराहो के मन्दिरों में कंदरिया महादेव सर्वोत्तम हैं।

IV. परमार वंश (Parmar Dynasty)

इस वंश का संस्थापक **उपेन्द्र** था। श्री हर्ष इस वंश का प्रथम स्वतन्त्र शक्तिशाली शासक था जिसने राष्ट्रकूटों को पराजित किया। राजा भोज के नाम पर भोपाल शहर बसा, अपनी दानशीलता, कला एवं विद्यानुराग के **कारण वह इस वंश के सर्वाधिक प्रसिद्ध राजा थे।**

- राजा भोज ने **कविराज** की उपाधि धारण की। उसने **चिकित्साशास्त्र,** खगोलशास्त्र, धर्म, व्याकरण, स्थापत्यशास्त्र आदि पर बीस से अधिक ग्रंथों की रचना की।
- भोज ने धारानगरी का विस्तार किया। भोजशाला के रूप में एक प्रसिद्ध **महाविद्यालय** की स्थापना की।
- भोज की मृत्यु पर पंडितों को बहुत दुःख हुआ। उसकी मृत्यु पर यह कहावत प्रचलित हो गई कि **''अद्यधारा निराधारा निरालम्बा सरस्वती''** (विद्या और विद्वान दोनों निराश्रित हो गये।)
- भोज ने चित्तौड़ में त्रिभुवन नारायण मंदिर का निर्माण करवाया।

V. सेन वंश (Sen Dynasty)

सामंत सेन सेन वंश का संस्थापक था जिसने बंगाल तथा बिहार पर अपना शासन किया। इसकी राजधानी नदिया (लखनौती) थी। लक्ष्मण सेन इस वंश का अन्तिम प्रसिद्ध राजा था। **गीतगोविन्द** के रचयिता जयदेव इसके दरबारी कवि थे।

- **दान सागर,** अद्भुत सागर नामक ग्रंथ की रचना सेन शासक बल्लालसेन द्वारा की गई थी।
- सेन राजवंश ऐसा प्रथम राजवंश था, जिसने अपना अभिलेख सर्वप्रथम हिन्दी में उत्कीर्ण करवाया।
- लक्ष्मण सेन बंगाल का अंतिम हिन्दू शासक था।

VI. कल्चुरी वंश (Kalchuri Dynasty)

इस वंश का संस्थापक 'कोकल्ल' था। जिसने 'त्रिपुरी' को अपनी राजधानी बनाकर शासन किया। इस वंश की दो शाखाएँ थीं। गंगेयदेव इस वंश का शक्तिशाली शासक था। जिसको विक्रमादित्य की उपाधि प्राप्त हुई।

VII. पल्लव वंश (Pallava Dynasty)

- पल्लव वंश का वास्तविक संस्थापक **सिंहविष्णु** (574-600 ई.) को माना जाता है। इसकी राजधानी **कांचीपुरम्** थी।
- पल्लव नरेश **महेन्द्र वर्मन प्रथम** (600-630 ई.) महान् निर्माता कवि और संगीतज्ञ था। इसने **मत्त विलास प्रहसन** नामक हास्य ग्रंथ की रचना की, इसने **भगवदज्नुकीयम** नामक ग्रंथ भी लिखा।
- **नरसिंहवर्मन प्रथम** (630-668 ई.) पल्लव वंश का सर्वाधिक यशस्वी शासक था। उसने बादामी के चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय पराजित करने के बाद **'विजय स्तम्भ'** स्थापित किया तथा **'वातापीकोण्ड'** की उपाधि धारण की।
- नरसिंहवर्मन ने **महाबलीपुरम नगर** की स्थापना की तथा महाबलीपुरम के प्रसिद्ध एकात्मक **रथों** (**सात पैगोडा**) का निर्माण भी उसी ने करवाया।
- दक्षिण भारत के पल्लवों के रथ मन्दिरों में **भीमरथ** सबसे बड़ा तथा **द्रोपदी रथ** सबसे छोटा था।
- नरसिंहवर्मन के ही शासनकाल में चीनी यात्री **ह्वेनसांग** ने कांची की यात्रा की थी।
- नरसिंहवर्मन द्वितीय ने काँची के **कैलाशनाथ मन्दिर** तथा **महाबलीपुरम्** के **शोर मन्दिर** का निर्माण करवाया था।
- महाकवि दण्डिन नरसिंह वर्मन द्वितीय का समकालीन था।
- नन्दिवर्मन द्वितीय ने काँची के मुक्तेश्वर व **बैकुण्ठ मेरूमल मन्दिर** का निर्माण करवाया। **वैष्णव** संत **तिरुमंगाई अलवार** इसका समकालीन था।
- दक्षिण भारत की पल्लव वास्तुकला ही दक्षिण भारत की **द्रविड़ कला शैली** का आधार बनी।
- 1891 ई. में ओरियण्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट की स्थापना की थी जिसे मैसूर ओरियण्टल लाइब्रेरी के रूप में जाना जाता है। कर्नाटक के रुद्रपटना में जन्मे "आर शामाशास्त्री" ने न केवल ताड़ के पत्तों पर लिखी यद्यपि संस्कृत की हस्तलिपियों को एकत्रित किया।
- वर्ष 1100 ई. में निर्मित मन्दिर जो भुवनेश्वर के अन्य मन्दिरों पर प्रधानता रखता है। वह त्रिभुवनेश्वर लिंगराज मन्दिर है।
- तेलुगू भाषा के 8 प्रसिद्ध कवि कृष्णदेवराय के दरबार में थे जो अष्ट दिग्गज के नाम से जाने जाते थे। कृष्ण देवराय भी आन्ध्र भोज के नाम से विख्यात थे और विजयनगर शासक कृष्ण देवराय ने तेलुगू में अमुक्तमाल्पादा तथा संस्कृत में ऊषापरिणयम पुस्तक लिखी।

VIII. गुजरात के चालुक्य (Chalukayas of Gujarat)

गुजरात में इस वंश का संस्थापक **'मूलराज प्रथम'** था। जयसिंह सिद्धराज इस वंश का **सर्वाधिक शक्तिशाली** एवं कुमारपाल इस वंश का **अन्तिम शासक** था। इसकी मृत्यु के बाद इस वंश का क्रमशः पतन हो गया। हेमचन्द्र कुमारपाल के सलाहकार थे।

वातापी के चालुक्य

- इस वंश का संस्थापक **जयसिंह** था।
- इस वंश के शासक शैव मत के अनुयायी थे।
- इस वंश का प्रथम प्रमुख शासक **पुलकेशिन प्रथम** (535-566 ई.) था। इसने बहुत से **अश्वमेध** यज्ञ किये थे।
- इस वंश की राजधानी **वातापी** (**आधुनिक बादामी**) थी।
- पुलकेशिन द्वितीय वातापी के चालुक्य राजवंश का सर्वाधिक योग्य व साहसी शासक था। उसने हर्षवर्धन को नर्मदा तट पर पराजित किया। इस विजय के बाद उसने **परमेश्वर** की उपाधि धारण की।
- पुलकेशिन द्वितीय ने पर्शिया के राजा खुसरो द्वितीय के दरबार में अपना दूत भेजा।
- ह्वेनसांग पुलकेशिन द्वितीय के शासनकाल में चालुक्य साम्राज्य की यात्रा पर आया।
- चालुक्य उस समय की जलसैन्य शक्ति के रूप में प्रसिद्ध थे।
- ऐहोल अभिलेख का सम्बन्ध **पुलकेशिन द्वितीय** से है। **इसका संस्कृत भाषा में लेखक रविकीर्ति था।**

16. मध्य भारत, उत्तर भारत और दक्कन : तीन साम्राज्यों का युग (8वीं से 10वीं सदी तक)
(Central India, Northern India & Deccan Age of Three Empires)

सातवीं सदी में हर्ष के साम्राज्य के पतन के बाद उत्तर भारत, दक्कन और दक्षिण भारत में अनेक साम्राज्य उत्पन्न हुए। इसमें पाल, प्रतिहार एवं राष्ट्रकूट प्रमुख थे।

I. पाल साम्राज्य (Pala Empire)

- पाल साम्राज्य की स्थापना 750 ई. में **गोपाल** के द्वारा द. भारत में हुई थी।
- धर्मपाल के शासनकाल में कन्नौज पर नियंत्रण के लिए पाल, प्रतिहार एवं राष्ट्रकूटों में त्रिपक्षीय संघर्ष हुआ जिसमें धर्मपाल विजयी हुआ।
- धर्मपाल ने **नालंदा विश्वविद्यालय का पुनरुत्थान किया** और **विक्रमशिला विश्वविद्यालय की स्थापना** की जहाँ वज्रयान शाखा की पढ़ाई कराई जाती थी।

II. प्रतिहार (Pratiharas)

- इस वंश की स्थापना **हरिश्चन्द्र** ने की थी।
- नागभट्ट प्रथम (730 - 756 ई.)—यह गुर्जर प्रतिहार वंश का वास्तविक संस्थापक था।
- उसके दरबार में **राजशेखर** निवास करते थे जो उसके राजगुरु भी थे। राजशेखर की रचनाएँ—**कर्पूरमंजरी, काव्यमीमांसा, हरविलास, भुवनकोश, बाल रामायण**।
- इस वंश का अंतिम शासक **यशपाल** था।

III. राष्ट्रकूट (Rashtrakutas)

- राष्ट्रकूट वंश का संस्थापक **दंतिदुर्ग** था जिसने शोलापुर के पास **मान्यखेत** या **मलखेड़** को अपनी राजधानी बनाया।

17. चोल साम्राज्य (नवीं से बारहवीं सदी तक) [Chola Empire (9th to 12th Century AD)]

- चोल साम्राज्य का संस्थापक **विजयालय** (850 ई. से 871 ई.) था, ये पहले पल्लवों का सामंत था। उसने 850 ई. में तंजावुर पर कब्जा किया और उसे अपनी राजधानी बनाया।
- विजयालय ने तंजौर पर अधिकार करने के बाद **नरकेसरी** की उपाधि धारण की।
- राजराज प्रथम को इस वंश का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।
- राजराज-I के पुत्र राजेन्द्र–प्रथम ने पूरे श्रीलंका को चोल साम्राज्य में मिला लिया।
- राजेन्द्र-I ने बंगाल के शासक महीपाल को हरा दिया। उसने उत्तरी–पूर्वी पराजित राजाओं को गंगाजल से भरे कलश अपनी राजधानी **गंगैकोण्डचोलपुरम** लाने को कहा और उसे चोलगंग नामक तालाब में एकत्रित करवाया। इस उपलक्ष्य में उसने **गंगैकोंडचोल** की उपाधि भी ग्रहण की।

18. प्राचीन भारत के ग्रन्थ और उनके लेखक [Ancient Indian Writers]

	ग्रन्थ	लेखक
1	अष्टाध्यायी	पाणिनि
2	रामायण	वाल्मीकि
3	महाभारत	वेदव्यास
4	अष्टसाहस्त्रिक सूत्र, प्रज्ञापारमिता सूत्रशास्त्र, माध्यमिका सूत्र	नागार्जुन
5	बुद्धचरित, सारिपुत्र प्रकरण, सूत्रालंकार वज्रसूचि, सौंदर्यानन्द, श्रद्धोत्पाद	अश्वघोष
6	मुद्राराक्षस, देवीचन्द्रगुप्त	विशाखदत्त
7	अर्थशास्त्र	चाणक्य
8	महाभाष्य	पतंजलि
9	कुमारसंभवम्, अभिज्ञानशाकुंतलम्, विक्रमोर्वशीयम्, मेघदूतम्, रघुवंशम्, मालविकाग्निमित्रम्, ऋतुसंहारम्	कालिदास
10	स्वप्नवासवदत्तम्, प्रतिज्ञायौगंधरायण	भास
11	नागानंद, रत्नावली, प्रियदर्शिका	हर्षवर्धन
12	हर्षचरित, कादंबरी	बाणभट्ट
13	विक्रमांक चरित	बिल्हण
14	पृथ्वीराज रासो	चंदबरदाई
15	राजतरंगिणी	कल्हण
16	चौरपंचाशिका	बिल्हण
17	रसमाला, कीर्ति कौमुदी	सोमेश्वर
18	कर्पूरमंजरी	राजशेखर
19	इंडिका	मैगस्थनीज
20	चरकसंहिता	चरक
21	सुश्रुत संहिता	सुश्रुत
22	मृच्छकटिकम्	शूद्रक
23	संगीतरत्नाकर	शार्गदेव
24	मीताक्षरा	विज्ञानेश्वर
25	किरातार्जुनीयम्	भारवि
26	पंचतंत्र	विष्णु शर्मा
27	न्याय भाष्य, कामसूत्र	वात्स्यायन
28	काव्यादर्श, दशकुमारचरित	दंडी
29	वासवदत्ता	सुबंधु
30	सूर्य सिद्धांत	आर्यभट्ट
31	बृहत् संहिता, पञ्च सिद्धान्तिका, बृहज्जातिका, लघुजातिका	वाराहमिहिर
32	गीतगोविन्दम्	जयदेव
33	अनर्घराघव	मुरारि
34	आयुर्वेद सर्वस्व, राजमार्तंड, व्यवहार समुच्चय, शब्दानुशासन, युक्तिकल्पतरु, राजमृगिका	राजा भोज
35	भोजप्रबंध	बल्लाल
36	शिशुपाल वध	माघ
37	नैषधीयचरितम्	श्रीहर्ष
38	मालती माधव, महावीर चरित, उत्तररामचरितं	भवभूति
39	साहित्यदर्पणः	भामह
40	ध्वन्यालोकः, प्रमोदचन्द्र	आनंदवर्धन
41	व्यक्तिविवेकः	महिमभट्ट
42	काव्यादर्श	मम्मट
43	वेणिसंहार (Venisamhara)	भट्ट नारायण
44	प्रमाण मीमांसा	हेमचन्द्र
45	बृहत्कथामंजरी	क्षेमेन्द्र
46	कातन्त्र (व्याकरण)	सर्ववर्मन्
47	अष्टांगसंग्रह, सिद्धांत शिरोमणि, लीलावती (first book of algebra)	भास्कराचार्य
48	माधव निदान	माधवकर
49	निघंटु	यास्क
50	रसरत्नाकर	नागार्जुन
51	तत्त्व कौमुदी, तत्त्व शारदी, न्यायवर्तिका, न्यायसूत्र धारा, न्यायकणिका, योगसारसंग्रह	वाचस्पति मिश्र
52	योगवर्तिका, योगसारसमग्र	विज्ञान भिक्षु
53	तिलकमंजरी, यशस्तिलक	धनपाल
54	कुट्टनीमतम्	दामोदरगुप्त
55	तत्त्वशुद्धि	उदयन

	ग्रन्थ	लेखक
56	न्यायमंजरी	जयंत
57	न्यायतत्त्व योगरहस्य	नाथमुनि
58	गीतसंग्रह, महापुरुष निर्णय, सिद्धत्रय, अगम प्रामाण्य	यामुनाचार्य
59	धूर्तव्यामा, समरादित्य कथा	हरिभद्र
60	कुवलयमाला	उद्योतनसूरि
61	अजित शान्तिस्तव	नंदिसेण
62	सतसई	हाल
63	बृहत्कथा	गुणाढ्य

हम अतीत के बारे में क्या जान सकते हैं?

हम अपने अतीत के बारे में कई बातें जान सकते हैं, जैसे–

- लोग क्या खाते थे, किस तरह के कपड़े पहनते थे, किस तरह के घर में रहते थे।
- हम शिकारियों, चरवाहों, किसानों, शासकों, व्यापारियों, पुजारियों, शिल्पकारों, कलाकारों, संगीतकारों और वैज्ञानिकों के जीवन के बारे में पता लगा सकते हैं।
- हम बच्चों द्वारा खेले जाने वाले खेलों, उनके द्वारा सुनी गई कहानियों, उनके द्वारा देखे गए नाटकों, उनके द्वारा गाए गए गीतों के बारे में भी पता लगा सकते हैं।

लोग कहाँ रहते थे?

- लोग कई लाख वर्षों से नदियों के किनारे रहते आये हैं। यहाँ रहने वाले शुरुआती लोगों में से कुछ कुशल संग्राहक थे, यानी वे लोग जो अपना भोजन इकट्ठा करते थे।
- वे अपने भोजन के लिए जड़, फल और अन्य वनोपज एकत्र करते थे। कभी–कभी वे जानवरों का भी शिकार करते थे।
- सुलेमान और किरथर पहाड़ियों में कुछ ऐसे स्थान है जहाँ लगभग 8000 साल पहले महिलाओं और पुरुषों ने सबसे पहले गेहूँ और जौ जैसी फसलें उगाना शुरू किया था।
- लोग भेड़, बकरी और मवेशियों जैसे जानवरों की भी देखभाल करने लगे और गाँवों में रहने लगे।
- चावल सबसे पहले विंध्य के उत्तर में लगाया गया था।
- लगभग 2500 साल पहले शहर, गंगा और उसकी सहायक नदियों के किनारे और समुद्री तटों पर विकसित हुए थे।
- प्राचीन काल में, गंगा के दक्षिण में गंगा और उसकी सहायक नदियों के साथ का क्षेत्र मगध के नाम से जाना जाता था जो अब बिहार राज्य में स्थित है।

लोगों की आवाजाही

- पुरुषों और महिलाओं ने आजीविका की तलाश में और बाढ़ या सूखे जैसी प्राकृतिक आपदाओं से बचने के लिए यात्रा की।
- लोगों की इन यात्राओं ने हमारी सांस्कृतिक परंपराओं को समृद्ध किया।
- लोगों ने कई सैकड़ों वर्षों में पत्थर तराशने, संगीत बनाने और यहाँ तक कि खाना पकाने के नए तरीकों को साझा किया है।

भारत के विभिन्न नाम

हमारे देश को भारत और इंडिया दोनों शब्दों से जाना जाता है।

- इंडिया शब्द सिंधु से आया है, जिसे संस्कृत में सिंधु कहा जाता है। लगभग 2500 साल पहले उत्तर–पश्चिम से आए ईरानियों और यूनानियों ने इसे हिंदो या इंडोस कहा, और नदी के पूर्व की भूमि को इंडिया कहा गया।
- भरत नाम उन लोगों के समूह के लिए इस्तेमाल किया गया था जो उत्तर–पश्चिम में रहते थे, और जिनका उल्लेख ऋग्वेद में किया गया है, जो संस्कृत की सबसे प्रारंभिक रचना है (लगभग 3500 साल पहले)। बाद में इसका इस्तेमाल देश के लिए किया गया।

पांडुलिपि

- एक तरीका जिसके द्वारा हम अपने अतीत के बारे में पता लगा सकते हैं, वह है उन किताबों को पढ़ना जो बहुत पहले लिखी गई थीं।
- इन पुस्तकों को पांडुलिपि कहा जाता है क्योंकि ये हाथ से लिखी गई थीं।
- ये ताड़ के पत्तों पर या हिमालय में उगने वाले बर्च नामक पेड़ की विशेष रूप से तैयार छाल पर लिखे गए थे।
- ये पुस्तकें सभी प्रकार के विषयों से संबंधित है–धार्मिक विश्वास और प्रथाएँ, राजाओं का जीवन, चिकित्सा और विज्ञान। इसके अलावा, महाकाव्य, कविता, नाटक भी शामिल थे।
- इनमें से कई संस्कृत में लिखे गए थे, अन्य प्राकृत (सामान्य लोगों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली भाषाएँ) और तमिल में थे।

शिलालेख

- शिलालेख अपेक्षाकृत कठोर सतहों जैसे पत्थर या धातु पर लिखे गए लेख हैं।
- अतीत में, जब राजा चाहते थे कि उनके आदेश अंकित हों ताकि लोग उन्हें देख सकें, पढ़ सकें और उनका पालन कर सकें, उन्होंने इस उद्देश्य के लिए शिलालेखों का इस्तेमाल किया।
- अन्य प्रकार के शिलालेख भी हैं, जहाँ पुरुषों और महिलाओं (राजाओं और रानियों सहित) ने जो कुछ किया, उसे दर्ज किया।

अशोक के शिलालेख

लगभग 2250 साल पहले का एक शिलालेख, वर्तमान अफगानिस्तान के कंधार में पाया गया था। यह अशोक नामक शासक के आदेश पर अंकित किया गया था। यह शिलालेख दो अलग–अलग लिपियों और भाषाओं, ग्रीक (शीर्ष) और अरामी (नीचे) में अंकित किया गया था, जो इस क्षेत्र में उपयोग किए गए थे।

पुरातात्विक साक्ष्य

- इतिहासकार पांडुलिपियों, शिलालेखों और पुरातत्व से मिली जानकारी को संदर्भित करने के लिए स्रोत शब्द का उपयोग करते हैं।
- पुरातत्वविद् वह व्यक्ति होता है जो पत्थर और ईंट से बनी इमारतों के अवशेषों, पेंटिंग और मूर्तिकला का अध्ययन करता है।
- ये उपकरण, हथियार, बर्तन, धूपदान, गहने और सिक्के खोजने के लिए खोज और खुदाई भी करते हैं।

- ये यह पता लगाने के लिए जानवरों, पक्षियों और मछलियों की हड्डियों की भी तलाश करते हैं कि लोग अतीत में क्या खाते थे।

अतीत के विभिन्न अर्थ

- चरवाहों या किसानों का जीवन राजाओं और रानियों के जीवन से भिन्न था, व्यापारियों का जीवन शिल्पकारों के जीवन से भिन्न था। यह आज भी सच है क्योंकि देश के विभिन्न हिस्सों में लोग विभिन्न प्रथाओं और रीति–रिवाजों का पालन करते हैं।
- पुरातत्व ने हमें अतीत में सामान्य लोगों के बारे में अधिक जानने में मदद नहीं की क्योंकि उन्होंने जो किया उसका रिकॉर्ड नहीं रखा। जबकि, राजा अपनी जीत और उनके द्वारा लड़े गए युद्धों का रिकॉर्ड रखते थे।

तिथियों का मतलब

- वर्षों की गणना ईसाई धर्म के संस्थापक ईसा मसीह के जन्म की तारीख से की जाती है।
- मसीह के जन्म से पहले की सभी तिथियों को पीछे की ओर गिना जाता है और आमतौर पर BC (Before Christ) अक्षर जोड़े जाते हैं।

अँग्रेजी में बी.सी. (हिंदी में ई.पू.) का तात्पर्य 'बिफोर क्राइस्ट' (ईसा पूर्व) होता है। कभी–कभी तुम तिथियों से पहले ए.डी. (हिंदी में ई.) लिखा पाते हो। यह 'एनो डॉमिनी' नामक दो लैटिन शब्दों से बना है तथा इसका तात्पर्य ईसा मसीह के जन्म के वर्ष से है।

कभी–कभी ए. डी. की जगह सी. ई. तथा बी.सी. की जगह बी.सी.ई. का प्रयोग होता है। सी. ई. अक्षरों का प्रयोग 'कॉमन एरा' तथा बी.सी.ई. का 'बिफोर कॉमन एरा' के लिए होता है। हम इन शब्दों का प्रयोग इसलिए करते हैं क्योंकि विश्व के अधिकांश देशों में अब इस कैलेंडर का प्रयोग सामान्य हो गया। भारत में तिथियों के इस रूप का प्रयोग लगभग दो सौ वर्ष पूर्व आरम्भ हुआ था।

कभी–कभी अंग्रेजी के बी.पी. अक्षरों का प्रयोग होता है जिसका तात्पर्य 'बिफोर प्रेजेन्ट' (वर्तमान से पहले) है।

आरंभिक मानव

आखेटक–खाद्य समुदाय के लोग निम्नलिखित कारणों से एक स्थान से दूसरे स्थान पा घूमते रहते थे–

- यदि वे लंबे समय तक एक ही स्थान पर रहे होते, तो वे सभी उपलब्ध पौधे और पशु संसाधनों को खा जाते।
- जानवर एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हैं इसलिए इन लोगों को शिकार के लिए उनका पीछा करना पड़ता था।
- लोगों ने विभिन्न प्रकार के पौधों की तलाश में हर मौसम में यात्रा की होगी।
- नदी के किनारे रहने वाले लोगों को शुष्क मौसम में अपने स्थानों से पानी की तलाश में जाना पड़ता था।

रहने के लिए जगह

- लोग निम्नलिखित उपलब्धता वाले स्थानों में रहना पसंद करते थे।
- वे नदियों और झीलों जैसे पानी के स्रोतों के पास रहते थे।
- लोगों ने उन जगहों को खोजने की कोशिश की जहाँ अच्छी गुणवत्ता का पत्थर आसानी से उपलब्ध हो क्योंकि यह शिकार के लिए महत्वपूर्ण था।

गुफाएँ

भीमबेटका (वर्तमान मध्य प्रदेश में)–यह गुफाओं और चट्टानों के आश्रयों वाला एक पुराना स्थल है। लोगों ने इन प्राकृतिक गुफाओं को इसलिए चुना क्योंकि ये बारिश, गर्मी और हवा से आश्रय प्रदान करती थीं। ये गुफाएँ नर्मदा घाटी के करीब हैं।

जिन गुफाओं में ये शुरुआती लोग रहते थे उनमें से कई की दीवारों पर चित्र हैं। कुछ बेहतरीन उदाहरण मध्य प्रदेश और दक्षिणी उत्तर प्रदेश के हैं। ये चित्र जंगली जानवरों को बड़ी सटीकता और कौशल के साथ चित्रित करते हैं।

पुरास्थल

पुरास्थल वे स्थान होते हैं जहाँ वस्तुओं के अवशेष (उपकरण, बर्तन, भवन आदि) पाए जाते हैं। इन्हें लोगों ने बनाया, इस्तेमाल किया और पीछे छोड़ दिया। ये पृथ्वी की सतह पर, पृथ्वी के नीचे दबे हुए, या कभी–कभी पानी के नीचे भी पाए जा सकते हैं।

आग की खोज

राख के निशान बताते हैं कि उस समय के लोगों ने आग का आविष्कार किया था। इसका उपयोग कई चीजों के लिए किया जा सकता था–

1. प्रकाश के स्रोत के रूप में
2. मांस भूनने के लिए
3. जानवरों को डराने के लिए।

मौसम में बदलाव

- लगभग 12000 साल पहले, दुनिया की जलवायु में बड़े बदलाव हुए, जिसके कारण कई क्षेत्रों में घास के मैदानों का विकास हुआ।
- इससे घास पर जीवित रहने वाले जानवरों की संख्या में भी वृद्धि हुई। इसलिए, लोग इन जानवरों को पालने लगे। मछली पकड़ना भी लोगों के लिए महत्वपूर्ण हो गया।

खेती और पशुपालन की शुरुआत

- घास के मैदान के विकास के साथ, लोगों को उपमहाद्वीप के विभिन्न हिस्सों में गेहूँ, जौ, चावल उगाने के बारे में पता चला। इस तरह उन्होंने खेती करना शुरू किया।
- लोग अपने आश्रयों के पास उनके लिए भोजन छोड़ कर जानवरों को आकर्षित करते थे और फिर उन्हें पकड़ लेते थे।
- पालतू होने वाला पहला जानवर कुत्ते का जंगली पूर्वज था।
- भेड़, बकरी, मवेशी और सुअर जैसे जानवर झुंड में रहते थे, और उनमें से ज्यादातर घास खाते थे।
- अक्सर लोग इन जानवरों को दूसरे जंगली जानवरों के हमले से बचाते थे। इस तरह वे चरवाहे बन गए।

बसने की प्रक्रिया

लोगों द्वारा पौधे उगाने और जानवरों की देखभाल करने को 'बसने की प्रक्रिया' का नाम दिया गया है। अपनाए गए ये पौधे तथा जानवर अक्सर जंगली पौधों तथा जानवरों से भिन्न होते हैं। इसकी वजह यह है कि बसने की प्रक्रिया की दिशा में अपनाए गए पौधों या जानवरों का लोग चयन करते हैं। उदाहरण के तौर पर लोग उन्हीं पौधों तथा जानवरों का चयन करते हैं जिनके बीमार होने की संभावना कम हो। यही नहीं, लोग उन्हीं पौधों को चुनते हैं जिनसे बड़े

दाने वाले अनाज पैदा होते हैं; साथ ही जिनकी मजबूत डंठले अनाज के पके दानों के भार को संभाल सकें। ऐसे पौधों के बीजों को संभालकर रखा जाता है ताकि फिर से उगाने के लिए उनके गुण सुरक्षित रह सकें।

बसने की प्रक्रिया पूरी दुनिया में धीरे–धीरे चलती रही। यह करीब 12,000 साल पहले शुरू हुई। वास्वत में आज हम जो भोजन करते हैं वो इसी बसने की प्रक्रिया की वजह से है। कृषि के लिए अपनाई गई सबसे प्राचीन फसलों में गेहूँ तथा जौ आते हैं, उसी तरह सबसे पहले पालतू बनाए गए जानवरों में कुत्ते के बाद भेड़–बकरी आते हैं।

जीवन का एक नया तरीका

- लोगों को लंबे समय तक पौधों की देखभाल, पानी देना, निराई करना, पशु–पक्षियों को दूर भगाना – अनाज पकने तक एक ही स्थान पर रहना पड़ता था।
- फिर वे भोजन और बीजों के लिए अनाज के भंडारण के बारे में सोचने लगे। उन्होंने मिट्टी के बड़े बर्तन, या टोकरियाँ बुनने, या जमीन में गड्ढे खोदने शुरू कर दिए।

मेहरगढ़

- मेहरगढ़ उन जगहों में से एक था जहाँ लोगों ने जौ और गेहूँ उगाना सीखा, और इस क्षेत्र में पहली बार भेड़ और बकरियाँ पाली गईं।
- इस गाँव में, कई जानवरों की हड्डियाँ मिलीं।
- मेहरगढ़ में अन्य खोजों में वर्गाकार या आयताकार घरों के अवशेष शामिल हैं।
- जब लोग मरते थे तो उनके रिश्तेदार और दोस्त उन्हें सम्मान देते थे।
- मृत व्यक्ति को बकरियों के साथ दफनाया जाता था, जो संभवत–अगली दुनिया में भोजन के रूप में काम करने के लिए थे।
- मेहरगढ़ में कई दफन स्थल पाए गए हैं।

हड़प्पा की कहानी

- हड़प्पा उपमहाद्वीप के सबसे पुराने शहरों में से एक था, जिसे पुरातत्वविदों ने 80 साल पहले खोजा था। यह खोजा जाने वाला पहला शहर था।
- अन्य सभी शहर जहाँ हड़प्पा के समान भवन पाए गए, उन्हें हड़प्पा के रूप में वर्णित किया गया।

हड़प्पा के शहरों के बारे में क्या खास था?

इन नगरों को दो या अधिक भागों में बाँटा गया था।

- **गढ़ (Citadel) :** पश्चिम का भाग, जो छोटा लेकिन ऊँचा था, गढ़ कहलाता था।
- **निचला शहर (Lower Town) :** पूर्व का हिस्सा बड़ा था लेकिन निचला था। यह हिस्सा निचला शहर कहलाता था।

  प्रत्येक भाग के चारों ओर पकी हुई ईंटों की दीवारें बनाई गई थीं। ईंटें इतनी अच्छी तरह से पकी हुई थीं कि वे हजारों वर्षों तक चली हैं। ईंटों को एक इंटरलॉकिंग पैटर्न में रखा गया था और इससे दीवारें मजबूत हो गईं। कुछ शहरों में गढ़ पर विशेष भवनों का निर्माण किया गया था। उदाहरण के लिए, मोहनजोदड़ो में, इस क्षेत्र में एक बहुत ही विशेष तालाब, जिसे पुरातत्वविद महान स्नानागार कहते हैं, बनाया गया था। मोहनजोदड़ो, हड़प्पा और लोथल जैसे कुछ शहरों में विस्तृत भंडारगृह थे।

मकान, नालियाँ और गलियाँ

- अधिकांश घरों में नहाने के लिए अलग जगह थी और कुछ में पानी की आपूर्ति के लिए कुएँ थे।
- कई शहरों में नालियाँ ढकी हुई थीं। प्रत्येक नाले में एक कोमल ढलान थी ताकि उसमें से पानी बह सके।
- घरों में नालियों को गलियों और छोटे नालों से जोड़ा गया था, जो अंततः बड़े नालों से जुड़ते थे। तीनों यानि घरों, नालों और गलियों की योजना और निर्माण एक ही साथ किया गया था।

शहर में जीवन

- शासक वे लोग थे जिन्होंने शहर में विशेष भवनों के निर्माण की योजना बनाई थी। शासकों ने लोगों को धातु, कीमती पत्थर, और अन्य चीजें जो वे चाहते थे, लेने के लिए दूर देशों में भेजा।
- शास्त्री वे लोग थे जो लिखना जानते थे और मुहरों को तैयार करने में मदद करते थे और शायद अन्य सामग्रियों पर लिखते थे जो बची नहीं हैं।
- पुरुष और महिलाएँ, शिल्पकार थे जो हर तरह की चीजें बनाते थे।
- हड़प्पा के शहरों में कई टेराकोटा खिलौने मिले हैं, जिससे पता चलता है कि बच्चों ने इनसे खेला होगा।

शहर में नए शिल्प

- हड़प्पा के शहरों में जो वस्तुएँ बनाई और पाई गईं उनमें से अधिकांश पत्थर, शंख और धातु की थीं, जिनमें तांबा, कांस्य, सोना और चांदी शामिल हैं।
- तांबे और कांसे का इस्तेमाल औजार, हथियार, आभूषण और बर्तन बनाने के लिए किया जाता था।
- सोने और चांदी का उपयोग आभूषण और बर्तन बनाने के लिए किया जाता था।
- हड़प्पावासियों ने पत्थर से मुहरें बनाईं जो आकार में आयताकार थीं और उन पर एक जानवर खुदा हुआ था।
- हड़प्पा के लोग सुंदर काले डिजाइन के बर्तन बनाते थे।
- मोहनजोदड़ो में चांदी के फूलदान और तांबे की कुछ वस्तुओं के ढक्कन से जुड़े कपड़े के वास्तविक टुकड़े पाए गए।
- हड़प्पा में उत्पन्न होने वाली बहुत–सी वस्तुएँ संभवतः विशेषज्ञों की कृतियाँ थीं।

कच्चे माल की तलाश में

- कच्चा माल ऐसे पदार्थ हैं जो या तो प्राकृतिक रूप से पाए जाते हैं या किसानों या चरवाहों द्वारा उत्पादित किए जाते हैं।
- तैयार माल के उत्पादन के लिए कच्चे माल को संसाधित किया जाता है।
- हड़प्पावासियों द्वारा उपयोग किया जाने वाला कच्चा माल स्थानीय रूप से उपलब्ध था। जबकि तांबे, टिन, सोना, चांदी और कीमती पत्थरों जैसी कई वस्तुएँ दूर–दूर से लाई जाती थीं।
- हड़प्पावासियों को संभवतः वर्तमान राजस्थान और पश्चिम एशिया के ओमान से तांबा प्राप्त होता था।
- टिन, जिसे कांस्य बनाने के लिए तांबे के साथ मिश्रित किया गया था, वर्तमान अफगानिस्तान और ईरान से लाया गया था।

- सोना वर्तमान कर्नाटक से लाया गया था, और कीमती पत्थर वर्तमान गुजरात, ईरान और अफगानिस्तान से लाया गया था।

शहरों में लोगों के लिए भोजन

- ग्रामीण इलाकों में रहने वाले लोग फसल उगाते थे और जानवरों को पालते थे। हड़प्पा के लोग गेहूँ, जौ, दालें, मटर, चावल, तिल, अलसी और सरसों उगाते थे।
- हल का उपयोग मिट्टी को मोड़ने और बीज बोने के लिए, मिट्टी खोदने के लिए किया जाता था।
- हड़प्पावासी मवेशी, भेड़, बकरी और भैंस पालते थे।
- लोग बेर जैसे फल भी इकट्ठा करते थे, मछलियाँ पकड़ते थे और मृग जैसे जंगली जानवरों का शिकार करते थे।

एक नजदीकी नजर – गुजरात में हड़प्पा के शहर

धोलावीरा शहर कच्छ के रण में खादिर बेयत पर स्थित था।

- इस शहर में मीठा पानी और उपजाऊ मिट्टी थी।
- धोलावीरा को तीन भागों में विभाजित किया गया था, और प्रत्येक भाग विशाल पत्थर की दीवारों से घिरा हुआ था।
- बस्ती में एक बड़ा खुला क्षेत्र भी था, जहाँ सार्वजनिक समारोह आयोजित किए जाते थे।
- हड़प्पा लिपि के बड़े अक्षरों को सफेद पत्थर से उकेरा गया था और लकड़ी में जड़ा गया था।

लोथल शहर गुजरात में साबरमती की एक सहायक नदी के किनारे खंबात की खाड़ी के पास स्तिथ था।

- शहर में एक भंडारगृह था।
- मनके बनाने की कार्यशाला, पत्थर के टुकड़े, आधे बने मनके, मनके बनाने के उपकरण और तैयार मनके सभी यहाँ मिले हैं।

अंत का रहस्य

- लगभग 3900 साल पहले हम एक बड़े बदलाव की शुरुआत पाते हैं। कई शहरों में लोगों ने रहना बंद कर दिया है। लेखन, मुहरों और बाटों का अब उपयोग नहीं किया जाता था।
- लंबी दूरी से लाया गया कच्चा माल दुर्लभ हो गया।
- मोहनजोदड़ो में, हम देखते हैं कि सड़कों पर कचरा जमा हो गया है, जल निकासी व्यवस्था टूट गई है, और सड़कों पर भी नए, कम प्रभावशाली घर बनाए गए हैं।

यह सब क्यों हुआ?

- कुछ विद्वानों का सुझाव है कि नदियाँ सूख गईं।
- दूसरों का सुझाव है कि वनों की कटाई कारण थी।
- कुछ इलाकों में बाढ़ आ गई।
- लेकिन इनमें से कोई भी कारण सभी शहरों के अंत की व्याख्या नहीं कर सकता है।
- ऐसा प्रतीत होता है जैसे शासकों ने नियंत्रण खो दिया हो।
- सिंध और पश्चिम पंजाब (वर्तमान पाकिस्तान) में शहरों को छोड़ दिया गया, जबकि कई लोग पूर्व और दक्षिण में नई, छोटी बस्तियों में चले गए।

कैसे कुछ लोग शासक बन गए?

- लगभग 3000 वर्ष पूर्व राजाओं के चयन के तरीकों में कुछ परिवर्तन हुए थे।
- कुछ पुरुषों को तब बहुत बड़े यज्ञ करके राजा के रूप में पहचाना जाता था।
- अश्वमेध या घोड़े की बलि एक ऐसा अनुष्ठान था जिसमें एक घोड़े को स्वतंत्र रूप से घूमने के लिए छोड़ दिया जाता था और राजा के सैनिकों द्वारा उसकी रक्षा की जाती थी।
- यदि घोड़ा अन्य राजाओं के राज्यों में भटकता था और वे उसे रोकते थे, तो उन्हें युद्ध करना पड़ता था। अगर उन्होंने घोड़े को जाने दिया, तो इसका मतलब था कि उन्होंने स्वीकार किया कि जो राजा यज्ञ करना चाहता था, वह उनसे अधिक शक्तिशाली था।
- यज्ञ का आयोजन करने वाले राजा को बहुत शक्तिशाली माना जाता था और आने वाले सभी लोग उसके लिए उपहार लाते थे।

जनपद

- बड़े यज्ञ करने वाले राजाओं को तब जनों के बजाय जनपदों के राजा के रूप में मान्यता दी गई थी।
- जनपद शब्द का अर्थ उस भूमि से है जहाँ जन ने अपना पैर रखा और बस गए।
- पुरातत्वविदों ने इन जनपदों में कई बस्तियों की खुदाई की है जैसे दिल्ली में पुराना किला, मेरठ के पास हस्तिनापुर और ईटा के पास अतरंजीखेड़ा।

महाजनपद

- लगभग 2500 साल पहले, कुछ जनपद दूसरों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण हो गये थे, और उन्हें महाजनपद के रूप में जाना जाता था।
- अधिकांश महाजनपदों की राजधानी थी, इनमें से कई किलेबंद थे जिसका अर्थ है कि उनके चारों ओर लकड़ी, ईंट या पत्थर की विशाल दीवारें बनाई गई थीं।

किले शायद इसलिए बनाए गए थे क्योंकि

- लोग अन्य राजाओं के हमलों से डरते थे और उन्हें सुरक्षा की आवश्यकता थी।
- कुछ शासक अपने शहरों के चारों ओर बड़ी, ऊँची और प्रभावशाली दीवारों का निर्माण करके दिखाना चाहते थे कि वे कितने अमीर और शक्तिशाली थे।
- गढ़वाले क्षेत्र के अंदर रहने वाली भूमि और लोगों को राजा द्वारा अधिक आसानी से नियंत्रित किया जा सकता था।
- इतनी बड़ी दीवारों के निर्माण के लिए बड़ी योजना की आवश्यकता थी।

कर

महाजनपदों के शासक विशाल किलों का निर्माण कर रहे थे और बड़ी सेनाओं का रखरखाव कर रहे थे इसलिए उन्हें अधिक संसाधनों की आवश्यकता थी। अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए वे नियमित कर वसूल करने लगे।

- फसलों पर कर लोगों से वसूल किया जाता था क्योंकि अधिकांश लोग

किसान थे। आमतौर पर, जो उत्पादन किया जाता था, उसका 1/6 हिस्सा कर तय किया जाता था। इसे भागा या शेयर के रूप में जाना जाता था ।

- शिल्पकारों पर भी कर लगाया जाता था।
- चरवाहों से जानवरों और पशु उत्पादों के रूप में करों का भुगतान करने की भी अपेक्षा की जाती थी।
- व्यापार के माध्यम से खरीदे और बेचे जाने वाले सामानों पर भी कर लगाया जाता था।
- शिकारियों और संग्रहकर्ताओं को भी राजा को कर के रूप में वनोपज उपलब्ध कराना होता था।

कृषि में परिवर्तन

महाजनपद काल के आसपास कृषि में दो बड़े परिवर्तन हुए।

- लोहे के हल का बढ़ता उपयोग
- लोगों ने धान की रोपाई शुरू कर दी थी। इसका मतलब यह हुआ कि जमीन पर बीज बिखेरने के बजाय पौधे उगाए गए और फिर खेतों में लगाए गए।

एक नजदीकी नजर – मगध

- लगभग 200 वर्षों में मगध सबसे महत्वपूर्ण महाजनपद बन गया। गंगा और सोन जैसी कई नदियाँ मगध से होकर बहती थीं जो निम्नलिखित के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं–
  - परिवहन
  - जल वितरण
  - भूमि को उपजाऊ बनाना
- मगध के कुछ हिस्से वनाच्छादित थे जिनका उपयोग घरों, गाड़ियों और रथों के निर्माण के लिए किया जाता था।
- इस क्षेत्र में लौह अयस्क की खदानें थीं जिनका उपयोग मजबूत उपकरण और हथियार बनाने के लिए किया जा सकता था।
- मगध के दो बहुत शक्तिशाली शासक, बिंबिसार और अजातशत्रु थे, जिन्होंने अन्य जनपदों को जीतने के लिए हर संभव साधन का इस्तेमाल किया।
- बिहार में राजगृह (वर्तमान राजगीर) कई वर्षों तक मगध की राजधानी थी। बाद में राजधानी को पाटलिपुत्र (वर्तमान पटना) में स्थानांतरित कर दिया गया।

एक नजदीकी नजर – वज्जी

- वज्जी, वैशाली (बिहार) में अपनी राजधानी के साथ, सरकार के एक अलग रूप के अधीन था, जिसे गण या संघ के रूप में जाना जाता था।
- एक गण में अनेक शासक होते थे। प्रत्येक को राजा के रूप में जाना जाता था।
- इन राजाओं ने एक साथ अनुष्ठान किया। वे सभाओं में भी मिले, और चर्चा और बहस के माध्यम से तय किया कि क्या करना है और कैसे करना है।

बुद्ध की कहानी

- लगभग 2500 वर्ष पूर्व बौद्ध धर्म के संस्थापक सिद्धार्थ का जन्म हुआ था।
- उन्हें गौतम बुद्ध के नाम से भी जाना जाता था।
- बुद्ध शाक्य गण के नाम से जाने वाले एक छोटे गण से संबंधित थे, और एक क्षत्रिय थे।
- जब वे युवा थे, तब उन्होंने ज्ञान की तलाश में अपने घर की सुख–सुविधाओं को छोड़ दिया।
- उन्होंने बिहार के बोधगया में एक पीपल के पेड़ के नीचे कई दिनों तक तपस्या की, जहाँ उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई। उसके बाद, उन्हें बुद्ध या बुद्धिमान के रूप में जाना जाने लगा।
- फिर वे वाराणसी के पास सारनाथ गए, जहाँ उन्होंने पहली बार प्रवचन दिया।
- उन्होंने अपना शेष जीवन पैदल यात्रा करते हुए, एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हुए, लोगों को पढ़ाते हुए बिताया, जब तक कि कुशीनारा में उनका निधन नहीं हो गया।

बुद्ध की शिक्षा

- बुद्ध ने सिखाया कि जीवन दुख से भरा है।
- हमें जो चाहिए वो मिल भी जाए तो हम संतुष्ट नहीं होते और इससे भी ज्यादा चाहते हैं।
- बुद्ध ने इसे प्यास या तन्हा के रूप में वर्णित किया।
- उन्होंने सिखाया कि हर चीज में संयम का पालन करके इस निरंतर लालसा को दूर किया जा सकता है।
- उन्होंने लोगों को दयालु होना और जानवरों सहित दूसरों के जीवन का सम्मान करना भी सिखाया।
- उनका मानना था कि हमारे कार्यों के परिणाम (कर्म), चाहे अच्छे हों या बुरे, इस जीवन और अगले जीवन दोनों को प्रभावित करते हैं।

उपनिषद

- उपनिषद का अर्थ है 'निकट जाना और पास बैठना'।
- उपनिषद में निहित ग्रंथ शिक्षकों और छात्रों के बीच बातचीत थे।
- अधिकांश उपनिषद विचारक पुरुष थे, विशेषकर ब्राह्मण और राजा।
- गार्गी जैसी महिला विचारकों का उल्लेख मिलता है, जो अपनी शिक्षा के लिए प्रसिद्ध थीं और शाही दरबारों में होने वाली बहसों में भाग लेती थीं।
- उपनिषदों के कई विचार बाद में प्रसिद्ध विचारक शंकराचार्य द्वारा विकसित किए गए थे।

जैन धर्म

- जैनों के अंतिम और 24वें तीर्थंकर वर्धमान महावीर थे।
- वह लिच्छवियों के एक क्षत्रिय राजकुमार थे, एक समूह जो वज्जी संघ का हिस्सा था।
- 30 वर्ष की आयु में वे घर छोड़कर वन में रहने चले गए।
- 12 वर्षों तक उन्होंने एक कठिन और एकाकी जीवन व्यतीत किया, जिसके अंत में उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई।
- उन्होंने एक सरल सिद्धांत सिखाया–सत्य जानने की इच्छा रखने वाले पुरुषों और महिलाओं को अपना घर छोड़ देना चाहिए। उन्हें सिखाया की अहिंसा के नियमों का बहुत सख्ती से पालन करना चाहिए।

- महावीर के अनुयायी, जो जैन के नाम से जाने जाते थे, को बहुत सादा जीवन व्यतीत करना पड़ता था। उन्हें बिल्कुल ईमानदार होना और विशेष रूप से चोरी न करने के लिए कहा गया था। साथ ही उन्हें ब्रह्मचर्य का पालन करना था और पुरुषों को अपने कपड़ों सहित सब कुछ त्यागना पड़ता था।
- अधिकांश पुरुषों और महिलाओं के लिए इन सख्त नियमों का पालन करना बहुत मुश्किल था।
- जैन धर्म को मुख्य रूप से व्यापारियों का समर्थन प्राप्त था।
- महावीर और उनके अनुयायियों की शिक्षाओं को कई शताब्दियों तक मौखिक रूप से प्रसारित किया गया था।

संघ

- संघ उन लोगों का संघ था जिन्होंने अपने घरों को छोड़ दिया था।
- बौद्ध संघ के लिए बनाए गए नियमों को विनय पिटक नामक पुस्तक में लिखा गया था ।
- संघ में शामिल होने वाले पुरुषों और महिलाओं ने सादा जीवन व्यतीत किया।
- वे ज्यादातर समय ध्यान लगाते थे, और निश्चित घंटों के दौरान भोजन के लिए भीख मांगने के लिए शहरों और गाँवों में जाते थे।
- यही कारण है कि उन्हें भिक्खु (संन्यासी के लिए प्राप्त शब्द – भिखारी) और भिक्खुनियों के रूप में जाना जाता था ।
- संघ में शामिल होने वालों में ब्राह्मण, क्षत्रिय, व्यापारी, मजदूर, नाई, दरबारी और दास शामिल थे।

मठ

- जैन और बौद्ध दोनों भिक्षु साल भर जगह–जगह जाकर लोगों को शिक्षा देते रहे। वे एक ही स्थान पर केवल बरसात के मौसम में रुकते थे, जब यात्रा करना बहुत कठिन था।
- उनके समर्थकों ने उनके लिए बगीचों में अस्थायी आश्रयों का निर्माण किया, या वे पहाड़ी इलाकों में प्राकृतिक गुफाओं में रहते थे।
- मठों का निर्माण करने वाले स्थायी आश्रयों को विहार कहा जाता था। सबसे पुराने विहार लकड़ी के और फिर ईंट के बने होते थे।

एक बहुत बड़ा राज्य (एक साम्राज्य)

- अशोक, 2300 साल पहले अपने दादा चंद्रगुप्त मौर्य द्वारा स्थापित साम्राज्य के सबसे महान शासकों में से एक थे।
- उन्हें चाणक्य या कौटिल्य नामक एक बुद्धिमान व्यक्ति द्वारा समर्थित किया गया था।
- चाणक्य के विचारों को अर्थशास्त्र में लिखा गया था।
- साम्राज्य में कई शहर थे, जिसमें राजधानी पाटलिपुत्र, तक्षशिला और उज्जैन के साथ–साथ मध्य एशिया सहित उत्तर–पश्चिम का प्रवेश द्वार तक्षशिला शामिल था।
- उज्जैन उत्तर से दक्षिण भारत के मार्ग पर स्थित था।
- इन शहरों में व्यापारी, अधिकारी और शिल्पकार रहते थे।
- अन्य क्षेत्रों में, किसानों और चरवाहों के गाँव थे।
- मध्य भारत में ऐसे जंगल थे जहाँ लोग वन उपज इकट्ठा करते थे और भोजन के लिए जानवरों का शिकार करते थे।
- साम्राज्य के विभिन्न भागों में लोग भिन्न–भिन्न भाषाएँ बोलते थे और भिन्न–भिन्न प्रकार के भोजन करते थे। वे तरह–तरह के कपड़े भी पहनते थे।

साम्राज्य राज्यों से कैसे भिन्न हैं?

साम्राज्यों को राज्यों की तुलना में अधिक संसाधनों की आवश्यकता होती है क्योंकि वे राज्यों से बड़े होते हैं। उन्हें बड़ी सेनाओं द्वारा संरक्षित करने की आवश्यकता होती है और उन्हें बड़ी संख्या में अधिकारियों की भी आवश्यकता होती है जो कर एकत्र करते हैं।

साम्राज्य पर शासन

- अलग–अलग हिस्सों में बड़े साम्राज्य का अलग–अलग शासन था।
- पाटलिपुत्र के आसपास का क्षेत्र सम्राट के सीधे नियंत्रण में था।
- किसानों, चरवाहों, शिल्पकारों और व्यापारियों से कर एकत्र करने के लिए अधिकारियों को नियुक्त किया गया था।
- उन्होंने शासक के आदेशों की अवहेलना करने वालों को भी दंडित किया।
- दूत इधर–उधर जाते थे। साथ ही जासूसों ने अधिकारियों पर नजर रखी।
- शाही परिवार के सदस्यों और वरिष्ठ मंत्रियों की मदद से सम्राट उन सभी की देखरेख करता था।
- अन्य क्षेत्रों या प्रांतों पर तक्षशिला या उज्जैन जैसी प्रांतीय राजधानी से शासन किया जाता था, जिसमें कुछ मात्रा में पाटलिपुत्र से नियंत्रण होता था, और शाही राजकुमारों को अक्सर राज्यपाल के रूप में भेजा जाता था।
- मौर्यों ने परिवहन के लिए महत्वपूर्ण सड़कों और नदियों को नियंत्रित करने का प्रयास किया।

अद्वितीय शासक अशोक

- प्रसिद्ध मौर्य शासक, अशोक पहले शासक थे जिन्होंने शिलालेखों के माध्यम से अपने संदेश को लोगों तक पहुँचाने का प्रयास किया। ये शिलालेख प्राकृत भाषा में थे और ब्राह्मी लिपि में लिखे गए थे।

कलिंग में अशोक का युद्ध

- कलिंग तटीय उड़ीसा का प्राचीन नाम था।
- अशोक ने कलिंग को जीतने के लिए युद्ध लड़ा।
- जब उसने हिंसा और रक्तपात देखा तो वह भयभीत हो गया और इसलिए उसने और युद्ध नहीं लड़ने का फैसला किया।

अशोक का धम्म क्या था?

- इसमें किसी देवता की पूजा, या बलिदान का प्रदर्शन शामिल नहीं था।
- अपनी प्रजा को शिक्षा देना अशोका कर्तव्य था और वह बुद्ध की शिक्षाओं से भी प्रेरित था।
- साम्राज्य में लोगों ने विभिन्न धर्मों का पालन किया, जिससे संघर्ष हुआ। जानवरों की बलि दी जाती थी, दासों और नौकरों के साथ बुरा व्यवहार किया जाता था, परिवारों और पड़ोसियों में झगड़े होते थे।
- इन समस्याओं का समाधान करना अशोक का कर्तव्य था। उसने धम्म महामत्ता के नाम से जाने जाने वाले अधिकारियों को नियुक्त किया, जो लोगों को धम्म के बारे में सिखाने के लिए जगह–जगह जाते थे।

- उसके संदेश चट्टानों और खंभों पर खुदे हुए थे। उसने अपने अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे उसका संदेश उन लोगों को पढ़ें जो इसे स्वयं नहीं पढ़ सकते हैं।
- उसे अन्य देशों, जैसे सीरिया, मिस्र, ग्रीस और श्रीलंका में धम्म के बारे में विचारों को फैलाने के लिए दूत भी भेजे।

मौर्यों के पतन के बाद गुप्त वंश का उदय हुआ। इस काल को गुप्त युग के नाम से जाना जाता है। गुप्त राजवंश के पतन के बाद, कई छोटे राज्य उत्पन्न हुए और ऐसा ही एक राज्य थानेश्वर वर्धन वंश द्वारा शासित था। इस वंश का सबसे महान शासक हर्षवर्धन था। फिर सातवाहन के पतन के बाद, चालुक्य और पल्लव दक्षिण भारत में प्रमुखता से आए।

समुद्रगुप्त की प्रशस्ति हमें क्या बताती है?

- समुद्रगुप्त की प्रशस्ति में कवि ने राजा की एक योद्धा के रूप प्रशंसा की है। उन्हें देवताओं के समान भी वर्णित किया गया है। प्रशस्ति की रचना बहुत लंबे वाक्यों में की गई थी।
- हरिषेण ने चार विभिन्न प्रकार के शासकों का वर्णन किया और हमें उनके प्रति समुद्रगुप्त की नीतियों के बारे में बताया।
  - आर्यावर्त के शासक, जहाँ नौ शासकों को उखाड़ फेंका गया और उनके राज्यों को समुद्रगुप्त के साम्राज्य का हिस्सा बना दिया गया।
  - दक्षिणापथ के शासक जहाँ बारह शासकों ने पराजित होने के बाद समुद्रगुप्त के सामने आत्मसमर्पण कर दिया और बाद में समुद्रगुप्त ने फिर से शासन करने की अनुमति दी।
  - असम, तटीय बंगाल, नेपाल और उत्तर–पश्चिम में कई गण संघों सहित पड़ोसी राज्यों का आंतरिक घेरा।
  - बाहरी क्षेत्रों के शासक, शायद कुषाणों और शकों के वंशज, और श्रीलंका के शासक ने उसे तोहफे प्रस्तुत किये और बेटियों की शादी की पेशकश की।

वंशावलि

- समुद्रगुप्त की प्रशस्तियों में समुद्रगुप्त के परदादा, दादा, पिता और माता जैसे पूर्वजों के नामों का उल्लेख है।
- उनकी माँ, कुमारा देवी, लिच्छवि गण से संबंधित थीं, जबकि उनके पिता, चंद्रगुप्त, गुप्त वंश के पहले शासक थे, जिन्होंने महाराज–अधिराज की भव्य उपाधि को अपनाया था, एक उपाधि जिसे समुद्रगुप्त ने भी इस्तेमाल किया था।
- समुद्रगुप्त राजवंश के बाद के शासकों, जैसे उनके पुत्र, चंद्रगुप्त द्वितीय की वंशावली में शामिल हैं।
- चंद्रगुप्त द्वितीय ने पश्चिमी भारत में एक अभियान का नेतृत्व किया, जहाँ उन्होंने अंतिम शकों पर विजय प्राप्त की।
- बाद की मान्यता के अनुसार, उनका दरबार विद्वान लोगों से भरा था, जिनमें कवि कालिदास और खगोलशास्त्री आर्यभट्ट भी शामिल थे।

हर्षवर्धन और हर्षचरित

- लगभग 1400 वर्ष पूर्व शासन करने वाले हर्षवर्धन और उनकी जीवनी उनके दरबारी कवि बाणभट्ट ने संस्कृत में लिखी थी।
- वह अपने पिता का सबसे बड़ा पुत्र नहीं था, लेकिन अपने पिता और बड़े भाई की मृत्यु के बाद थानेसर का राजा बना।
- उसके बहनोई ने कन्नौज पर शासन किया जिसे बंगाल के शासक ने मार डाला था।
- हर्ष ने कन्नौज के राज्य पर अधिकार कर लिया और फिर बंगाल के शासक के खिलाफ एक सेना का नेतृत्व किया।
- हर्ष पूर्व में सफल रहा और उसने मगध और बंगाल दोनों पर विजय प्राप्त की।
- उसने दक्कन में जाने के लिए नर्मदा को पार करने की कोशिश की, लेकिन चालुक्य वंश के एक शासक पुलकेशिन द्वितीय ने उसे रोक दिया।

पल्लव, चालुक्य और पुलकेशिन की प्रशस्ति

- इस अवधि के दौरान, पल्लव और चालुक्य दक्षिण भारत में सबसे महत्वपूर्ण शासक राजवंश थे।
- पल्लवों का राज्य उनकी राजधानी कांचीपुरम के आसपास के क्षेत्र से कावेरी डेल्टा तक फैला हुआ था, जबकि चालुक्यों का राज्य कृष्णा और तुंगभद्रा नदियों के बीच रायचूर दोआब के आसपास केंद्रित था।
- चालुक्यों की राजधानी ऐहोल एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र था। यह कई मंदिरों के साथ एक धार्मिक केंद्र के रूप में विकसित हुआ।
- पुलकेशिन द्वितीय सबसे प्रसिद्ध चालुक्य शासक था। उनकी प्रशस्ति की रचना उनके दरबारी कवि रविकीर्ति ने की थी, जो उनके पूर्वजों के बारे में बताती हैं।

इन राज्यों का प्रशासन कैसे किया जाता था?

भू–राजस्व महत्वपूर्ण बना रहा और गाँव प्रशासन की मूल इकाई बना रहा। लेकिन, नए विकास भी पेश किए गए। राजाओं ने आर्थिक या सामाजिक रूप से या अपनी राजनीतिक और सैन्य ताकत के कारण शक्तिशाली पुरुषों का समर्थन हासिल करने के लिए कई कदम उठाए। उदाहरण के लिए–

- कुछ महत्वपूर्ण प्रशासनिक पद वंशानुगत कर दिए गए।
- कभी–कभी, एक व्यक्ति कई पदों पर आसीन होता था।

एक नई तरह की सेना

- राजाओं ने हाथियों, रथों, घुड़सवारों और पैदल सैनिकों के साथ एक सुव्यवस्थित सेना बनाए रखी।
- सैन्य नेताओं ने राजाओं को जब भी उनकी आवश्यकता होती थी, उन्हें सेना प्रदान की लेकिन उन्हें नियमित वेतन नहीं दिया जाता था।
- वेतन के बदले, उनमें से कुछ को भूमि का अनुदान मिला।
- उन्होंने भूमि से राजस्व एकत्र किया और इसका उपयोग सैनिकों और घोड़ों को बनाए रखने और युद्ध के लिए उपकरण प्रदान करने के लिए किया। ये लोग सामंत के नाम से जाने जाते थे।

दक्षिणी राज्यों में विधानसभाएँ

- पल्लवों के शिलालेखों में कई स्थानीय सभाओं का उल्लेख है, जिसमें सभा, ब्राह्मण जमींदारों की एक सभा शामिल है।
- यह सभा उप–समितियों के माध्यम से कार्य करती थी, जो सिंचाई, कृषि कार्यों, सड़क बनाने, स्थानीय मंदिरों आदि की देखभाल करती थी।
- उन क्षेत्रों में एक ग्राम सभा पाई जाती थी जहाँ जमींदार ब्राह्मण नहीं थे।
- नगरम व्यापारियों का एक संगठन था।

साम्राज्यों में आम लोग

- कालिदास राजा के दरबार में जीवन का चित्रण करने वाले अपने नाटकों के लिए जाने जाते थे।
- इन नाटकों की एक दिलचस्प विशेषता यह है कि राजा और अधिकांश ब्राह्मणों को संस्कृत बोलते हुए दिखाया गया है, जबकि राजा और ब्राह्मणों के अलावा अन्य महिलाएँ और पुरुष प्राकृत का उपयोग करते हैं।
- कालिदास का सबसे प्रसिद्ध नाटक, अभिज्ञान शाकुंतलम, दुष्यंत नाम के एक राजा और शकुंतला नाम की एक युवती के बीच प्रेम की कहानी है।

दूरस्थ भूमि के साथ संपर्क

दूरस्थ भूमि से सम्पर्क में व्यापारियों की भूमिका

- दूरस्थ भूमि से सम्पर्क में व्यापारियों की भूमिका प्रमुख थी। व्यापारी कई प्रकार के सामान एक स्थान से ले जाकर दूसरे स्थान पर बेचते थे। व्यापारी सोना, काली मिर्च जैसे सामानों को समुद्री जहाजों और सड़कों के रास्ते रोम पहुँचाते थे। दक्षिण भारत में ऐसे अनेक रोमन सोने के सिक्के मिले हैं।
- व्यापारियों ने कई समुद्री रास्ते खोज निकाले। इनमें से कुछ समुद्र के किनारे चलते थे कुछ अरब सागर और बंगाल की खाड़ी पार करते थे।

समुद्र तटों से लगे राज्यों का दूरस्थ भूमि से सम्पर्क

- भारतीय उपमहाद्वीप के दक्षिणी भाग के तटीय क्षेत्र में तीन शासक परिवार चोल, चेर तथा पाण्ड्य काफी शक्तिशाली माने जाते थे।
- इन तीनों मुखियाओं के अपने दो-दो सत्ता केन्द्र थे। इनमें से एक तटीय हिस्से में और दूसरा अन्दरूनी हिस्से में था। इस तरह छः केन्द्रों में से दो बहुत महत्त्वपूर्ण थे। एक चोलों का पतन पुहार या कावेरीपट्टिनम, दूसरा पाण्ड्यों की राजधानी मदुरै।
- बाद में सातवाहन नामक राजवंश का प्रभाव बढ़ गया। सातवाहनों का सबसे प्रमुख राजा गौतमी पुत्र श्री सातकर्णी था। वह और अन्य सभी सातवाहन शासक दक्षिणापथ के स्वामी कहे जाते थे। दक्षिणापथ का शाब्दिक अर्थ दक्षिण की ओर जाने वाला रास्ता होता है।
- सिल्क रूट पर नियन्त्रण रखने वाले शासकों में सबसे प्रसिद्ध कुषाण थे। करीब 2,000 वर्ष पहले मध्य-एशिया तथा पश्चिमोत्तर भारत पर इनका शासन था।
- पेशावर और मथुरा कुषाण के दो मुख्य शक्तिशाली केन्द्र थे। तक्षशिला भी इनके ही राज्य का हिस्सा था।
- रेशम बनाने की तकनीक का आविष्कार सबसे पहले चीन में करीब 7,000 वर्ष पहले हुआ।
- चीन से पैदल, घोड़ों या ऊँटों पर कुछ लोग दूर-दूर की जगहों पर जाते थे और अपने साथ रेशमी कपड़े भी ले जाते थे।
- जिस रास्ते से ये लोग यात्रा करते थे वह रेशम मार्ग (सिल्क रूट) के नाम से प्रसिद्ध हो गया।
- भारतीय उपमहाद्वीप में सबसे पहले सोने के सिक्के जारी करने वाले शासकों में कुषाण थे।
- कुषाणों का सबसे प्रसिद्ध राजा कनिष्क था। वह 72 ई. में कुषाण साम्राज्य का शासक बना।
- बुद्ध की जीवनी बुद्ध चरित के रचनाकार कवि अश्वघोष, कनिष्क के दरबार में रहते थे। अश्वघोष तथा अन्य बौद्ध विद्वानों ने अब संस्कृत में लिखना शुरू कर दिया था।
- कनिष्क के समय बौद्ध धर्म की एक नई धारा महायान का विकास हुआ।

दूरस्थ भूमि से आए तीर्थयात्री

- भारत की यात्रा पर आए चीनी बौद्ध तीर्थयात्री फा-शिएन (फाह्यान) काफी प्रसिद्ध है। वह करीब 1600 वर्ष पहले आया। श्वैन त्सांग (ह्वेनसांग) 1400 वर्ष पहले भारत आया और उसके करीब 50 वर्ष बाद इत्सिंग आया। वे सब बुद्ध के जीवन से जुड़ी जगहों और प्रसिद्ध मठों को देखने के लिए भारत आए थे। इनमें से प्रत्येक तीर्थयात्री ने अपनी यात्रा का वर्णन लिखा। इन्होंने अपनी यात्रा के दौरान आई मुश्किलों के बारे में भी लिखा।

संस्कृति और विज्ञान

- संस्कृति शब्द लैटिन भाषा के 'Cult' या 'Cultus' शब्द से लिया गया है जिसका अर्थ है विकसित करना या परिष्कृत करना। संस्कृति की विभिन्न विशेषताएँ हैं संस्कृति एक समूह के द्वारा प्राप्त की जाती है, नष्ट की जा सकती है या बाँटी जाती है। यह संचयी है। यह परिवर्तनीय है, विविध है और हमें करने योग्य व्यवहारों के विविध तरीके प्रदान करती है, यह परिवर्तित हो सकती है। संस्कृति के भौतिक और गैर-भौतिक दोनों घटक आते हैं।

भारतीय संस्कृति

- भारत एक ऐसा विशाल देश है, जो स्वयं में भौतिक और सामाजिक वातावरण की अनेक विविधता को समाए हुए है। यह विविधता भाषा, पहनावा, धर्म, रीति-रिवाज, नृत्य, संगीत, आदि अनेक क्षेत्रों में दिखाई पड़ती है।
- भारतीय संस्कृति का यह विशिष्ट लक्षण और अनोखापन सभी भारतीयों के लिए अमूल्य धरोहर है।

भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषताएँ

- लगभग 4500 साल से भी ज्यादा पहले भारतीय उपमहाद्वीप में हड़प्पा सभ्यता फली-फूली थी।
- हड़प्पाकालीन संस्कृति की कुछ प्रथाएँ आज भी प्रचलित हैं; जैसे—मातृ देवी और पशुपति की उपासना।
- वैदिक, बौद्ध और जैन धर्म तथा कई अन्य धर्मों की परम्पराएँ आज भी प्रचलित हैं।
- छठी शताब्दी ईसा पूर्व में जैन और बौद्ध धर्म द्वारा वैदिक धर्म में प्रवर्तन तथा आधुनिक भारत में 18वीं और 19वीं शताब्दी में हुआ नवजागरण ऐसे उदाहरण हैं जिनके द्वारा भारतीय चिन्तन और व्यवहार में अनेक क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए। इन सबके बावजूद भारतीय संस्कृति के मूल दर्शन का सूत्र टूटा नहीं और जारी है। इस प्रकार निरन्तरता और परिवर्तन का क्रम भारतीय संस्कृति की विशेषता रही है। यह हमारी संस्कृति की गतिशीलता का परिचायक है।
- संसार में कुछ ही संस्कृतियों में ऐसी विविधता है जैसी भारतीय संस्कृति में।
- भारत संसार के बहुत-से धर्मों का निवास स्थान है; जैसे—जैन धर्म, बौद्ध धर्म, सिख धर्म और हिन्दू धर्म।
- विभिन्न प्रकार के लोक तथा शास्त्रीय संगीत और नृत्य हमारे देश में विद्यमान हैं।
- विभिन्न नृजातीय समूहों का परस्पर मिल जाना हमारी सांस्कृतिक विविधता

का दूसरा महत्वपूर्ण घटक है। विभिन्न नृजाति समूह जैसे—ईरानी, ग्रीक, कुषाण, शक, हूण, अरबी, तुर्की, मुगल और यूरोपियन भी यहाँ आए। वे यहीं बस गए यहाँ के स्थानीय निवासियों के साथ घुल-मिल गए।

- भारत ने सदियों से हमेशा अन्य विचारों को अपनाने की अपनी असाधारण क्षमता को दिखाया है। इसने हमारी संस्कृति को समृद्ध और विविध बनाया है।
- सैनिक अभियानों के कारण भी यहाँ के लोग एक स्थान से दूसरे स्थान तक गए। इसने भी विचारों के आदान-प्रदान में सहायता की है। इस प्रकार भारतीय संस्कृति में एक समानता का आगमन हुआ जिसे हमारे सम्पूर्ण इतिहास ने बरकरार रखा है।
- भारतीय संस्कृति का धर्मनिरपेक्ष स्वरूप भिन्न सांस्कृतिक समूहों का एक लम्बे समय से परस्पर घुल-मिल जाने का परिणाम है।
- संविधान भारत को एक धर्मनिरपेक्ष देश घोषित करता है। हर कोई अपने मन-पसन्द धर्म को मानने, पालन करने और प्रचार करने के लिए स्वतन्त्र है।

प्राचीन भारत में विज्ञान

- भारत में नक्षत्र विज्ञान ने बहुत उन्नति की। नक्षत्रों की गतियों पर बल देकर उनका सूक्ष्म निरीक्षण किया गया।
- आर्यभट्ट के संक्षिप्त आर्यभट्टीय ग्रन्थ में 121 श्लोक हैं। इनमें खगोल विषयक परिभाषाओं, नक्षत्रों की सही स्थिति को पहचानने के विभिन्न तरीकों, सूर्य और चन्द्र की गतिविधियों के वर्णन और ग्रहणों की गणना विषयक अनेक खण्ड हैं। ग्रहण का कारण उनके अनुसार यह था कि पृथ्वी गोलाकार है और अपनी धुरी पर घूमती है और जब पृथ्वी की छाया चन्द्रमा पर पड़ती है, तब चन्द्र ग्रहण होता है और जब चन्द्रमा की छाया पृथ्वी पर पड़ती है, तब सूर्य ग्रहण होता है।
- वराहमिहिर की बृहत्संहिता (6 शताब्दी ई. पू.) नक्षत्र विज्ञान के क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण कृति है, जिसमें यह बताया गया है कि चन्द्रमा पृथ्वी के चारों ओर और पृथ्वी सूर्य के चारों ओर परिक्रमा करती है।
- भारतीय गणित शास्त्र का जन्म शुल्व सूत्रों से माना जाता है।
- ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी में आपस्तम्ब ने व्यावहारिक रेखा गणित का परिचय दिया जिसके अन्तर्गत न्यूनकोण, दीर्घकोण और समकोण आदि सम्मिलित थे।
- शून्य का आविष्कार भारत में दूसरी शताब्दी (ई. पू.) में हो चुका था।
- ब्रह्मगुप्त का ब्रह्मस्फुट सिद्धान्त नामक पहला ग्रन्थ है जिसमें शून्य को एक संख्या के रूप में परिगणित किया गया है।
- आर्यभट्ट ने बीजगणित की खोज की और त्रिकोणभुज का क्षेत्रफल ज्ञात किया जिससे त्रिकोणमिति का जन्म हुआ।
- सिन्धु घाटी की खुदाई में प्राप्त कांस्य और ताँबे की कलाकृतियों और मिट्टी के चमकीले बर्तनों से उस समय के उन्नत धातु विज्ञान के बारे में पता चलता है।
- ईसा पश्चात् पहली शताब्दी तक लोहा, ताँबा, चाँदी, सोना जैसी धातुओं तथा पीतल और कांस्य जैसी मिश्रित धातुओं का व्यापक उत्पादन होने लगा था।
- कुतुबमीनार परिसर में स्थापित लौह स्तम्भ उच्चकोटि की मिश्रित धातुओं का जीवन्त उदाहरण है।

औषधि विज्ञान

- अथर्ववेद में प्रथम बार बीमारियों, चिकित्सा और औषधियों का उललेख प्राप्त होता है। रोगों का कारण शरीर में प्रविष्ट भूतप्रेतादि माना गया है। इनका निदान भी जादुई तरीकों द्वारा बताया गया है।
- चरक संहिता में औषधि के रूप में प्रयोग की जाने वाली जड़ी-बूटियों का वर्णन है। सुश्रुत की शल्यचिकित्सा को उपचार कलाओं की सर्वोत्तम विधा माना है, जो सबसे कम भ्रामक है। उन्होंने 21 शल्य उपकरणों का वर्णन किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने हड्डियों को जोड़ना, आँखों का मोतियाबिन्द आदि के ऑपरेशन के तरीके भी बताए।
- सुश्रुत ने 760 पौधों का उल्लेख किया है। पौधों की जड़ें, छाल, फूल और पत्ते सभी का उपयोग किया जाता था।

गणितशास्त्र

- प्रारम्भिक मध्य युग में गणित के क्षेत्र में दो सुप्रसिद्ध ग्रन्थ थे—श्रीधर का गणितसार और भास्कराचार्य की लीलावती।
- गणितसार में गुणा, भाग, संख्या, घन, वर्गमूल, क्षेत्रमिति आदि के विषय में बताया गया है।
- गणेश दैवज्ञ ने लीलावती पर बुद्धिविलासिनी नामक टीका लिखी जिसमें अनेक उदाहरण दिए गए हैं। 1587 ई. में लीलावती का अनुवाद फैदी ने फारसी में किया।
- शाहजहाँ के राज्य में अताउल्लाह रशीदी ने बीजगणित का अनुवाद किया।
- अकबर के दरबारी नीलकण्ठ ज्योतिर्विद ने 'ताजिक' ग्रन्थ का संकलन किया जिसमें विभिन्न फारसी तकनीकी शब्दों से परिचय कराया गया।
- शैक्षिक व्यवस्था में अन्य विषयों के साथ अकबर ने गणित शास्त्र को भी सम्मिलित करने का आदेश दिया। बहाउद्दीन अमूली, नसीरुद्दीन, तुसी, अराक और अलकाशी ने इस क्षेत्र में अमूल्य योगदान किया। नसीरुद्दीन तुसी जो मार्घ की वेधशाला के संस्थापक निदेशक थे, इस क्षेत्र में प्रमाण माने जाते थे।

जीव विज्ञान

- 13वीं शताब्दी में हंसदेव ने 'मृगपक्षिशास्त्र' नामक ग्रन्थ का निर्माण किया।
- जहाँगीर ने अपने तुजक-ए-जहाँगीरी में जनन प्रक्रिया और संकरण के अपने अवलोकन और प्रयोगों का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है। उसने पशुओं की लगभग 36 जातियों का वर्णन किया है।

रसायनशास्त्र

- कागज के आविष्कार से पूर्व प्राचीन साहित्य दक्षिण प्रदेश में प्रायः ताड़ के पत्तों पर और कश्मीर तथा देश के अन्य उत्तरी प्रदेशों में भोज-पत्रों पर अंकित किया जाता था।
- टीपू सुल्तान के समय मैसूर में कागज बनाने का कारखाना था जिसमें ऐसा कागज बनाया जाता था जिसकी सतह सुनहरी होती थी।
- कागज बनाने की तकनीक पूरे देश में ही समान थी सिर्फ विभिन्न कच्चे माल से लुगदी बनाने का तरीका अलग था।
- मुगलों के पास बारूद के निर्माण और उसके बन्दूक में प्रयोग की जानकारी थी।
- तुजुक-ए-बाबरी में तोप के गोले बनाने का भी वर्णन है।
- आइने अकबरी में अकबर के इत्र कार्यालय के नियमों का वर्णन है। गुलाब के इत्र में एक सुप्रसिद्ध सुगन्ध थी जिसके आविष्कार का श्रेय नूरजहाँ

की माँ को दिया जाता है।

- फिरोजाशाह तुगलक ने दिल्ली में वेधशाला बनवाई। हमीम हुसैन जिलानी और सैयद मोहम्मद काजिमी के निर्देश पर फिरोजशाह वहमनी ने दौलताबाद में एक वेधशाला बनवाई। सौर पंचांग और चन्द्र पंचांग दोनों ही प्रयोग किए जाते थे।
- नीलकण्ड सोमसुतवन ने आर्यभट्ट पर टीका लिखी।
- जयपुर के महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय ने दिल्ली, उज्जैन, वाराणसी, मथुरा और जयपुर में नक्षत्र विषयक वेधशालाएँ बनवाईं।
- तुहफत-उल मुमीनिन एक फारसी ग्रन्थ है जिसे मोहम्मद मुनीन ने 17वीं शताब्दी में लिखा जिसमें विभिन्न चिकित्सकों के मतों का वर्णन है।
- यूनानी औषधि व्यवस्था 11वीं शती के आस-पास मुस्लिमों के साथ हिन्दुस्तान में आई और यहाँ विकास हेतु स्वस्थ वातावरण पाया।
- हकीम दिया मोहम्मद ने एक 'ए दियाई' नामक ग्रन्थ लिखा जिसमें अरबी, फारसी और आयुर्वेदिक औषधि विज्ञान का वर्णन है। फिरोजशाह तुगलक ने एक अन्य ग्रन्थ तिब्बे फिरोजशाही लिखा। तिब्बी औरंगजेबी जो औरंगजेब को समर्पित थी, आयुर्वेदिक स्रोतों पर आधारित है।

कृषि विज्ञान

- मध्ययुग में भी खेती-बाड़ी का काम प्रायः ऐसे ही होता था जैसा प्रारम्भिक प्राचीन भारत में था तथापि विदेशियों के आगमन से कुछ आवश्यक परिवर्तन हुए जैसे नई फसलों का उगाना, पेड़ों और उद्यान विषयक पौधों की जानकारी।
- 16वीं शताब्दी के मध्य में गोआ के पादरियों के द्वारा आम की कलम बनाने की व्यवस्थापूर्ण शैली का परिचय दिया गया।
- सिंचाई के क्षेत्र में कुएँ, तालाब, ऊँट, रहट, मशक (चमड़े की बाल्टी) और ढेंकली का प्रयोग किया जाता था। ढेंकली के जुए में जुते बैलों से पानी निकाला जाता था। यह सिंचाई के प्रमुख साधन थे। पर्शियन चक्र का प्रयोग आगरे के क्षेत्र में किया जाता था।
- मध्य युग में उस राज्य द्वारा खेती की ठोस नींव रखी गई जिसमें भूमि को नापने और बाँटने की नई व्यवस्था लागू की जो शासक और कृषक दोनों के लिए ही हित में थी।

महत्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

1. हड़प्पा का स्थल किस नदी के तट पर अवस्थित है ?
(A) सरस्वती (B) सिन्धु
(C) व्यास (D) रावी

2. 'आर्यों' को एक जाति कहने वाला पहला यूरोपीयन कौन था ?
(A) सर विलियम जोन्स
(B) एचएच विल्सन
(C) मैक्समूलर
(D) जनरल कनिंघम

3. 'वेद' शब्द का अर्थ है–
(A) ज्ञान (B) बुद्धिमत्ता
(C) कुशलता (D) शक्ति

4. निम्नलिखित में से कौन–सा/से लक्षण ऋग्वेद के अनुसार धर्म के स्वरूप को वर्णित करता/करते है/हैं ?
1. ऋग्वेद के धर्म को प्रकृतिवादी बहुदेववाद कहा जा सकता है।
2. ऋग्वेद के धर्म और ईरानी अवेस्ता के विचारों में आश्चर्यजनक समानताएँ हैं।
3. वैदिक यज्ञ, पुरोहित, जिसे यजमान कहा जाता था, के घर में किये जाते थे।
4. वैदिक यज्ञ दो प्रकार के थे–वे जो गृहस्थ द्वारा किये जाते थे और वे जिनके लिए कर्मकाण्ड के विशेषज्ञों की आवश्यकता होती थी।

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए–
कूट :
(A) केवल 3 (B) 1 और 2
(C) 1, 2, 3 और 4 (D) 1,2 और 4

5. प्रसिद्ध 'गायत्री मन्त्र' कहाँ से लिया गया है?
(A) यजुर्वेद (B) अथर्ववेद
(C) ऋग्वेद (D) सामवेद

6. निम्नलिखित में से कौन–सा अन्न मनुष्य द्वारा सबसे पहले प्रयोग होने वालों में से था?
(A) जौ (यव) (B) जई (ओट)
(C) राई (D) गेहूँ

7. भारत में खोजा गया सबसे पहला पुराना शहर था–
(A) हड़प्पा (B) पंजाब
(C) मोहनजोदड़ो (D) सिन्ध

8. गुप्त युग का प्रवर्तक कौन था ?
(A) घटोत्कच (B) श्रीगुप्त
(C) चन्द्रगुप्त (D) समुद्रगुप्त

9. 'पतंजलि' कौन थे ?
(A) योगसूत्र के रचनाकार
(B) आयुर्वेद पर एक पुस्तक का लेखक
(C) 'मध्यमिका' सम्प्रदाय का एक दार्शनिक
(D) पाणिनि के संस्कृत व्याकरण का टीकाकार

10. हड़प्पा के निवासी–
(A) ग्रामीण थे
(B) शहरी थे
(C) यायावर (खानाबदोश) थे
(D) जनजातीय थे

11. भारत में वर्ण व्यवस्था किसलिए बनाई गई थी?
(A) श्रमिक गतिहीनता
(B) श्रम की गरिमा को मान्यता देने
(C) आर्थिक उत्थान
(D) व्यावसायिक श्रम विभाजन

12. निम्नलिखित में से किस विदुषी ने, वाद–विवाद में अजेय याज्ञवल्क्य को चुनौती दी थी ?
(A) घोषा (B) अपाला
(C) मैत्रेयी (D) गार्गी

13. महाभाष्य लिखा था–
(A) गार्गी ने (B) मनु ने
(C) बाण ने (D) पतंजलि ने

14. संगम युग का सम्बन्ध कहाँ के इतिहास से है?
(A) बनारस (B) इलाहाबाद
(C) तमिलनाडु (D) खजुराहो

15. निम्नलिखित में से किस मुद्रा में गौतम बुद्ध ने सारनाथ में अपना पहला उपदेश दिया था ?
(A) अभय मुद्रा
(B) ध्यान मुद्रा
(C) धर्मचक्र मुद्रा
(D) भूमिस्पर्शी मुद्रा

16. निम्नलिखित चीनी यात्रियों में से किसने हर्षवर्धन और कुमार भास्कर वर्मा के राज्यों की यात्रा की थी ?
(A) इत्सिंग (B) फाह्यान
(C) ह्वेनसांग (D) शुन शुयुन

17. बीतपाल तथा श्रीमन नामक भारत के दो महानतम कलाकार किस युग से सम्बन्धित थे?
(A) पाल युग (B) गुप्त युग
(C) मौर्य युग (D) पठान युग

18. हड़प्पावासी किस वस्तु के उत्पादन में सर्वप्रथम थे ?
(A) मुद्राएँ (B) काँसे के औजार
(C) कपास (D) जौ

19. निम्नलिखित में से कौन–सा एक युग्म समुचित रूप से सुमेलित नहीं है ?
(A) मेगस्थनीज – इण्डिका
(B) अश्वघोष – बुद्धचरित
(C) पाणिनि – महाभाष्य
(D) विशाखदत्त – मुद्राराक्षस

20. आर्य सभ्यता में मनुष्य के जीवन के आयु के आरोही क्रमानुसार निम्नलिखित चरणों में से कौन–सा सही है ?
(A) ब्रह्मचर्य–गृहस्थ–वानप्रस्थ–संन्यास
(B) गृहस्थ–ब्रह्मचर्य–वानप्रस्थ–संन्यास
(C) ब्रह्मचर्य–वानप्रस्थ–संन्यास–गृहस्थ
(D) गृहस्थ–संन्यास–वानप्रस्थ–ब्रह्मचर्य

21. यदि आपको प्राचीन भारतीय इतिहास पढ़ाना प्रारम्भ करना है तो निम्नलिखित स्रोतों में से किस स्रोत को प्रयुक्त करना गलत होगा ?
(A) लघु चित्रकारी (B) शिलालेख
(C) हस्तलिपियाँ (D) गुफा चित्रकारी

22. सबसे पुरानी पांडुलिपियाँ ..... पर लिखी गई थीं।
(A) कागज (B) लकड़ी
(C) ताड़पत्रों (D) पत्थरों

23. बी.सी.ई. का तात्पर्य है–
BCE stands for :
(A) बिफोर कॉमन एरा
(B) बिफोर सीजर एरा
(C) बिफोर कॅन्टिंपररी एरा
(D) बिफोर क्रिश्चियन एरा

24. 'कॉमन एरा' क्या है?
(A) आदेश जारी करने के लिए सरकार द्वारा स्वीकृत भारतीय 'एरा'
(B) हिंदू 'एरा' और इस्लामिक 'एरा' के सम्मिश्रण से विकसित एक नया 'एरा'
(C) ऐतिहासिक घटनाओं का अध्ययन करने का नया 'एरा'
(D) क्रिश्चियन 'एरा' जो अब दुनिया के अधिकांश हिस्सों में स्वीकृत है

25. हड़प्पा सभ्यता के लोग बनाते थे :
a. पत्थर की मुहरें।
b. पीले रंग से डिजाइन किए गए पात्र।
c. लोहे से बनी तकलियाँ।
d. सोने से बने बर्तन।
(A) केवल a, b तथा c
(B) केवल b, c तथा d
(C) केवल a तथा c
(D) केवल a तथा d

26. हड़प्पा सभ्यता का पतन कैसे हुआ ?
(a) ऐसा लगता है कि शासकों का नियंत्रण समाप्त हो गया
(b) जंगलों का विनाश हो गया होगा
(c) सभ्यता के पूरे क्षेत्र में बाढ़ आ गई
(d) संभवतः नदियाँ सूख गई थीं
सही व्याख्या का चयन करें :
(A) a, b, d (B) a, c, d
(C) b, c, d (D) a, b, c

27. ऋग्वेद काल में कौन–से तीन देवता खासकर प्रमुख थे?
(A) इन्द्र, वरुण तथा रुद्र
(B) अग्नि, इन्द्र तथा विष्णु
(C) रुद्र, विष्णु तथा इन्द्र
(D) अग्नि, इन्द्र तथा सोम

28. 'ऋग्वेद' की मूल रचना ..... भाषा में हुई थी।
(A) प्राकृत (B) संस्कृत
(C) ब्राह्मी (D) शौरसेनी

29. निम्नलिखित का मिलान कीजिए :

(a)	नर्मदा घाटी	(i)	आरंभिक गणतंत्र
(b)	वज्जी	(ii)	आखेट और संग्रहण
(c)	गारो पहाड़ियाँ	(iii)	लगभग 2500 वर्ष पूर्व के शहर
(d)	गंगा घाटी	(iv)	प्रथम नगर
(e)	सिंधु और उसकी सहायक नदियाँ	(v)	आरंभिक कृषि

	(a)	(b)	(c)	(d)	(e)
(A)	(v)	(i)	(ii)	(iv)	(iii)
(B)	(ii)	(i)	(v)	(iii)	(iv)
(C)	(v)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(D)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)	(v)

30. महायान बौद्ध धर्म के अंतर्गत–
(A) बुद्ध की प्रतिमाएँ बनाई जाने लगीं
(B) बोधिसत्वों को नहीं स्वीकारा गया क्योंकि उन्हें अभी भी ज्ञान प्राप्ति करना बाकी था
(C) मूर्तिकला के केन्द्रों के रूप में मथुरा एवं तक्षशिला का पतन हुआ
(D) मूर्तियों में बुद्ध की उपस्थिति सिर्फ कुछ संकेतों के माध्यम से दर्शाई जाती थी

31. बुद्ध द्वारा लालसाओं व इच्छाओं की तृष्णा को निम्नलिखित में से क्या बताया गया?
(A) तन्हा (B) तीव्र इच्छा
(C) पिपासा (D) तृष्णा

32. समुद्रगुप्त की निम्नलिखित में से कौन–सी ऐसी नीति थी, जो विशिष्ट रूप से दक्षिणापथ शासकों के लिए थी ?
(A) उन्होंने समुद्रगुप्त की अधीनता स्वीकार की और अपनी पुत्रियों का विवाह उससे किया।
(B) वे उपहार लाते थे, उसके आदेशों का पालन करते थे और उसके दरबार में उपस्थित होते थे।
(C) इन्होंने हार स्वीकार की व इन्हें पुनःशासन करने के लिए अनुमति दी गयी।
(D) उनके साम्राज्यों को उखाड़ फेंका गया और उन्हें समुद्रगुप्त के साम्राज्य का अंग बनाया गया।

33. चोल काल में व्यापारियों के संघ को ———— कहा जाता था।
(A) नगरम (B) सभा
(C) ग्रामम (D) श्रेणी

34. निम्नलिखित में से कौन–सा राज्यों का संयोजन त्रिविभाजन संघर्ष में शामिल था?
(A) राष्ट्रकूट, पाल, गुर्जर–प्रतिहार
(B) पाल, चोल, गुर्जर–प्रतिहार
(C) चोल, राष्ट्रकूट, पाल
(D) पाल, पल्लव, राष्ट्रकूट

35. गुप्त राजवंश किस लिए प्रसिद्ध था ?
(A) कला एवं स्थापत्य
(B) साम्राज्यवाद
(C) राजस्व एवं भूमि कर
(D) साहित्यिक कार्यों का संरक्षण

उत्तरमाला

1. (D)	**2.** (C)	**3.** (A)	**4.** (D)	**5.** (C)
6. (A)	**7.** (A)	**8.** (B)	**9.** (A)	**10.** (B)
11. (D)	**12.** (D)	**13.** (D)	**14.** (C)	**15.** (C)
16. (C)	**17.** (A)	**18.** (C)	**19.** (C)	**20.** (A)
21. (A)	**22.** (C)	**23.** (A)	**24.** (D)	**25.** (D)
26. (D)	**27.** (D)	**28.** (B)	**29.** (B)	**30.** (A)
31. (D)	**32.** (C)	**33.** (A)	**34.** (A)	**35.** (A)

❐❐